इंटरनेट पर देखें
www.dainikdawa.com

संस्कारधानी से प्रकाशित मध्यभारत व छत्तीसगढ़ अंचल का सर्वप्रसारित लोकप्रिय हिंदी समाचार पत्र

भारत सरकार व छत्तीसगढ़ शासन से विज्ञापन के लिए अधिकृत

दैनिक प्रातः संस्करण

"यो आत्मानं वेत्ति, सर्वं स वेत्ति"।।

दावा

सम्पादक - दीपक कुमार बुद्धदेव

आर.एन.आई.नं. 58841/93
डाक पंजीयन छ.ग./दुर्ग/14/2024-26

वर्ष- 44 अंक -08 राजनांदगांव, रविवार 24 नवंबर 2024 पृष्ठ - 8 मूल्य - 4.00 रुपए

महाराष्ट्र में महायुति प्रचंड बहुमत के साथ वापस, झारखंड में झामुमो की सत्ता बरकरार

नयी दिल्ली। महाराष्ट्र और झारखंड में सत्तारूढ़ गठबंधनों ने विधानसभा चुनाव में भारी बहुमत के साथ फिर से सत्ता में आने का मार्ग प्रशस्त कर लिया है।

महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ महायुति ने अभूतपूर्व जीत दर्ज कर सत्ता बरकरार रखने जा रही है, वहीं झारखंड में झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) और कांग्रेस के नेतृत्व में इंडिया समूह शानदार प्रदर्शन करते हुए दो-तिहाई बहुमत हासिल कर लिया है।

महाराष्ट्र में कांग्रेस, राकांपा (शरद पवार) और शिव सेना (यूबीटी) गठबंधन ने लोकसभा की सफलता के बाद राज्य में सत्ता वापसी को सपना संजोया था वह बिखर गया और उनका गठबंधन 288 सीटों वाली राज्य विधानसभा में 50 सीटों से नीचे पर सिमट कर रह गया है। राज्य में एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाले शिवसेना के धड़े और अजीत पवार के नेतृत्व वाले राकांपा ने अपने-अपने प्रतिद्वंदी धड़ों को पछाड़ दिया है।

राज्य में आये नतीजों से लगता है कि महाराष्ट्र के मतदाताओं ने कांग्रेस और सहयोगी पार्टियों के जनजातीय गणना और संविधान के लिए खतरे जैसे मुद्दों की बजाय सत्तारूढ महायुति के विकास के नारे और वर्तमान सरकार की लाडली बहिन, युवाओं को अप्रेंटिसशिप तथा

प्रधानमंत्री आवास योजना जैसी कल्याणकारी योजनाओं का समर्थन किया।

महाराष्ट्र और झारखंड के विधानसभा के साथ-साथ 15 राज्यों में 48 विधानसभा सीटों और दो लोकसभा सीटों पर भी चुनाव कराये गये थे। विधानसभा के उपचुनावों में सबसे चर्चित उत्तर प्रदेश के मुकाबलों में भाजपा और राष्ट्रीय लोक दल (रालोद) नौ में से सात सीटों पर जीत के साथ राजग का परचम ऊपर रखा जबकि पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, राजस्थान और असम में सत्तारूढ़ दलों ने अपनी मजबूत जमाए रखी है।

केरल की वायनाड लोकसभा सीट के उपचुनाव में कांग्रेस पार्टी की महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा चार लाख से अधिक मतों से विजयी घोषित हुयी हैं जबकि महाराष्ट्र की नांदेड लोकसभा सीट पर भाजपा के उम्मीदवार डॉ. संतुकराव मारोतराव हम्बारडे, कांग्रेस पार्टी के रवीन्द्र बसन्तराव चव्हाण से आगे चल रहे थे।

महाराष्ट्र में भाजपा, शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (रांकापा) के सत्तारूढ़ गठबंधन इस साल लोक सभा चुनाव में महाराष्ट्र में मिले आघात से उबर कर अप्रत्याशित रूप से प्रचंड जीत हासिल की है। राज्य की 288 सीटों वाली विधानसभा के चुनाव की शनिवार को चल रही मतगणना के रुझानों के अनुसार, भाजपा-शिवसेना-रांकापा के महायुति गठबंधन को 234 सीटों पर विजय हुआ है।

राज्य में कांग्रेस के नेतृत्व वाले विपक्षी महाविकास अघाड़ी (एमवीए) गठबंधन को 49 सीटों पर विजयी हासिल हुई है। भाजपा को 132 सीटों पर जीत मिली है, जबकि शिव सेना 57, रांकापा को 41 सीटें मिली हैं। महायुति में शामिल जन सुराज्य शक्ति (जेएसएस) दो सीटों पर विजयी हुयी है। गठबंधन के घटक राष्ट्रीय युवा स्वाभिमान पार्टी (आरवाईएसपी) और राष्ट्रीय समाज राजर्षि शाहू विकास अघाडी एक-एक सीट पर जीत हासिल की है।

विपक्षी गठबंधन महाराष्ट्र विकास अघाड़ी (एमवीए) के घटक कांग्रेस पार्टी को 16, रांकपा (शरद पवार) को 10 और उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना को 20 सीटों पर जीत मिली है।

समाजवादी पार्टी को दो सीटें, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी, पीजेंट्स एंड वर्कर्स पार्टी ऑफ इंडिया और राष्ट्रीय समाज पक्ष को एक-एक सीट मिली है। ऑल इंडिया मजलिस ए इत्तिहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) को एक सीट मिली है जबकि दो सीटों पर निर्दलीय उम्मीदवार को विजय हुये हैं।

भाजपा ने 149 सीटों पर चुनाव लड़ा था और इसकी जीत का औसत 88.59 प्रतिशत रहा है। शिवसेना और राकांपा ने भी क्रमशः 81 और 59 उम्मीदवार उतारे थे और दोनों ने करीब 70 प्रतिशत को स्ट्राइक रेट हासिल किया। शिवसेना (यूबीटी), कांग्रेस पाटी और राकांपा (शरद पवार) का स्ट्राइक रेट क्रमशः 21, 15 और 11.6 प्रतिशत रहा।

शिवसेना के नेता और मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने महायुति की सफलता को प्रचंड जीत बताते हुये कहा कि यह सफलता 'न भूतो, न भविष्यति' है। *(शेष पृष्ठ 6 पर...)*

पहले ही चुनाव में छा गई प्रियंका गांधी, इस मामले में भाई राहुल को छोड़ा पीछे

तिरुवनंतपुरम। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वायनाड लोकसभा सीट पर उपचुनाव में बड़ी जीत की ओर बढ़ रही हैं। प्रियंका फिलहाल चार लाख 25 हजार से भी अधिक वोटों से आगे हैं और इस सीट पर अपने भाई राहुल गांधी से भी बड़ी जीत की ओर आगे बढ़ रही हैं।

गौरतलब है कि हालिया लोकसभा चुनाव में राहुल ने 3.65 लाख वोटों से वायनाड में जीत दर्ज की थी। उन्होंने रायबरेली में भी जीत हासिल की थी, जिसके बाद उन्होंने वायनाड सीट छोड़ने का फैसला किया था। इसके बाद कांग्रेस ने उपचुनाव में प्रियंका गांधी को यहां से उतारने का फैसला किया था, जो कि उनकी चुनावी राजनीति की शुरूआत भी है।

सवा चार लाख वोटों से जीती

4 लाख से अधिक वोटों से आगे

अपने पहले ही चुनाव में प्रियंका बड़ी जीत की ओर अग्रसर हैं। आईएएनएस ने चुनाव आयोग के अधिकारियों के हवाले से बताया कि वह अब 4,25,782 वोटों से आगे चल रही हैं। उनके निकटतम प्रतिद्वंद्वी, सीपीआई के सत्यन मोकेरी 1,45,235 वोट पाकर पीछे चल रहे हैं। केंद्रों पर मतगणना जारी थी और अंतिम गिनती का इंतजार था। भाजपा उम्मीदवार, युवा सॉफ्टवेयर इंजीनियर नव्या हरिदास भी कड़ी टक्कर दे रही थीं और दूसरे स्थान पर रहने वाले सीपीआई के दिग्गज सत्यन मोकेरी के बीच बढ़त भी बढ़ रही थी।

मुमताज पटेल ने किया जीत का स्वागत

प्रियंका गांधी की जीत पर कांग्रेस नेता मुमताज पटेल का कहना है कि अच्छी खबर यह है कि अब हम प्रियंका गांधी को संसद में देखेंगे। उन्होंने एएनआई से बात करते हुए कहा कि पार्टी गुजरात और कर्नाटक की तीनों सीटों पर उपचुनाव में आगे चल रही है। हमारा गठबंधन झारखंड में भी आगे चल रहा है। महाराष्ट्र से आने वाले नतीजों को देखना दुखद है। इस अवसर पर, मैं अपने पिता अहमद पटेल को याद करती हूं, क्योंकि महा विकास अघाड़ी उन्हीं के दिमाग की उपज थी।

प्रचंड जीत पर पीएम मोदी बोले- महाराष्ट्र में विकासवाद, सुशासन, सच्चे सामाजिक न्याय की जीत हुई... झूठ, छल, फरेब बुरी तरह हारा

नई दिल्ली। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में भाजपा के नेतृत्व वाला महायुति गठबंधन को जबरदस्त जीत मिली है। इस प्रचंड जीत के बाद पीएम मोदी भाजपा मुख्यालय में पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहे हैं।

महाराष्ट्र में भाजपा के नेतृत्व वाला महायुति गठबंधन को जबरदस्त जीत मिली है। इस प्रचंड जीत के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भाजपा मुख्यालय में पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहे हैं। पीएम मोदी ने जय भवानी, जय शिवाजी के नारे के साथ अपना संबोधन शुरू किया। उन्होंने कहा- महाराष्ट्र में विकासवाद और सुशासन की जीत हुई।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि ये सच्चे सामाजिक न्याय की जीत है। महाराष्ट्र में झूठ, छल, फरेब की पूरी तरह से हार हुई है। आज निगेटिव पॉलिटिक्स, परिवारवाद की हार हुई है। मैं एकनाथ शिंदे, देवेंद्र फडणवीस, अजीत पवार की प्रशंसा करता हूं। आज देश के अनेक राज्यों में उपचुनाव के भी नतीजे आए हैं। यूपी, उत्तराखंड और राजस्थान में भी हमें जमकर

समर्थन मिला है। लोकसभा में भी हमारी एक सीट और बढ़ गई है। मैं सभी माताओं-बहनों, किसानों, युवाओं और देश की जनता का नमन करता हूं। मैं झारखंड की जनता को भी नमन करता हूं। झारखंड के विकास के लिए और काम करेंगे। मोदी बोले कि बीते 50 साल में किसी भी पार्टी, किसी भी प्री पोल अलायंस के लिए यह सबसे बड़ी जीत है।

महाराष्ट्र में लगातार तीसरी बार जीत मिली है। यह पहली बार है जब भाजपा के नेतृत्व में किसी गठबंधन को लगातार महाराष्ट्र ने विजयी बनाया है। महाराष्ट्र में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है और यह ऐतिहासिक जीत है।

इंडी वाले (विपक्ष) आज भी भारत के सामान्य वोटर के विवेक को कम आंकते हैं। देश का वोटर नेशन फर्स्ट के साथ है, वो अस्थिरता नहीं चाहता। उन्हें देश का नेचर पसंद नहीं आ रहा। हम हमेशा विकास और विरासत दोनों को एक साथ लेकर चलते हैं। इसलिए हमें वोट मिला है। महाराष्ट्र की धरती ने कई विभूतियां को जन्म दिया जो भाजपा के लिए आराध्य हैं।

देश में जो लोग दो संविधान की बात करेंगे। देश उनको पूरी तरह से नकार देगा। कांग्रेस और उसके साथियों ने जम्मू-कश्मीर में फिर से धारा 370 की दीवार बनाने का प्रयास किया। उन्होंने संविधान का भी अपमान किया है। मैं कांग्रेस वालों और उनके साथियों को कहना चाहता हूं कि कान खोलकर सुन लो दुनिया की कोई ताकत 370 को जम्मू-कश्मीर में वापस नहीं ला सकती है।

कांग्रेस का अहंकार सातवें आसमान पर है। फिर भी उसकी विभाजनकारी राजनीति फेल हो रही है। अब वह परजीवी पार्टी बन चुकी है। जो अपने साथियों की *(शेष पृष्ठ 6 पर...)*

मुश्किल से 208 मतों से जीत पाए नाना पटोले

नागपुर। महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस समिति के मुखिया नाना पटोल भंडारा जिले की सकोली सीट से चुनाव मैदान में उतरे थे। नाना पटोले कांग्रेस के टिकट पर दूसरी बार जीतने में सफल रहे लेकिन वह सिर्फ 208 वोटों से ही जीत पाए। नाना पटोले इस सीट पर पहली बार 2009 में बीजेपी के टिकट पर चुने गए थे। लोकसभा चुनावों में कांग्रेस के 13 लोकसभा सीटों पर जीतने के बाद नाना पटोले का कद बढ़ गया था। केंद्रीय

आलाकमान ने नाना पटोले को महाराष्ट्र के मोर्चे पर फ्री हैंड भी दिया था, लेकिन नाना पटोले सिर्फ 208 वोटों से जीत पाए। देर शाम को सकोली के चुनाव परिणाम का ऐलान किया। नाना पटोले को बीजेपी के नए चेहरे अविनाश आनंदराव ब्रह्मांकर ने कड़ी टक्कर दी। नाना पटोले को 96795 वोट मिले तो वहीं अविनाश को 96587 हासिल हुए। निर्दलीय उतरे डॉ. सोमदत्त करांजेकर को 18309 वोट मिले।

बंगाल उपचुनाव में नहीं दिखा आरजी कर कांड का असर, टीएमसी की सभी सीटों पर जीत; ममता बोलीं- जमींदार नहीं लोगों के पहरेदार

कोलकाता। बंगाल विधानसभा उपचुनाव में सत्ताधारी पार्टी तृणमूल कांग्रेस ने सभी छह सीटें जीत ली हैं। 2021 के विस चुनाव में तृणमूल ने इनमें से पांच (सिताई, नैहाटी, हारोआ, मेदिनीपुर व तालडांगरा) पर जीत दर्ज की थी, जबकि मदारीहाट भाजपा की झोली में गई थी।

इस बार तृणमूल ने उस सीट पर भी पहली बार कब्जा जमाया है। मालूम हो कि कोलकाता के आरजी कर अस्पताल में महिला डॉक्टर से दरिंदगी की घटना के बाद राज्य में यह पहला चुनाव था, जिसे सत्ताधारी पार्टी के लिए बेहद चुनौतीपूर्ण बताया जा रहा था। हालांकि नतीजों पर आरजी कर कांड का कोई असर नहीं दिखा।

ममता ने मां-माटी-मानुष का जताया आभार

बंगाल की मुख्यमंत्री व तृणमूल सुप्रीमो ममता बनर्जी ने जीत के लिए मां-माटी-मानुष को धन्यवाद दिया। साथ ही भाजपा पर परोक्ष तौर पर निशाना साधते हुए कहा, 'हम जमींदार नहीं बल्कि लोगों के

पहरेदार हैं।' दूसरी तरफ बंगाल भाजपा के सह-प्रभारी अमित मालवीय ने कहा कि ममता के लिए यह खून से सनी जीत है। उन्होंने कहा कि हालिया संपन्न चुनावों में बंगाल एकमात्र राज्य है, जहां राजनीतिक हिंसा व मौतें हुई हैं। चुनाव आयोग जब तक अतिरिक्त प्रयास करके स्वतंत्र व निष्पक्ष मतदान सुनिश्चित नहीं करेगा, स्थानीय प्रशासन पर लगाम नहीं कसेगा, तब तक बंगाल में ठीक से चुनाव नहीं हो सकेंगे।

वाममोर्चा और कांग्रेस की जमानत तक नहीं बची

बंगाल की छह विधानसभा सीटों के उपचुनाव में माकपा के नेतृत्व वाले वाममोर्चा और कांग्रेस के प्रत्याशियों की जमानत तक नहीं बची। इस बार उनके बीच कोई घोषित या अघोषित गठबंधन नहीं था। दोनों ने अपने प्रत्याशी उतारे थे, लेकिन अकेले लड़ने पर भी स्थिति नहीं बदली। दूसरा व तीसरा स्थान तो दूर, वाममोर्चा व कांग्रेस प्रत्याशियों का कुछ सीटों पर नोटा से मुकाबला दिखा। कुछ सीटों पर एक समय ऐसा लगा कि वाममोर्चा-कांग्रेस को *(शेष पृष्ठ 6 पर...)*

रायपुर दक्षिण उपचुनाव में सुनील सोनी की बड़ी जीत, 46 हजार से अधिक वोटों से आकाश को पछाड़ा

रायपुर। राजधानी रायपुर में रायपुर दक्षिण उपचुनाव में बीजेपी के सुनील सोनी ने जीत दर्ज की है। कांग्रेस के आकाश शर्मा को सुनील सोनी ने 46,167 वोटों से हराया है। 19 राउंड की काउंटिंग के बाद बीजेपी को 89,220 वोट मिले, तो वहीं कांग्रेस को 43,053 वोट मिले हैं। जीत के बाद बीजेपी कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर दौड़ गई। भाजपा नेताओं ने प्रदेश बीजेपी कार्यालय में बीजेपी की जीत का जश्न मनाया है।

वहीं कांग्रेसी खेमें में नतीजों से पहले ही सन्नाटा पसर गया था। शुरुआती रुझान के बाद प्रदेश कांग्रेस कार्यालय और जिला कांग्रेस कार्यालय में पूरी तरह से शांति छा गई है। जहां से कांग्रेस को उम्मीद थी वहां से भी आकाश शर्मा पिछड़ गए है। इस उपचुनाव के लिए कांग्रेस ने अपनी जबरदस्त ताकत झोंकी थी। कांग्रेस ने कहा कि यह परिणाम हमारे अनुरुप नहीं आए हैं लेकिन हम जनता के फैसले को स्वीकार

करते हैं। बड़ी बात ये है कि महापौर एजाज ढेबर और प्रमोद दुबे के वार्ड में भी भाजपा को लीड मिली। बीजेपी में जहां जश्न का माहौल है वहीं कांग्रेस भवन में सन्नाटा पसरा है। दक्षिण उपचुनाव की जीत पर सुनील सोनी ने कहा कि जनता ने भाजपा पर भरोसा किया है, विकास के नाम पर भरोसा किया है। पार्टी को जनता का आशीर्वाद मिला है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस झूठ बोलकर और भ्रम फैलाकर राजनीति करती है, इसका जवाब जनता ने दिया है।

हर राउंड में पीछे रहे कांग्रेस उम्मीदवार

रायपुर दक्षिण विधानसभा सीट बीजेपी का गढ़ है। इस सीट पर बीजेपी ने पूर्व सांसद सुनील सोनी को टिकट दिया था वहीं, कांग्रेस ने युवा चेहरे आकाश शर्मा पर दांव लगाया था। वोटों की गिनती 19 राउंड में पूरी हुई। कांग्रेस उम्मीदवार किसी भी राउंड में बीजेपी उम्मीदवार से आगे नहीं रहे।

यूपी विधानसभा उपचुनाव में भाजपा का जलवा, सपा ने भी जीतीं दो सीटें

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा की नौ सीटों पर हुए उपचुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने सात पर विजय हासिल की है जबकि समाजवादी पार्टी (सपा) को दो सीटों पर संतोष करना पड़ा है।

प्रदेश में नौ सीटों पर हुए उपचुनाव में सात पर राजग ने जीत दर्ज की। इसमें से छह पर भारतीय जनता पार्टी और एक सीट पर राजग गठबंधन (रालोद) ने जीत हासिल की। वहीं भारतीय जनता पार्टी ने समाजवादी पार्टी के हिस्से की कुंदरकी व कटेहरी सीट भी जीत ली।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भाजपा व रालोद प्रत्याशी के पक्ष में पांच दिन में 15 चुनावी कार्यक्रम किए। सीएम योगी ने फूलपुर, मझवा, खैर व कटेहरी में दो-दो रैली की। गाजियाबाद में भी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक रैली व एक रोड शो कर कमल को फिर से खिलाने की अपील की, जिस पर जनता ने मुहर लगाया। वहीं कुंदरकी व मीरापुर में भी योगी की रैली हुई। इसका असर यह हुआ कि कुंदरकी में भाजपा ने ऐतिहासिक जीत हासिल की।

कटेहरी में लगभग तीन दशक से अधिक समय से इस सीट पर भाजपा को जीत नहीं मिल पा रही थी, लेकिन इस

बार उपचुनाव में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में कटेहरी में भी कमल ने कमाल कर दिखाया। भाजपा के प्रत्याशी धर्मराज निषाद ने तीन दशक बाद यहां कमल खिलाया। धर्मराज निषाद ने न सिर्फ सपा से यह सीट छीनी, बल्कि सपा प्रत्याशी शोभावती वर्मा को 34514 के बड़े अंतर से हराया।

वर्ष 2022 विधानसभा चुनाव में कुंदरकी में समाजवादी पार्टी ने जीत हासिल की थी। इस सीट पर भी विधायक के सांसद चुने जाने के कारण यहां उपचुनाव हुआ। इस सीट पर भी काफी समय से सपा का कब्जा था, लेकिन 2024 में हुए उपचुनाव में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में यह सीट भाजपा के खाते में गई। योगी के आह्वान पर जनता ने यहां से सपा को चारों खाने चित कर दिया। यहां के भाजपा उम्मीदवार रामवीर सिंह ठाकुर ने सपा के मो. रिजवान को काफी बड़े अंतर से पराजित किया। मझवा, फूलपुर, गाजियाबाद, खैर के साथ ही मीरापुर में भी राजग ने परचम लहराया। मझवा में विनोद बिंद, फूलपुर से प्रवीण पटेल, गाजियाबाद से अतुल गर्ग, खैर से अनूप प्रधान वाल्मीकि व मीरापुर से चंदन चौहान के सांसद चुने जाने के उपरांत यहां उपचुनाव कराए गए। इन सीटों को बरकरार रखते हुए भाजपा ने अन्य सीटों पर जीत हासिल की।

मैनपुरी के करहल में भी सपा की जीत का अंतर काफी कम हुआ। वर्ष 2022 आमचुनाव में सपा प्रत्याशी अखिलेश यादव ने यहां 67504 वोटों से जीत हासिल की थी, जो 2024 उपचुनाव में घटकर महज 14725 वोट पहुंच गई। तेज प्रताप यादव को यहां से 104304 वोट मिले। भाजपा के अनुजेश यादव ने 89579 वोट प्राप्त किया। वहीं सीसामऊ में 2022 में सपा के इरफान सोलंकी ने 12266 वोटों से जीत हासिल की। उपचुनाव में सपा प्रत्याशी नसीम सोलंकी ने 69714 वोट पाकर 8564 वोट से जीत दर्ज की। यहां से भाजपा के सुरेश अवस्थी को 61150 वोट मिले।

कृषि उपज मंडी बना अघोषित ट्रांसपोर्ट नगर, एक्सीडेंट का खतरा

किसान, व्यापारियों सहित मंडी के लोगों को आवागमन में रही परेशानी

राजनांदगांव (दावा)। शहर के डोंगरगांव रोड बसंतपुर क्षेत्र में मवेशी पालन के लिए गोकुल नगर बसाया गया है, पर तमाम मवेशी शहर की सड़कों पर आवारा घूमते दिखाई देते हैं। रेवाडीह-पेंड्री इलाके में ट्रांसपोर्ट नगर बना हुआ है। लेकिन ज्यादातर खाली या कंडम वाहने शहर के विभिन्न स्थानों में आवागमन का रास्ता रोके खड़ी दिखाई देती है। इससे हमेशा दुर्घटना का खतरा बना रहता है। तेज रफ्तार वाहनें सड़क किनारे बेवजह खड़ी इन गाड़ियों से टकराकर दुर्घटना ग्रस्त भी होती है लेकिन यातायात विभाग का ध्यान इस ओर तनिक भी नहीं जाता। इससे शहर में जहां-तहां ट्रकें खड़ी कर रास्ता रोकने वाले वाहन मालिकों के हौसले बुलंद हैं।

मंडी बना ट्रांसपोर्ट नगर

शहर के बसंतपुर स्थित कृषि उपज मंडी इन दिनों अघोषित रूप से ट्रांसपोर्ट नगर बना हुआ है। ट्रक मालिकों के कंडम वाहने या खाली वाहनें यहां महिनों खड़ी रहती है। लेकिन मजाल है कि इन वाहनों को कोई हटा पाए। अघोषित रूप में ट्रांसपोर्ट नगर बने मंडी स्थल में आने वाले किसानों व्यापारियों से लेकर कर्मचारियों रेजा, हमाल, तौलैए आदि को आवागमन संबंधी परेशानी होती है। दुर्घटना का खतर बना रहता है इसके बाद भी महिनो तक कंडम व खाली गाडियां बेवजह खड़ी रहती है।

मंडी कर्मचारियों ने बताया कि यहां की सड़कें इन ट्रकों की आवाजाही से जर्जर हो चुकी है जिंससे धूल का गुबार उड़ते रहता है। ट्रकों के बेवजह खड़ी रहने से छुट-पुट दुर्घटनाएं भी होते रहती है। इसके बाद भी मंडी स्थल में महिनों से अड्डा जमाए इन वाहनों न तो हटाया जाता है और न अन्यत्र ले जाए जाने की कोशिश की जाती। मंडी सूत्रों ने बताया कि गंज मंडी क्षेत्र को अघोषित रूप से ट्रांसपोर्ट नगर बनाए जाने की शिकायत थाने में भी की गई है। इसके बाद भी कोई कार्रवाई नहीं की जाती।

> मंडी में दुर्गोत्सव के समय इस संबंध में शिकायत की गई थी। उस समय कुछ गाड़ियों की हटवाया गया था। वहां बेवजह रास्ता रोके खड़ी गाड़ियों को यातायात विभाग को कहकर हटवाया जाएगा।
>
> **सत्यनारायण देवांगन**
> **थाना प्रभारी- बसंतपुर (राज,)**

थाने में लिखित शिकायत

बताया गया कि मंडी स्थल पर बेवजह रास्ता रोके खड़ी रहने वाली ट्रकों व कंडम वाहनों को हटाए जाने के लिए थाने में लिखित शिकायत की गई है लेकिन न तो पुलिस वालों द्वारा और न यातायात विभाग वालों द्वारा अब तक इस ओर ध्यान नहीं दिया गया। इससे इन ट्रक वालों के हौसले बुलंद हैं और मंडी स्थल के प्रवेश द्वार से लेकर आफिस, कार्यालय स्थल? तक गाड़िया लाकर खड़ी कर आवागमन के मार्ग अवरूद्ध कर दिए जाते है। मना करने पर ड्राइवर, कंडक्टर दादागिरी करने से बाज नहीं आते। ट्रकों के प्रवेश द्वार से लेकर कार्यालय आदि तक रास्ता रोके खड़ी रहने से माल व टाकिज आने वालों को परेशानी होती है। ग्राहक भी प्रभावित होता है लेकिन ट्रक वालों की हठधर्मिता के चलते कोई ? कुछ कह नहीं पाता।

मंडी सचिव पंचराम वर्मा ने बताया कि नगर निगम व यातायात विभाग को शिकायत कर यहां बेवजह खड़ी गाड़ियां हटवाई जाएगी ताकि लोगों का आवागमन का रास्ता आसान हो सके। उन्होंने बताया कि यहां बेवजह खड़ी गाड़ियों के मालिकों को ताकीद की जा चुकी है। नहीं मानने पर सख्ती की जाएगी।

कांग्रेस ने कहा- जनादेश शिरोधार्य, हमने भी जीते थे पांच उपचुनाव; जनहित के लिये जारी रहेगी लड़ाई

रायपुर। रायपुर दक्षिण विधानसभा उपचुनाव में मिली करारी शिकस्त पर कांग्रेस की प्रतिक्रिया सामने आई है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि रायपुर दक्षिण विधानसभा उपचुनाव की जनादेश शिरोधार्य है।

उपचुनाव के परिणाम पार्टी के अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं रहे। पूरी पार्टी, नेताओं और कार्यकताओं ने एकजुटता से चुनाव को लड़ा। उपचुनाव का रिजल्ट आमतौर पर सत्तादल के पक्ष में आता है। जब कांग्रेस की सरकार थी तो कांग्रेस ने भी पांच उपचुनाव जीते थे। जो जनादेश आया है उसे कांग्रेस स्वीकार करती है। जनता के हित और सरोकार के लिये हमारी लड़ाई जारी रहेगी।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि एक उपचुनाव के परिणाम से जनता के सभी सवालों का जवाब नहीं मिल जाता और न ही राज्य के हालात में परिवर्तन हो जाता है। प्रदेश की बिगड़ती कानून व्यवस्था, राज्य में भ्रष्ट तंत्र का बोल बाला, भाजपा की वादा खिलाफी, 1 लाख नौकरियों का वादा, 500 में गैस सिलेण्डर, 1.25 करोड़ माताओं बहनों के महतारी वंदन की राशि, अनियमित कर्मचारियों को 100 दिन में नियमित करने का वादा, धान खरीदी की परेशानी ऐसे विषय है जिसमें साय सरकार विफल साबित हुई है। कांग्रेस, सरकार को वादे याद दिलाती रहेगी। मजबूत विपक्ष के रूप में अपना संघर्ष जारी रखेगी। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र का चुनाव परिणाम अप्रत्याशित है। वायनाड से अभूतपूर्व विजय हासिल करने के लिये कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी को बधाई।

पहला कॉलम...

मितानीन दिवस मनाया गया

राजनांदगांव (दावा)। आज 23नवंबर 2024 को इंदिरा सरोवर के पास स्थित वार्ड क्रमांक 28 तिलक वार्ड सामुदायिक भवन में मितानीन दिवस के उपलक्ष्य में श्रीमती सरोज गिरिपुंजे एवं श्रीमती सुमित्रा श्रीवास, मितानिन का सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें प्रमुख रूप से मुख्य अतिथि के रूप में नेता प्रतिपक्ष किशुन यदु, वार्ड पार्षद राजेश जैन रानू की अध्यक्षता में एवं जिला महामंत्री पिछड़ा मोर्चा श्री राजेश बिसने, नादान सेन, बूथ अध्यक्ष एवं राहुल सोनपिपरे, व्यंकटेश जी ज्योति सहारे, गीता विश्वकर्मा, माया समरीत, शीला हेड़ाऊ, रेणु ठावरे, कनक परमार, दक्षा परमार, रंजना सिमनकर, गंगा बाई ठिठोरे, बिम्लेश्वरी धर्मी, मोहनी गर्ग, गीता लीलहारे, संतोषी यादव, दुलारी यादव, सुमन देवांगन एवं समस्त वार्डवासी उपस्थित रहे। मंच का संचालन राजेश बिसने ने किया एवं राहुल सोनपिपरे द्वारा आभार प्रदर्शन कर कार्यक्रम का समापन किया गया। उक्त जानकारी राजेश जैन (रानू) पार्षद ने दी।

एनएन कम्प्यूटर में ऑफर : कम्प्यूटर मात्र 10900 रु. में

राजनांदगांव (दावा)। मानव मंदिर चौक स्थित लैपटॉप कम्प्यूटर शो रुम एनएन कम्प्यूटर शॉप में लैपटॉप, कम्प्यूटर की खरीदी पर आज से ऑफर दिया जा रहा है। कम्प्यूटर की प्रारंभिक कीमत मात्र 10900 रु. है

लैपटॉप की सभी विश्वस्तरीय कंपनी एचपी, डेल, लेनोवो, असुस हाजिर स्टॉक में उपलब्ध है, साथ ही एचपी, कैनन, ब्रदर्स, इपसन कंपनी के कलर और लेसर प्रिंटर उचित कीमत में उपलब्ध है।

ऑफर की जानकारी हेतु मानव् मनदिर चौक, अन्नपूर्णा रेस्टारेंट के सामने स्थित एन.एन. लैपटॉप कम्प्यूटर शो रूम में संपर्क न 9200053819 पर संपर्क करें।

रुचि की अभिव्यक्ति आमंत्रित

राजनांदगांव (दावा)। पुराना जिला पंचायत भवन (रेल्वे स्टेशन रोड) में निर्मित व्यावसायिक परिसर में उपलब्ध 2 रिक्त दुकानों का आबंटन जिले अंतर्गत छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन बिहान के तहत गठित स्वसहायता समूहों को आजीविका गतिविधि हेतु रूचि की अभिव्यक्ति आर्मत्रित की गई है।

म्यूनिसिपल स्कूल का जर्जर खेल मैदान नजर आता है, अवैध पार्किंग नजर नहीं आती

राजनांदगाँव (दावा)। शहर का म्यूनिसिपल स्कूल के खेल मैदान की जर्जर हालत पर सबका ध्यान दिलाया जा रहा है, लेकिन इस मैदान में बनी अवैध पार्किंग किसी को नजर नहीं आती है। 32 लाख रूपये से खेल मैदान को घासयुक्त बनाया गया था। शहर के उदीयमान खिलाड़ियों के खेल अभ्यास के लिये, लेकिन वर्षों से इसी मैदान में विभिन्न आयोजन भी होते रहे हैं। साथ ही फटाका बाजार भी लगता रहा है, चाहे सर्कस हो, कोई धार्मिक आयोजन, प्रदर्शनी आदि, चूँकि शहर के बीचों-बीच बड़े आयोजन के लिये पर्याप्त जगह म्यूनिसिपल स्कूल मैदान की है। इसलिए आयोजन सहित बड़े कार्यक्रम होते रहे है। एक विज्ञप्ति के माध्यम से समाजवादी पार्टी के प्रदेश सचिव मोतीलाल यादव ने कहा है कि, हद तो जब हो जाती है कि इस मैदान में अवैध सार्वजनिक पार्किंग का निर्माण करा दिया जाता है। जिस पर किसी भी खिलाड़ी या आमजन की नजर नहीं पड़ती है, उस अवैध पार्किंग का निर्माण किन लोगों द्वारा किनके लिये किया गया, समझ से परे है। जबकि स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों तथा अध्यापकों, कर्मचारियों के लिये पार्किंग उपलब्ध ही नही है। उक्त अवैध पार्किंग में निजी संस्थानों के कर्मचारियों की गाड़ियों ऐसे संस्थान जिन्होंने अपनी पार्किंग की जगह पर निर्माण कर लिया है। उनके वाहन, फायनेंस करने वालों के वाहन, साथ ही बिगड़े वाहनों का अड्डा बना हुआ, अवैध पार्किंग इनते विशाल मैदान में जहाँ कभी महंत सर्वेश्वर दास हॉकी प्रतियोगिता होती रही है, दर्शकों का विशाल समूह उमड़ता था, उसी मैदान को अवैध पार्किंग बनाकर छोटा कर दिया गया है, जिसे हटाना अतिआवश्यक हो गया है। शहर के युवा खिलाड़ियों, खेल प्रेमी जनता, समस्त विद्यार्थियों सहित गणमान्य नागरिकों के साथ-साथ जिला प्रशासन, शिक्षा विभाग से अनुरोध है कि उक्त अवैध पार्किंग को शीघ्र हटाकर बाउण्ड्री वाल का निर्माण करें, जिससे मैदान में अवैध वाहन के प्रवेश पर रोक लग सकें।

महिला के साथ छेड़खानी व अश्लील गाली गलौज करने वाला गिरफ्तार

राजनांदगांव (दावा)। बसंतपुर पुलिस ने अपने थाना क्षेत्र में एक महिला के साथ की गई मारपीट व गाली गलौज के आरोपी को धर दबोचा है। आरोपी का नाम डुरेन्द्र दास वैष्णव पिता महेन्द्र दास वैष्णव उम्र 32 वर्ष निवासी वार्ड नं. 50 सिंगदई बताया जाता है।

बसंतपुर थाना प्रभारी सत्यनारायण देवांगन ने बताया कि घटना के संबंध में प्रार्थियां ने 22 नवंबर को थाने आकर लिखित आवेदन पेश कर रिपोर्ट दर्ज कराया कि वह गत 11 नवंबर सोमवार को हास्पीटल जा रही थी तब रानी सागर वाले रास्ते में चौपाटी के पास डुरेन्द्र दास वैष्णव ने उससे छेडखानी किया।

इस दौरान वह गाड़ी चला रही थी तो उसने उसका हाथ पकड के खींचा। उसके बाद साड़ी को पकड़कर खींचा। इतने पर भी वह जब नही रूकी तो मां बहन की अश्लील अश्लील गाली गलौज किया। उसके बाद भी नही रूकने पर उसका पीछा करते करते पेट्रोल पंप तक आ गया। तब दूसरो से मदद ली तो तुम लोगो को देख लूंगा करके वहा से चला गया।

प्रार्थियां के उक्त रिपोर्ट पर अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना कार्यवाही मे लिया गया मामले की गंभीरता को देखते हुए आरोपी को जल्द से जल्द गिरफ्तार करने हेतु पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग के निर्देशन एंव अति. पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा, नगर पुलिस अधीक्षक पुष्पेन्द्र नायक के मार्गदर्शन मे थाना बसंतपुर द्वारा एक टीम गठित कर शनिवार 23 नवंबर को आरोपी डुरेन्द्र दास वैष्णव को हिरासत मे लेकर पुछताछ किया गया। इस पर आरोपी द्वारा अपराध घटित करना कबुलने पर उसे को गिरफ्तार कर न्यायालय में न्यायिक रिमांड पर भेजा गया। उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी श्री देवांगन सहित महिला प्रधान आरक्षक मेनका साहू, बी-9 पेट्रोलिंग आरक्षक की भूमिका सराहनीय रही।

वृद्धा के साथ बलात्कार, आरोपी को सश्रम कारावास की सजा

राजनांदगांव (दावा)। डोंगरगांव थाना क्षेत्र की 64 वर्षीय वृद्धा के साथ बलात्कार करने वाले आरोपी को न्यायालय द्वारा 10-10 वर्ष की सश्रम कारावास की सजा सुनाई गई है। आज से दो वर्ष पूर्व डोंगरगांव क्षेत्र में घटी उक्त बलात्कार की घटना के संबंध में विशेष न्यायाधीश (एट्रोसिटी एक्ट) पीठासीन न्यायाधीश, थामस एक्का÷ के द्वारा दुष्कर्म और अप्राकृतिक कृत्य के मामले में फैसला सुनाते हुये आरोप साबित पाये जाने पर अभियुक्त टेमन साहू पिता दलीराम साहू, उम्र 27 साल को उक्त सजा दी गई। जिसमें भारतीय दंड संहिता की धारा 450, 376, 377 के अपराध में 10-10 वर्ष का सश्रम कारावास और 5000-5000 रूपये अर्थदंड तथा धारा 325 भा.द.सं. के अपराध में 5 वर्ष का सश्रम कारावास और 3000 रूपये के अर्थदंड से दंडित किये जाने का दण्डादेश पारित किया गया। दोनों अर्थदंड अदा न करने की स्थिति में अभियुक्त को क्रमशः दो-दो माह और एक माह का अतिरिक्त सश्रम कारवास की सजा भुगतनी होगी। मामले में छत्तीसगढ़ शासन की ओर से पैरवी करने वाले विशेष लोक अभियोजक (एट्रोसिटी) विकास शुक्ला है।

श्री शुक्ला ने बताया कि, दिनाँक 22.05.2022 को थाना डोंगरगांव क्षेत्र की रहने वाली 68 वर्षीय वृद्धा रात्रि को खाना खाकर अपने घर का दरवाजा बंद करके अकेली सोयी हुई थी। रात्रि के करीब 12 बजे अभियुक्त टेमन के द्वारा दाई-दाई कहकर वृद्धा के घर के दरवाजा को खटखटाने लगा तब वृद्धा बिस्तर में बैठ गयी, तदुपरान्त अभियुक्त टेमन दरवाजे के सांकल को तोड़कर घर के अंदर घुस गया और और वृद्धा को खटिया में ढकेलकर गिरा दिया और वृद्धा के आँख और चेहरे को कपड़े से ढक दिया और उसके साथ जबरदस्ती बलात्कार किया और अपने लिंग को उसके मुँह में डाल दिया, जिस पर वृद्धा ने अपने दांतों से आरोपी टेमन साहू के लिंग को काट दी थी जिस पर अभियुक्त टेमन साहू ने वृद्धा के स्तनों को भी दांत से काट दिया था तथा उसके हाथ को मरोड़कर तोड़ दिया था। घटना को अंजाम देने के बाद अभियुक्त वृद्धा के घर से निकल गया और दरवाजा को बाहर से बंद कर दिया। दूसरे दिन वृद्धा की आवाज़ सुनकर पड़ोसी के द्वारा दरवाजा को खोला गया तब वृद्धा ने घटना के संबंध में उसको बतायी। सूचना पर थाना डोंगरगांव द्वारा मामला पंजीबद्ध कर जाँच में लिया गया था। जांच के दौरान अभियुक्त टेमन साहू को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया तथा संपूर्ण जांच उपरान्त अभियोग पत्र विचारण हेतु विशेष न्यायाधीश के समक्ष प्रस्तुत किया गया था।

धान की कीमत 3100 मिलने से किसान खुशहाल-कृष्णा साहू

राजनांदगांव (दावा)। प्रदेश के सभी धान खरीदी केंद्र में किसानों की धान 14 नवम्बर से खरीदी किये जा रहे हैं जिस पर प्रतिक्रिया देते हुए कृष्णा साहू वरिष्ठ भाजपा नेता एवं अंचल के लोकप्रिय जनहितैषी संवेदनशील नेता ने देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की प्रशंसा करते हुए कहा कि जब से भाजपा सरकार आयी है, तब से लेकर अभी तक छत्तीसगढ़ के इतिहास में पहली बार केंद्रीय नेतृत्व प्रधानमंत्री मोदी ने आदिवासी मुख्यमंत्री बनाकर छत्तीसगढ़ को बड़ी सौगात दिये हैं। इसके अलावा धान खरीदी केन्द्रों में सुचारु रूप एवं पारदर्शिता हो उसके लिए सरकार ने इलेक्ट्रॉनिक कांटा लगाकर तथा किसान तुंहर हाथ एप्लिकेशन एप से किसान घर बैठे टोकन काट सकता है। समर्थन मूल्य पर धान खरीदी एवं 21 क्विंटल प्रति एकड़ से तथा 3100 रु. क्विंटल से किसान खुशहाल हुआ है।

संतोष रजक के विशेष लोक अभियोजक नियुक्त होने पर धोबी समाज ने दी बधाई

राजनांदगांव (दावा)। छत्तीसगढ़ झेरिया धोबी समाज जिला राजनांदगांव के पूर्व जिला सचिव संतोष रजक (अधिवक्ता) नंदई कुंआ चौक निवासी को विशेष लोक अभियोजक नियुक्त होने पर समाज की ओर से बधाई दी है। विदित हो कि संतोष रजक का चयन होने से समाज में खुशी की लहर चल रही है। नियुक्ति होने के पश्चात धोबी समाज के पूर्व जिला संरक्षक कोमल रजक, धोबी समाज के पूर्व जिला अध्यक्ष हीरालाल निर्मलकर, पूर्व जिला अध्यक्ष लेखराम बघेल, पूर्व शहर जिला अध्यक्ष युवा पवन निर्मलकर, धोबी समाज पूर्व जिला मीडिया प्रभारी हेमंत निर्मलकर, सामाजिक कार्यकर्तागण संतोष रजक एसटीएफ, संतोष निर्मलकर ढाबा, देवानंद निर्मलकर आदि ने बधाई दी है।

श्री कृष्णा (एयरकुल) में
आज से, रोजाना 4 खेलों में
बाल्कनी की एडवांस बुकिंग प्रारंभ है।
समय : 12,3, 6 व 9 बजे रात्रि
तीजा के लुगरा-2
कलाकार -करण खॉन-प्रकाश अवस्थी, सीमा सिंग, शिव कुमार आदि
ऑनलाईन बुकिंग paytm & bookmyshow.com

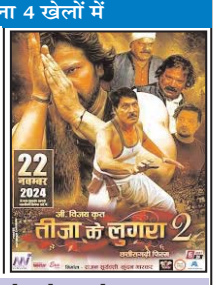

SILVER SCREEN MULTIPLEX
22nd Nov to 28th Nov 2024
Beta (C.G) - 12:15 pm
Pushpa 1 - 12:00 & 06:00 pm
Kanguva - 03:00 & 09:15 pm
The Sabarmati Report - 06:30 & 09:00 pm
Naam - 03:15 & 06:15 pm
Karan Arjun - 12:30 pm
Sumeet Mandi Mall, Rajnandgaon (C.G) 8085600200

गायत्री विद्यापीठ के तृतीय राज्य स्तरीय सुन्दरकाण्ड गायन एवं व्याख्यान प्रतियोगिता का भव्य आयोजन

राजनांदगांव (दावा)। नित नई ऊँचाईयों की बूलंदियों की ओर अग्रसर जिले की प्रतिष्ठित शाला गायत्री विद्यापीठ के विशाल ऑडिटोरियम सभागार में तृतीय राज्य स्तरीय सुंदरकाण्ड गायन एवं व्याख्यान प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया। उक्त आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में श्री देवेन्द्र गोस्वामी जी एवं निर्णायक के रूप में डॉ. कविता लिकेश्वर वर्मा, श्री जगदेव नेताम इंदिरा कला संगीत विवि, खैरागढ़ (छ.ग.) से एवं श्री स्वपन भट्टाचार्य, गायक एवं संगीतकार, कृष्णा पब्लिक स्कूल, भिलाई (छ.ग.) आमंत्रित थे।

साथ ही साथ गायत्री शिक्षण समिति के अध्यक्ष बृजकिशोर सुरजन, उपाध्यक्ष श्रीमती श्रीमती संध्यादेवी सिंघल, राजेश जैन, सचिव गगन लड्ढा, सहसचिव निकुंज सिंघल, कोषाध्यक्ष श्री सूर्यकान्त चितलांग्या, संरक्षक नंदकिशोर सुरजन, श्रीमती सुषमा सुरजन, सांस्कृतिक प्रभारी हरीश गांधी, श्रीमती रूपाली गांधी, एकेडमिक डायरेक्टर अमित उत्तलवार के साथ प्राचार्य श्रीमती शैलजा नायर, श्रीमती पिंकी खण्डेलवाल, सुश्री सीमा श्रीवास्तव, उपप्राचार्य श्रीमती रश्मि ठाकुर, श्रीमती वंदना डुंभरे, श्रीमती तामेश्वरी साहू, प्रशासक अनिल वाजपेयी, स्कूल मैनेजर तरणजीत सिंह टूटेजा, शहर के गणमान्य नागरिक, बड़ी संख्या में पालकगण एवं समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्र'ज्वलन, पूजा अराधना के साथ हनुमान चालीसा पाठ एवं श्रीराम स्तुति से किया गया। स्वागत भाषण अध्यक्ष श्री बृजकिशोर सुरजन जी द्वारा किया गया जिसमें उन्होंने इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य बताते हुए कहा कि विद्यार्थियों में चरित्र बल व नैतिक बल विकसित हो, विद्यार्थी श्रीराम की तरह मर्यादित जीवन जीए, श्रीराम के आदर्श को आत्मसात कर जीवन की सार्थकता को सिद्ध करें। मुख्य अतिथि द्वारा सभी को आयोजन की शुभकामनाएं देते हुए कहा गया कि रामायण और गीता जैसा पवित्र ग्रंथ जो प्रत्येक घरों में पूजा जाता है। मैं आज के युवाओं से किशोरों से निवेदन करूंगा कि कम से कम 15 मिनट निकालकर वे इसका नियमित पाठ भी करें। रामायण को जीवन में उतारें। इससे आपका जीवन राममय हो जाएगा, इससे समाज की बुराईयां दूर होंगी।

सचिव गगन लड्ढा जी द्वारा भी सभा को संबोधित करते हुए कहा गया कि आज का यह ऐतिहासिक दिन हमें बरबस ही त्रेतायुग की यद दिलाता है। श्रीराम का हर किरदार, भाई, पति, पुत्र के रूप में हमारे जीवन के लिए एक सुन्दर आदर्श प्रस्तुत करता है, जो हम सभी के लिए एक सीख है, ऐसे पवित्र ग्रंथ को आत्मसात करने से हमारे व्यक्तित्व में निखार आता है।

शाला की प्राचार्य श्रीमती शैलजा नायर द्वारा भी उक्त आयोजन के संदर्भ में कहा गया कि आज का यह आयोजन हम सभी के लिए प्रेरणादायक है, जहां हम अपनी धर्म, संस्कृति से जुड़कर बच्चों में श्रीराम जैसा आदर्श स्थापित करने में कामयाब हो सकते है।

उक्त आयोजन में विभिन्न जिलों से लगभग 15 स्कूलों से विद्यार्थी प्रतिभागी के रूप में उपस्थित थे। सम्पूर्ण आयोजन बेहद प्रभावी रहा। ऑडिटोरियम सभागार को सुन्दर कलाकृति से सजाया गया जहां सम्पूर्ण वातावरण राममय नजर आ रहा था। जय श्रीराम के उद्घोष से वातावरण में गजब उत्साह का माहौल था। निरंतर तालियों की गड़गड़ाहट प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करती रही। आयोजन में स्पांसर के रूप में बैंक ऑफ बड़ौदा, रत्न सागर, बंधन बैंक, सुमीत बाजार, एसआईबी लाईफ, कम्प्यूटर साल्युशन, नवनीत, संजय बुक सेलर्स, गुड लक पब्लिकेशंस लिमिटेड, ग्रीन अर्थ, डॉ.शोभा श्रीवास्तव एवं नोहरदास साहू सहयोगी थे।

संयोजक के रूप में सहयोग था शिक्षक मनीष सुराना, सुश्री पलक लोहिया, श्रीमती वाणी मुदिराज, कार्यक्रम का संचालन श्रीमती अंजलि सोनवानी एवं श्रीमती सीमा गायधने द्वारा किया गया। वीडियोग्राफी आशीष सोनवानी, याददास साहू एवं शिक्षक विमल शर्मा द्वारा किया गया। इसमें नृत्य निर्देशक के रूप में योगदान था शिक्षिका श्रीमती भारती यादव, संगीत शिक्षक दिनेश साहू, प्रशांत कुशवाहा का सहयोग रहा। तकनीकी सहायक राहुल जैन थे।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर कृष्णा पब्लिक स्कूल भिलाई रही जिन्हें 7001 रूपए नगद राशि, द्वितीय स्थान पर युगांतर पब्लिक स्कूल राजनांदगांव 5001 रूपए नगद, तृतीय स्थान पर अजीज पब्लिक स्कूल राजनांदगांव रही जिन्हें 3001 रूपए नगद राशि के साथ स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। इसक साथ ही स्पर्धा में प्रत्येक प्रतिभागी टीम को 1100 रुपए की राशि भेंट की गई।

नाम परिवर्तन

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि पूर्व में मेरा नाम भूषण पिता श्री बीरसिंग (नाबा.) एवं भाई का नाम नेतराम पिता श्री बीरसिंग था। और हमारा आधार कार्ड में एवं अन्य दस्तावेजों में मेरा नाम पतराम पिता श्री बीरसिंग एवं भाई का नाम अंकालू राम पिता श्री बीरसिंग है। यह दोनों भाईयों का एक ही नाम है। आज से मेरा सही नाम पतराम पिता श्री बीरसिंग है एवं भाई का नाम अंकालू राम पिता श्री बीरसिंग है।

अतः आज से मुझे व मेरे समस्त दस्तावेजों में मेरा सही नाम पतराम पिता श्री बीरसिंग एवं मेरे भाई का नाम अंकालू राम पिता श्री बीरसिंग के नाम से ही जाना व पहचाना जावे।

पतराम
पिता- श्री बीरसिंग
भाई - अंकालू राम
पिता- श्री बीरसिंग
ग्राम-रूदगांव, तह. डोंगरगांव
जिला-राजनांदगांव (छ.ग.)

शुभांक

बी. के.
268-6 689-3

चेतावनी:- इस पत्र में प्रकाशित सर्वज्ञ शुभ राशियां ज्योतिष एवं ग्रह नक्षत्र के आधार पर धारणा मात्र है। इसका सट्टे आदि से कोई संबंध नहीं है, दुरुपयोग न करें। दुरुपयोग करने पर प्रकाशक की कोई जवाबदारी नहीं होगी। - सम्पादक

आंगनबाड़ी केंद्रों में नई व्यवस्था लागू, अब चेहरा पढ़कर राज्य सरकार महतारियों को देगी पोषण आहार

रायपुर (दावा)। छत्तीसगढ़ सरकार ने महतारियों और बच्चों को आंगनबाड़ी केंद्रों से मिलने वाले पोषण आहार को पारदर्शी बनाने का निर्णय लिया है। इसके लिए दो तरह की व्यवस्था लागू करने की तैयारी है। टेक होम राशन (टीएचआर) के लिए फेस वेरिफिकेशन और ओटीपी व्यवस्था एक जनवरी से लागू हो जाएगी। जो महिलाएं केंद्रों तक पोषण आहार लेने आएंगी, उनका फेस रीडर बायोमेट्रिक सिस्टम से सत्यापन किया जाएगा। यानी महिलाओं को चेहरा पढ़ने के बाद ही उन्हें आहार दिया जाएगा। ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वास्तविक लाभार्थी के पास ही खाद्य चीजों की डिलीवरी हुई है। दूसरा गर्भवती महिलाएं अगर केंद्र तक नहीं आ पाएंगी तो उनकी जगह उनका पोषण आहार लेने आने वाले अन्य स्वजन के माध्यम से मोबाइल नंबर पर ओटीपी भेजकर भी सत्यापन किया जा सकेगा।

पोषण ट्रैक एप में ही जुड़ेगी सुविधा

आंगनबाड़ी केंद्रों में पोषण ट्रैक एप के माध्यम से गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य को लेकर भी ट्रैकिंग व्यवस्था चल रही है। उसमें ये दो व्यवस्थाएं और लागू हो जाएंगी। इस प्रक्रिया में लाभार्थियों का पंजीकरण करते समय उनके फोटो खींचने, आधार डेटाबेस से उनके प्रमाणीकरण या ई-केवाईसी और राशन वितरण के दौरान खींचे गए फोटो से मिलान करने का काम शामिल है। इसके अलावा लाभार्थियों को उनके पंजीकृत मोबाइल नंबर पर एक विशिष्ट ओटीपी प्राप्त होगा, जिसे कार्यकर्ता को दिखाना होगा, ताकि राशन डिलीवरी प्रक्रिया पूरी हो सके। प्रदेश में 52 हजार 400 आंगनबाड़ी केंद्र हैं। यहां एक लाख से अधिक आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और सहायिकाएं काम कर रहीं है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को राज्य सरकार ने स्मार्ट फोन भी दे रखा है। फेस वैरिफिकेशन के लिए आंगनबाड़ी केंद्रों में व्यवस्था की जाएगी। इसके लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

क्या है टेक होम राशन?

पोषण आहार को टेक होम राशन (टीएचआर) कहा जाता है। आंगनबाडी केंद्रों में गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं और छह माह से तीन वर्ष तक के बच्चों के लिए सूखा राशन वितरित किया जाता है। यह सूखा राशन चयनित किशोरियों को भी उपलब्ध होता है। इसे टेक होम राशन कहते हैं।

इसलिए व्यवस्था होगी लागू

कई बार शिकायतें मिलती हैं कि पोषण आहार लाभार्थियों तक नहीं पहुंचता है और इसमें हेराफेरी की जाती है। पोषण आहार देने का मकसद कुपोषण की समस्या को दूर करना है। ऐसे में पारदर्शी व्यवस्था से कुछ हद तक सुधार होगा। साल 2019 में छत्तीसगढ़ में बच्चों में कुपोषण 23.37 प्रतिशत था, जो 2021 में घटकर 19.86 प्रतिशत रह गया और 2022 में घटकर 17.76 प्रतिशत पर आ गया।

वर्तमान में करीब 16 प्रतिशत है। इस तरह, पिछले तीन सालों में कुपोषण की दर में 5.61 प्रतिशत की कमी आई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के मुताबिक, किसी भी प्रदेश में एक साल के भीतर अगर कुपोषण की दर में दो प्रतिशत या इससे ज़्यादा गिरावट आती है, तो यह संतोषजनक स्थिति मानी जाती है।

पोषण ट्रैकर एप में अब दो व्यवस्थाओं से प्रमाणीकरण प्रणाली आंगनबाड़ी सेवाओं के लाभार्थियों को सशक्त बनाएगी और समुदाय, विशेष रूप से महिलाओं के बीच स्वामित्व की भावना को बढ़ावा देगी। यह राशन की गड़बड़ियों जोखिमों को भी कम करेगी।

शम्मी आबिदी, सचिव,
महिला एवं बाल विकास विभाग

कस्टम मिलिंग में लापरवाही बरतने दो राइस मिलर्स की 4.65 करोड़ रुपये की बैंक गारंटी राजसात

रायपुर। छत्तीसगढ में कलेक्टर ने कस्टम मिलिंग में लापरवाही बरतने के मामले में दो राइस मिलर्स के ऊपर कार्रवाई की है। कलेक्टर दीपक सोनी ने कस्टम मिलिंग में लापरवाही बरतने वाले जिले के दो राइस मिलर्स की कुल 4 करोड़ 65 लाख 5 हजार रुपये की बैंक गारंटी को राजसात करने के आदेश दिए हैं।

आशीष अग्रवाल संचालक फर्म मेसर्स यश मॉर्डन फुड तिल्दा रोड सिमगा का एक करोड़ 77 लाख 15 हजार रुपये और तुषार कुमार नायक संचालक फर्म-मेसर्स आदित्य राईस इंडस्ट्रीज ग्राम कुशभाठा तहसील सोनाखान का दो करोड़ 87 लाख 90 हजार रुपये शमिल हैं।

खाद्य विभाग से प्राप्त जानकारी अनुसार, संचालक आशीष अग्रवाल द्वारा कस्टम मिलिंग चावल जमा करने में रूचि नहीं ली जा रही है। फर्म के पास जांच के दौरान भौतिक सत्यापन में 7086 क्विंटल धान की कमी पाई गई है। परिणाम स्वरूप उनके द्वारा जमा किए गए बैंक गारंटी एक करोड़ पचास लाख रुपये और पोस्ट डेटेड चेक एक करोड़ एक रुपये इस प्रकार कुल दो करोड़ पचास लाख एक रुपये की राशि में से धान के एवज में यश मॉर्डन फुड प्रोडक्ट तिल्दा रोड सिमगा, संचालक आशीष अग्रवाल से वसूली की कार्यवाही किए जाने के लिए आदेश पारित किया गया है।

इसी तरह मिल संचालक मेसर्स आदित्य राईस इंडस्ट्रीज ग्राम कुशभाठा, विकासखण्ड कसडोल के संचालक तुषार कुमार नायक द्वारा कस्टम मिलिंग चावल जमा करने में विफल रहने के कारण जमा बैंक गारंटी चार करोड़ पचासी लाख रुपये की राशि में से धान के एवज में राशि दो करोड़ लाख हजार रुपये की वसूली की कार्यवाही किए जाने के लिए आदेश पारित किया गया है।

राज्य स्तरीय जूनियर हैंडबॉल प्रतियोगिता 19 वर्ष बालिका में राजनांदगांव जिला एवं क्लब टीम का दबदबा

राजनांदगांव (दावा)। अजीज पब्लिक स्कूल, इंदामरा में आयोजित इस प्रतियोगिता में राजनांदगांव जिले की दोनों टीमों ने अपने प्रतिभा का प्रदर्शन किया और प्रतियोगिता में आयी बिलासपुर, रायपुर, धमतरी सहित सारी टीमों से एक-एक कर सारे मैचों में जीत दर्ज की।

प्रतियोगिता में फाइनल मुकाबला और फाइनल मैच दोनों लोकल टीम के बीच हुआ, यह मुकाबला काफी रोमांचक रहा, जिसमें राजनांदगांव हैंडबॉल संघ की टीम ने अपना परचम लहराया। वहीं राजनांदगांव क्लब की टीम ने अपना कड़ा मुकाबला दर्ज किया।

पदक प्राप्त दोनों टीमों का सम्मान करने के लिए आज राजनांदगांव जिला हैंडबॉल संघ के अध्यक्ष सूर्यकांत जैन, सचिव प्रिंस भाटिया, रेलवे की सीनियर खिलाड़ी श्रीमती शबनम अंसारी, कोच रजा कुरैशी, राजा राम, ओमन तंबोली, महेश अग्रवाल उपस्थित हुए और खिलाड़ियों को आशीर्वाद देते हुए शानदार प्रदर्शन के लिए बधाई दी और उज्जवल भविष्य की कामना की।

भाजपा ने पूंजीपतियों को संरक्षण देकर देश को लूटने की खुली छूट दी - कांग्रेस

नीरज कन्नौजे ने आरोप लगाते हुए गौतम अडानी, मुकेश अंबानी और नीरव मोदी का दिया उदाहरण

राजनांदगांव (दावा)। शहर कांग्रेस दक्षिण मंडल के महामंत्री व कांग्रेस के युवा नेता नीरज कन्नौजे ने अमेरिका द्वारा भारत के बड़े उद्योगपति गौतम अडानी पर अमेरिका द्वारा सौर ऊर्जा ठेके के लिए 2200 करोड़ के रिश्वत देने की पेशकश मामले में गिरफ्तारी वारंट जारी करवाया है। जिससे भारत की साख को बट्टा लगा है उन्होंने कहा कि शेयर मार्केट जितना नुकसान अडानी समूह को नहीं हुआ है। उससे कई गुना ज्यादा नुकसान देश की साख पर बट्टा लगने से हुआ है। अमेरिका द्वारा एक बड़े भारतीय उद्योगपति को पर इस तरह आरोप लगाना और उनके खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी करवाना हर भारतीय के लिए दुखद है। लेकिन गौतम अडानी समूह ने न सिर्फ अमेरिका को रिश्वत का ऑफर देने जैसा अपराधिकृत किया है। बल्कि इस समूह ने देश के संसाधनों को भी बे हिसाब लूटा है और तो और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी भाजपा द्वारा अडानी समूह को संरक्षण देना यह दर्शाता है। कि कहीं ना कहीं इस घटना में अडानी समूह के साथ भाजपा भी बराबर की भागीदार है। श्री कन्नौजे ने इस मामले में भाजपा आला कमान और केंद्र की भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार से देश की जनता को स्पष्टीकरण देने की मांग की है।

श्री कन्नौजे ने याद दिलाते हुए आगे कहा कि यह पहली घटना नहीं है। जब देश के बड़े पूंजीपति जैसे नीरव मोदी और मुकेश अंबानी समूह ने देश को लूटने का काम किया है। सहारा समूह के नीरव मोदी ने भारी भरकम कर्ज लेकर बैंकों को चूना लगाया। और मुकेश अंबानी अंबानी समूह ने अपने बेटे की शादी में बे हिसाब कई करोड़ फूंकने के बाद उसकी वसूली मोबाइल उपभोक्ताओं से रिचार्ज दर बढ़कर कर रही है जो की निंदनीय है। उन्होंने आगे कहा कि कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता राहुल गांधी अपने भाषणों में मीडिया बयानों में ठीक ही कहते हैं। कि भाजपा पूंजीपतियों की ही पार्टी है अडानी जैसे बड़े उद्योगपतियों को मोदी सरकार का पूरा-पूरा संरक्षण है। देश की जनता समझ रही है। कि अमेरिका द्वारा अडानी के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी करवाने से मोदी सरकार जरूर बुरी आहत हुई है । क्योंकि उनका चोली दामन का साथ है। केंद्र सरकार के साथ देश की साख जुड़ी हुई है। इसलिए जनता को दुखी होना पड़ा है।

अधिवक्ता संघ की अनूठी पहल : सुनने व बोलने में कठिनाई का सामना कर रहे बच्चों के लिए निःशुल्क स्पीच थेरेपी जागरुकता एवं मार्गदर्शन शिविर

राजनांदगांव (दावा)। समाजसेवा और जनकल्याण के क्षेत्र में अधिवक्ता संघ, राजनांदगांव द्वारा एक अनुकरणीय पहल की गई है। यदि आपके परिवार में या आसपास कोई बच्चा तुतलाता, हकलाता है, सुनने या बोलने में कठिनाई का सामना कर रहा है, तो यह पहल उनके लिए अत्यंत लाभकारी साबित हो सकती है। अधिवक्ता संघ के तत्वावधान में निःशुल्क स्पीच थेरेपी जागरूकता एवं मार्गदर्शन शिविर आयोजित किया जाएगा। इस शिविर में स्पीच थेरेपी विशेषज्ञ रजनी राठी जी द्वारा बच्चों को सही बोलने और सुनने के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा। शिविर में भाग लेने के लिए रजिस्ट्रेशन आवश्यक है, जिसके लिए अधिवक्ता संघ, राजनांदगांव से संपर्क किया जा सकता है। अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष श्री मनोज चौधरी ने इस पहल पर प्रकाश डालते हुए कहा, 'हमारे समाज में ऐसे बच्चों को अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है, जो सुनने और बोलने में कठिनाई का सामना कर रहे होते हैं।

यह पहल हमारी सामूहिक जिम्मेदारी का हिस्सा है कि ऐसे बच्चों को बेहतर भविष्य देने में सहयोग करें। शिविर का उद्देश्य बच्चों की समस्या को समझते हुए उन्हें सही समाधान प्रदान करना है।'' यह प्रयास न केवल समाज में जागरूकता फैलाएगा बल्कि उन बच्चों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का मार्ग भी प्रशस्त करेगा, जो अपनी समस्याओं के कारण आत्मविश्वास खो देते हैं। अधिवक्ता संघ, राजनांदगांव के इस अनूठे प्रयास के लिए पूरे जिले में सराहना की जा रही है। रजिस्ट्रेशन के लिए 8770218536 इस नम्बर पर संपर्क किया जा सकता हैं।

अंतर्राष्ट्रीय सहकारी गठबंधन (आईसीए) की महासभा में भाग लेने हेतु दिल्ली रवाना हुए द्विवेदी

राजनांदगांव (दावा)। भारतीय जनता पार्टी सहकारिता प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक शशिकांत द्विवेदी अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन (आईसीए) के महासम्मेलन में भाग लेने के लिए दिल्ली रवाना हुए। श्री द्विवेदी ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन (आईसीए) एक गैर सरकारी सहकारी संगठन है। जिसकी स्थापना 1895 में दुनिया भर में सहकारी समितियों को एकजुट करने, उनका प्रतिनिधित्व करने और उनकी सेवा करने के लिए की गई थी।

श्री द्विवेदी ने बताया कि वैश्विक सहकारी सम्मेलन के लिए प्रमुख निकाय अंतर्राष्ट्रीय सहकारी गठबंधन (आईसीए) के 130 साल के लंबे इतिहास में पहली बार इफको की पहल पर आईसीए महासभा और वैश्विक सहकारी सम्मेलन की मेजबानी भारत की तरफ से की जाएगी। इफ़को ने हमेशा भारतीय किसानों के हित को अपने दिल में रखा है। अंतर्राष्ट्रीय सहकारी गठबंधन (आईसीए) दुनिया भर में सहकारी समितियों की आवाज है ।यह एक गैरद्दु लाभकारी अंतरराष्ट्रीय संघ है। जिसकी स्थापना सहकारी सामाजिक उद्यम मॉडल को आगे बढ़ाने के लिए की गई थी। उक्त सम्मेलन में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय सहकारीता वर्ष 2025 का शुभारंभ करेंगे ।इसकी घोषणा विश्व की सबसे बड़ी सहकारी संस्था इफको, भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालय और अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंधन की तरफ से संयुक्त रूप से की गई है। संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 का शुभारंभ करेंगे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी एवं उक्त महासभा की मेजबानी विश्व की सबसे बड़ी सरकारी संस्था इफ़को करेगी।उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करने केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री माननीय अमित शाह जी 25 नवंबर 2024 को कार्यक्रम में शामिल होंगे। इस कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष 2025 पर एक स्मारक डाक टिकट भी जारी किया जाएगा।

प्रदेश संयोजक शशिकांत द्विवेदी ने बताया कि इस वैश्विक सहकारी सम्मेलन में भूटान के प्रधानमंत्री एवम् फिजी के उप प्रधानमंत्री भी सम्मानित अतिथि के रूप में शामिल होंगे तथा दुनिया भर के 107 देशों के प्रतिनिधि भी शामिल होंगे। ऐसे कार्यक्रम में शामिल होने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हो रहा है। भारत मंडपम नई दिल्ली में आयोजित होने वाले उक्त महासम्मेलन का विषय ‘सहकारिता से सभी की समृध्दि का निर्माण और उप विषय होंगे - सक्षम नीति और उद्यमशीलता पारिस्थितिक तंत्र। सहकारिता से सभी की समृद्धि का निर्माण भारत सरकार के नारे - सहकार से समृद्धि के अनुरूप है। इसका सही अर्थ सहकारिता के माध्यम से ही सभी की समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होगा।

कोतवाली पुलिस ने दो असमाजिक तत्वों को भेजा जेल

राजनांदगांव (दावा)। कोतवाली पुलिस ने अपने थाना क्षेत्र के दो असामाजिक तत्वों के खिलाफ कार्रवाई कर उन्हें जेल की सीखचों के पीछे भेज दिया है।

कोतवाली थाना प्रभारी संजय बरेठ ने पकड़े गए आरोपियों का नाम आमीर खान उर्फ स्टीफ पिता मोहम्मद शमीम खान उम्र 23 वर्ष निवासी डबरीपारा कुंआ चौक थाना बसंतपुर व वासुदेव बैरागी पिता स्व. तारेश्वर दास वैष्णव उम्र 22 वर्ष निवासी राजीव नगर लखोली बताया।

बता दें कि पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग के निर्देश एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा तथा नगर पुलिस अधीक्षक पुष्पेन्द्र नायक के मार्गदर्शन एवं थाना प्रभारी निरीक्षक संजय बरेठ के नेतृत्व में थाना कोतवाली क्षेत्र में आदतन अपराधी एवं आसमाजिक तत्वों के खिलाफ अभियान चलाया जा रहा है। इस क्रम में शनिवार 23 नवंबर को,आमीर खान उर्फ स्टीफ व वासुदेव बैरागी के द्वारा सार्वजनिक स्थान पर हो हल्ला कर हुड़दग करते हुए पाया गया। इस पर उनके विरुद्ध मौके पर धारा 170 भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता के तहत गिरफ्तार कर 126, 135(3) भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता के तहत कार्यवाही कर उन्हें कार्यपालिक दण्डाधिकारी के समक्ष पेश किया गया। जहां से आरोपियों का जेल वारंट प्राप्त होने पर जिला जेल दाखिल किया गया। बताया गया कि आगे भी आदतन अपराधी एवं असमाजिक तत्वो के खिलाफ कार्यवाही जारी रहेगी।

उपरोक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी निरीक्षक संजय बरेठ सहित सहायक उप निरीक्षक उदय सिंह चंदेल, प्रधान आरक्षक जी. सिरिल कुमार एवं थाना स्टाफ की सराहनीय भूमिका रही।

'सन टू ह्यूमन फाउंडेशन का योग शिविर ऑडिटोरियम में 28 को'

राजनांदगांव (दावा)। सन टू ह्यूमन फाउंडेशन द्वारा गोविंद राम निर्मलकर ऑडिटोरियम में 28 नवंबर दिन गुरुवार को प्रातः 6:30 से 8:30 भव्य एक दिवसीय योग शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

शिविर में सम्यक आहार, सम्यक व्यायाम, तथा सम्यक ध्यान के द्वारा ऊर्जा के रुपांतरण को प्रयोग के माध्यम से बताया जाएगा। प्रवचन नहीं प्रयोग का सिद्धांत प्रस्तुत करने वाले परमआलय जी, जो विगत 27 वर्षों से इंदौर के पास सेजवानी में द इसोटेरिक टेंपल में मानव उत्थान के लिए सतत् अनुसंधान रहे हैं, परम शिष्यों द्वारा शिविर लिया जाएगा। शिविर में नाभि झटका प्रयोग के सभी चरण कराय जाएंगे तथा हर एक चरणों की बारीकी तथा फायदे बताए जाएंगे। कार्यक्रम के पश्चात ऊर्जा दाई एल्कलाइन नाश्ते का भी आयोजन रहेगा। कार्यक्रम की तैयारी जोरों से जारी है।

कार्यक्रम की जानकारी के संदर्भ में विभिन्न स्थानों पर डेमो शेसन का भी आयोजन किया जाएगा। जिसमें प्रमुख रुप से पुलिस परेड ग्राउंड पीटीएस ब्लू डायमंड सिटी स्थानक भवन जैन संतक्रांत सनसिटी मेडिकल एसोसिएशन, अभिनंदन गैलेक्सी चेंबर ऑफ कॉमर्स तथा सिंधु भवन के साथ ही बहुत से अन्य जगह पर डेमोशेषन लिया जाएगा।

कार्यक्रम थी तैयारी के सिलसिले में लगातार बैठक तथा जनसंपर्क जारी है। कार्यक्रम संयोजक डॉक्टर नरेंद्र नहटा तथा प्रमुख सदस्यों रेख चंद जैन सुभाष लालवानी गोपाल गुप्ता प्रकाश देवांगन धर्मेंद्र कांकरिया श्रीमती सरिता नाहटा नितिन अग्रवाल रामनिवास गुप्ता नरेंद्र डाकलिया नरेश नाहटा श्रीमती रक्षा गुप्ता श्रीमती रेणु जैन प्रतीक अग्रवाल विमल अग्रवाल अनिल जैन शंभू नाथ बावरिया मुकेश मोटवानी प्रकाश हूंका विकास अग्रवाल विनोद श्रीरंगे आदि ने संस्कारधानी राजनांदगांव के समस्त नागरिक गणों से अधिक से अधिक संख्या में योग शिविर का लाभ उठाने की अपील की है।

हरे, लाल एवं पीले रंग के शिमला मिर्च की खेती से संवर रही किसानों की जिंदगी

राष्ट्रीय बागवानी मिशन अंतर्गत किसान मोरध्वज एवं देवेन्द्र को मिली कुल 33 लाख 76 हजार रूपए की सहायता अनुदान राशि

राजनांदगांव (दावा)। अभी तक आपने हरे रंग की शिमला मिर्च का जायका लिया है और जिक्र सुना है, लेकिन अब आप लाल एवं पीले रंग के शिमला मिर्च का भी स्वाद ले सकेंगे। डोंगरगढ़ के ग्राम पेंड्री के प्रगतिशील किसान मोरध्वज सिन्हा एवं राजनांदगांव जिले के ग्राम रेंगाकठेरा के किसान देवेन्द्र कुमार सिन्हा के पॉली हाऊस में लगे दुर्लभ किस्म के लाल, पीले और हरे रंग के शिमला मिर्च की खेती जिले में अपनी तरह का पहला नवाचार है। उद्यानिकी विभाग की ओर से राष्ट्रीय बागवानी मिशन के तहत किसान मोरध्वज को पॉली हाऊस की संरचना के लिए 16 लाख 88 हजार रूपए की राशि मिल है तथा संरक्षित खेती के लिए 2 लाख रूपए की राशि मिलेगी।

इसी तरह देवेन्द्र कुमार को पाली हाऊस के लिए कुल 16 लाख 88 हजार रूपए की राशि मिली है तथा संरक्षित खेती के लिए 2 लाख रूपए की राशि मिलेगी।

मल्चिंग एवं ड्रिप सिंचाई पद्धति से इसकी खेती की जा रही है तथा पौधों को सहारा देने के लिए धागे लगाए गए हैं। पोषक तत्वों से भरपूर शिमला मिर्च की मार्केट में बहुत डिमांड है। किसान मोरध्वज सिन्हा ने बताया कि छत्तीसगढ़ में रंगीन शिमला मिर्च की खेती नहीं होती। पहले बंगलौर से इसकी आपूर्ति की जाती थी, लेकिन अब यहीं खेती होने पर इसकी अच्छी कीमत मिल रही है। यहां का रंगीन शिमला मिर्च रायपुर, दुर्ग, भिलाई, राजनांदगांव जिले में जा रहा है। उन्होंने बताया कि अभी उनको 1 एकड़ में लगे 12 हजार पौधों से लगभग 42 लाख रूपए की आमदनी हो जाएगी। 1 पौधे से 3 किलोग्राम तक शिमला मिर्च का उत्पादन हो रहा है। मार्केट में 100-130 रूपए प्रति किलो शिमला मिर्च की बिक्री हो रही है।

उन्होंने बताया कि उनकी यह इच्छा है कि यह क्षेत्र मिनी इजराईल की तरह विकसित हो जाए। शासन की योजना के अंतर्गत लाभान्वित होते हुए यहां के किसान कम स्थान एवं कम लागत में पॉली हाऊस जैसे नवीनतम व उन्नत तकनीक का उपयोग करते हुए अधिक से अधिक फसल लें। यहां ज्यादा से ज्यादा पॉली हाउस बने।

उन्होंने बताया कि धान के बदले शिमला मिर्च की खेती में कम पानी की जरूरत होती है। धान की खेती से जहां एक एकड़ में 20 हजार रूपए, वहीं शिमला मिर्च की खेती में 20 लाख रूपए तक आमदनी हो रही है। उन्होंने राष्ट्रीय बागवानी मिशन द्वारा अनुदान मिलने पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री विष्णु देव साय को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि इससे पॉली हाउस बनाने एवं संरक्षित खेती करने के लिए मदद एवं प्रोत्साहन मिला है। उन्होंने बताया कि पॉली हाउस में ही किनारों पर धनिया पत्ती लगाए थे, जिससे 70 हजार रूपए की आय हुई है। किसान देवेन्द्र ने बताया कि रंगीन शिमला मिर्च की खेती का नया अनुभव है। उन्होंने बताया कि शिमला मिर्च की तोड़ाई समय-समय पर की जा रही है। दूसरे जिलों में भी भेज रहे हैं। ऊर्जा एवं सकारात्मकता से भरपूर इन किसानों के चेहरों से खुशी बयां होती है। शिमला मिर्च की कटिंग एवं देखरेख के लिए गांव के स्थानीय स्तर पर लोगों को रोजगार मिल रहा है।

उल्लेखनीय है कि रंगीन शिमला मिर्च का पास्ता, पिज्जा, सलाद, स्नैक्स, सूप एवं अन्य व्यंजनों में बहुतायत प्रयोग किया जा रहा है। जब ऊर्जा को प्रेरणा और दिशा मिलती है तो जिंदगी बदल जाती है। जिले के किसान उत्पादक संगठन माँ बम्लेश्वरी सेल्फ रिलायंस फार्मर्स ठेकवा से 1153 किसान जुड़े हुए हैं।

इन जागरूक किसानों ने धान के बदले अन्य फसलों को भी अपनाना प्रारंभ किया है। जिले के 16 हजार वर्ग मीटर में अभी शिमला मिर्च की खेती की जा रही है। कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल के मार्गदर्शन में किसान सामूहिकरण के माध्यम से भी कार्य कर रहे हैं और जिले में किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) को बढ़ावा दिया जा रहा है। जिले के किसानों की फसल विविधीकरण के लिए प्रेरित किया जा रहा है। सहायक संचालक उद्यानिकी श्री राजेश शर्मा ने बताया कि उद्यानिकी फसलों की ओर किसानों का रूझान बढ़ा है। किसानों ने पहली बार इतनी बड़ी मात्रा में फसल ली है। अन्य किसानों द्वारा भी पॉली हाऊस की मांग की जा रही है। उन्होंने कहा कि अगली बार शिमला मिर्च की ग्राफ्टेड फसल ली जाएगी, जो देशी एवं हाईब्रिड फसल का समन्वित प्रकार होगा। यह बैक्टिीरियल बिल्ट होता है, जिससे पौधों में बीमारियों से लडने की क्षमता बढ़ जाती है। यह फसल 8 माह तक रहती है तथा इसमें कम पानी की जरूरत होती है।

अनमोल दावा

> *कर्मो के परिणाम किसी न किसी रूप में जरूर मिलता है। इसलिए अच्छे कर्म करो ताकि परिणाम भी अच्छा मिले।*

क्या जलवायु संकट की जिम्मेदारी केवल विकासशील देशों पर है?

विकसित देशों में जलवायु से जुड़े खतरे को लेकर चिंता है, तो जरूरत इस बात की है कि इस समस्या की जिम्मेदारी विकासशील देशों पर थोपने के बजाय वे खुद आगे आकर इसके ठोस हल का रास्ता निकालने में अपनी भूमिका तय करें।

दुनिया भर में जलवायु पर मंडराते संकट का दायरा इतना व्यापक और गंभीर है कि विश्व के सभी देश चिंतित हैं और मिल-बैठ कर इसका समाधान निकालना चाहते हैं। इस मकसद से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जलवायु सम्मेलन होते रहते हैं। मगर इससे बड़ी विडंबना और क्या होगी कि दशकों से हर वर्ष आयोजित सम्मेलन में ज्यादातर देशों की हिस्सेदारी के बावजूद अब तक कोई ऐसा खाका सामने नहीं आ सका है, जिसमें जिम्मेदारियों और जवाबदेहियों के मसले पर एक न्यायपूर्ण दृष्टि अपनाई जाए और उस पर सभी देशों की सहमति बने। नतीजतन, जलवायु संकट पर आयोजित सम्मेलनों के बाद अब तक कोई ठोस प्रारूप सामने नहीं आ सका है। इस मसले की गंभीरता को समझने और स्वीकार करने के बावजूद ज्यादातर देशों के बीच मतभेद और अपनी जवाबदेही से दूर भागने की प्रवृत्ति क्यों बनी हुई है!

गौरतलब है कि इस वर्ष अजरबैजान के बाकू में हुए सीओपी-29 में भी विकसित और विकासशील देशों के बीच समस्याओं की गहराई पर विचार में कोई कमी नहीं देखी गई, मगर समाधान के रास्ते और जिम्मेदारियों के स्तर पर सहमति नहीं बनी। बाकू में विकासशील देशों के लिए नए जलवायु वित्त पैकेज का मसविदा तो पेश किया गया, लेकिन उसमें प्रमुख मुद्दे बरकरार रहे। दरअसल, विकसित देश अब भी इस सवाल का जवाब देने से कतरा रहे हैं कि वे 2025 से विकासशील देशों को जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए हर वर्ष कितना वित्तीय सहयोग देने को तैयार हैं। विकासशील देशों ने लगातार इस पक्ष को उठाया है कि ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कटौती और जलवायु अनुकूलन के लिए उन्हें कम से कम तेरह खरब अमेरिकी डालर की जरूरत है।

विचित्र यह है कि बाकू में पेश संशोधित मसविदे में विकसित देशों से वित्तीय सहयोग की जरूरत के पहलू को तो स्वीकार किया गया, लेकिन इस पर सहमति के मामले में कोई ठोस उपलब्धि हासिल नहीं हुई। यह समझना मुश्किल नहीं है कि ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कटौती के उपाय लागू करने के संदर्भ में विकासशील देशों को किन जटिल स्थितियों का सामना करना पड़ सकता है! इसमें कोई दोराय नहीं कि ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन जलवायु संकट के लिए सबसे बड़े कारकों में से एक है और बिना देरी किए इसका समाधान निकालने के लिए रास्ते तलाशने की जरूरत है। मगर सवाल है कि क्या इसके लिए केवल विकासशील देश जिम्मेदार हैं!जब भी इस समस्या के दायरे और इसकी जिम्मेदारी लेने की बात उठाई जाती है तो विकसित देशों की ओर से आखिर किन वजहों से कार्बन उत्सर्जन को मुख्य सवाल बनाने की कोशिश होती है? इन्हीं वजहों से गुरुवार को भारत को यह स्पष्ट रूप से कहना पड़ा कि वह विकासशील देशों के लिए जलवायु वित्त से ध्यान हटा कर उत्सर्जन में कमी लाने पर ध्यान केंद्रित करने के विकसित देशों के किसी भी प्रयास को स्वीकार नहीं करेगा। यह छिपा नहीं है कि विकासशील देशों में अभी विकास किस स्तर की चुनौतियों से गुजर रहा है, जबकि विकसित देशों में संसाधनों और सुविधाओं के उपभोग की स्थिति यह है कि जलवायु संकट के लिए जिम्मेदार ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को लेकर अक्सर वही कठघरे में खड़े पाए जाते हैं। विकसित देशों में जलवायु से जुड़े खतरे को लेकर चिंता है, तो जरूरत इस बात की है कि इस समस्या की जिम्मेदारी विकासशील देशों पर थोपने के बजाय वे खुद आगे आकर इसके ठोस हल का रास्ता निकालने में अपनी भूमिका तय करें।

पाँच महीने में ऐसा क्या हुआ जिससे हवा का रुख़ बीजेपी के पक्ष में हो गया

सुशीला सिंह और मोहम्मद शाहिद

इसी साल लोकसभा चुनाव में महाराष्ट्र में महाविकास अघाड़ी को बढ़त मिली थी, उससे लग रहा था कि विधानसभा चुनाव में भी उसे जीत मिल सकती है. लेकिन हरियाणा ने इस ट्रेंड को पहले ही ग़लत साबित कर दिया था और महाराष्ट्र में भी ऐसा ही होता दिख रहा है. बीजेपी के नेतृत्व वाले महायुति गठबंधन 200 से अधिक सीटों पर आगे है. इसमें सबसे चौंकाने वाली बात ये भी है कि बीजेपी ने 149 सीटों पर चुनाव लड़ा था जिसमें से 125 से अधिक सीटों पर वो आगे चल रही है. बीजेपी ने ये तब करके दिखाया है जब अब से पूरे पांच महीने पहले लोकसभा चुनाव के दौरान पार्टी को राज्य में बड़ा झटका लगा था. महाराष्ट्र में लोकसभा की 48 सीटें हैं जिसमें कांग्रेस के नेतृत्व वाले महाविकास अघाड़ी ने 30 सीटों पर जीत हासिल की थी. वहीं बीजेपी के नेतृत्व वाले महायुति गठबंधन को 18 सीटें मिली थीं.

बीजेपी ने महाराष्ट्र की कुल 23 सीटों पर चुनाव लड़ा था जिसमें से उसने नौ सीटें जीती थीं. लोकसभा चुनाव के परिणामों को देखते हुए अनुमान लगाया जा रहा था कि विधानसभा चुनावों में बीजेपी और उसके नेतृत्व वाले महायुति गठबंधन को भारी नुक़सान झेलना पड़ेगा. लेकिन हुआ इसका बिलकुल उलटा और बीजेपी राज्य में सबसे बड़ा दल बनकर उभरी है और अब इस बात की चर्चा भी शुरू हो गई है कि मुख्यमंत्री भी उसी का हो सकता है. बीते पांच महीनों में ऐसा क्या हुआ जो बीजेपी ने अपने प्रदर्शन को एकदम पलटकर रख दिया है. ये सवाल सबके ज़ेहन में कौंध रहा है. इस सवाल के जवाब में मुंबई स्थित वरिष्ठ पत्रकार समर खडस कहते हैं कि इसकी वजह महायुति सरकार की रणनीति है. उन्होंने बताया कि लाड़ली बहिन योजना, हिंदुत्व और जातियों को एकजुट करने की रणनीति ने बीजेपी को ये कामयाबी दिलाई है. उन्होंने कहा, पांच महीनों में बहुत कुछ हुआ. सबसे पहला लाड़ली बहिन योजना लाई गई जिसमें ढाई करोड़ महिलाओं के अकाउंट में चार महीने का पैसा आ गया. इसके साथ ही बंटेंगे तो कटेंगे नारा चलाया गया जिसकी वजह से कुछ हद तक हिंदू वोट एकजुट हुआ. लोकसभा में उस समय जब कांग्रेस जीती थी तब मराठा आरक्षण का मुद्दा चल रहा था तो उस वक़्त मराठा एकजुट हुआ था. साथ ही चुनाव के वक़्त कुछ बीजेपी नेताओं ने संविधान बदलने की बात कही थी. उसका असर यहां बौद्ध और दलित वोटों पर पड़ा. 9-10 फ़ीसदी बौद्ध वोट है जो महाविकास अघाड़ी के साथ चला गया. मराठा-दलित वोट एकजुट होने के साथ-साथ मुसलमानों का मतदान भी बढ़ा था.

वे बताते हैं, 70-80 फ़ीसदी मुसलमानों ने लोकसभा में मतदान किया था. इस बार मुसलमानों का मतदान प्रतिशत वापस 35-40 प्रतिशत हो गया. संविधान का मसला बीजेपी ने अछे तरीक़े से ठंडा किया जिसके बाद दलित वोट वापस उसके साथ जुड़ गया. इसके साथ ही आरक्षण के लिए सब-कैटेगरी बनाई गई जिसके बाद बौद्ध वोटर बीजेपी के साथ आए. समर खडस के अनुसार, बीजेपी ने कई प्रयोग किए. इसके अलावा छह अलग-अलग पार्टियां थीं जिसको लेकर भ्रम की स्थिति थी. बीजेपी का वोट शेयर बहुत बड़ा नहीं होगा लेकिन महाविकास अघाड़ी का वोट शेयर कम हुआ होगा.बीबीसी मराठी के संपादक अभिजीत कांबले का कहना है कि इस बार बीजेपी नेतृत्व वाले महायुति गठबंधन में लोकसभा चुनाव में हुई गलतियों से सबक लिया. वो कहते हैं, च्राज्य में महायुति गठबंधन ने ओबीसी मतदाता को अपने पक्ष में लाने की कोशिश की. वहां प्याज़ बेल्ट माने जाने वाले उत्तरी महाराष्ट्र में किसान प्याज़ निर्यात पर लगे प्रतिबंध को लेकर नाराज़ थे जिसके लिए वो नीतियां लेकर आई. वहीं जो वोट ट्रासफ़र नहीं हुए थे उसे लेकर भी बीजेपी ने काम किया. वे आगे बताते हैं कि पिछली बार बीजेपी अपने मतदाताओं और पार्टी कार्यकर्ताओं को ये समझाने में असफल रही थी कि वो उनके गठबंधन के साथी अजित पवार की पार्टी को वोट दे और समर्थन करे लेकिन हार के बाद बीजेपी इस मुद्दे पर दमखम से लग गई वहीं स्थानीय मुद्दों को लेकर भी काम किया. महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में जिस योजना को गेमचेंजर बताया जा रहा वो है- लाड़ली बहिन योजना.ज अभिजीत कांबले कहते हैं कि अगर रूझानों को देखा जाए तो ये कहा जा सकता है कि लाड़ली बहिन योजना योजना एक तरह से गेम चेंजर साबित हुई. इसके तहत हर महीने महिलाओं को 1500 रुपये देने का प्रावधान किया गया था. इस योजना का फ़ायदा 21 से 60 साल की महिलाएं उठा सकती हैं जिनके परिवार की सलाना आय 2.5 लाख रुपये से कम है. जिस संख्या में महिलाएं लाभ उठा रही थी वो बहुत ज़्यादा थी. वहीं वरिष्ठ पत्रकार जीतेंद्र दीक्षित बीबीसी संवाददाता सुमेधा पाल से कहते हैं कि ढाई महीने पहले मैं कह सकता था कि महाविकास अघाड़ी की सरकार बन रही है लेकिन इस दौरान महाराष्ट्र की राजनीति में बहुत कुछ बदला. लाड़ली बहिन योजना और दूसरी सरकारी योजनाओं ने गेमचेंजर का काम किया. इसका असर ग्रामीण इलाकों और शहरी इलाकों की झुग्गी बस्तियों में दिखाई दिया.ज मराठा आंदोलन, किसानों को राहत देना. सरकार ने इन मुद्दों पर काम किया. इसके अलावा ध्रुवीकरण की राजनीति ने भी बीजेपी के पक्ष में काम किया, जैसे बंटेंगे तो कटेंगे और एक हैं तो सेफ हैं का नारा. आरएसएस ने काफ़ी मेहनत की है. खासतौर पर विदर्भ के इलाकों में महायुति के लिए प्रचार किया. वोटिंग वाले दिन भी मतदाताओं को पोलिंग बूथ तक लाने में अहम भूमिका निभाई. उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह ने कम रैलियां कीं. लोकसभा चुनाव में जहां-जहां पीएम ने रैली की थी, वहां-वहां बीजेपी की हार हुई. इसी वजह से इस बार रणनीति में बदलाव कर रैलियों में कमी की गई. जीतेंद्र दीक्षित ने कहा कि इस बार चुनाव स्थानीय मुद्दों पर लड़ा गया और स्थानीय नेताओं ने ही अधिकतर रैलियों को संबोधित किया.

महाराष्ट्र चुनाव में महाविकास अगाड़ी गठबंधन में कांग्रेस ने 101 सीटों पर चुनाव लड़ा था. ऐसे अनुमान थे कि वो लोकसभा चुनाव के प्रदर्शन को दोहराते हुए विधानसभा की सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरेगी. महाविकास अघाड़ी की रणनीति कहां ग़लत साबित हुई? इस पर समर खडस कहते हैं, 1500 रुपये की लाड़ली बहिन योजना जब महायुति सरकार लेकर आई तो महाविकास अघाड़ी ने इसकी आलोचना की और कहा कि ये नहीं चल पाएगी. फिर महाविकास अघाड़ी ख़ुद 3000 रुपये की योजना अपने घोषणा पत्र में ले आई.व वे बताते हैं,महाविकास अघाड़ी के दल साथ काम करते नज़र नहीं आए. कांग्रेस को ये ग़लतफ़हमी हो गई कि हमारा आधार ज़्यादा है तो हमें ही अधिक सीट मिलनी चाहिए. इससे कांग्रेस-शिवसेना में तनाव हुआ. उधर राहुल गांधी अदानी, धारावी और महंगाई जैसे ग़ैर मुद्दे पर केंद्रित रहे. महंगाई और बेरोज़गारी के मुद्दों पर चुनाव जीता तो देश में वामपंथियों की सरकार होती क्योंकि उन्होंने ही सबसे ज़्यादा इस पर काम किया है. वहीं वरिष्ठ पत्रकार जीतेंद्र दीक्षित कहते हैं कि बागियों की तरफ से महाविकास अघाड़ी को अधिक नुकसान पहुंचा है. इसके अलावा बड़ा कारण ये है कि जो लोकसभा में शरद पवार के प्रति सहानुभूति थी, वो कम हुई है. महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के दौरान बंटेंगे तो कटेंगेज् नारा बहुत छाया रहा. वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक हैं तो सेफ़ हैंज् नारा दिया. इन नारों को हिंदुत्व और हिंदू समुदाय की विभिन्न जातियों को एकजुट किए जाने से जोड़कर देखा गया. क्या इन नारों ने महाराष्ट्र में बीजेपी के हिंदुत्व के एजेंडे को मज़बूती से आगे बढ़ाया और इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बड़ी भूमिका है? समर खडस कहते हैं कि यह हिंदुत्व या पीएम मोदी की जीत नहीं बल्कि रणनीति की जीत है. वो कहते हैं, चुनाव रणनीति के तहत लड़ा जाता है, अब चाहे जो भी कहे. हिंदुत्व की राजनीति का सवाल जहां तक है, पूरे भारत में बीजेपी ही हिंदुत्व की राजनीति कर रही है. आरएसएस और बीजेपी के पास ही उसी के अधिकार हैं. लेकिन इसका काउंटर नैरेटिव कांग्रेस ने कभी दिया नहीं.

विचार सरिता

मन में बसे हैं राम - 321 : निषाद राज ने श्री राम से भेंट की और उनका परिचय जान प्रसन्न हुए

डॉ. योगेंद्र कुमार पांडेय

थोड़ी ही देर में निषादराज अपने सैनिकों और अन्य नागरिकों के साथ श्री राम के निकट पहुंचे।

श्री राम के मुख पर अलौकिक तेज है। एक योद्धा होने का चिह्न। मुखमंडल ओज और आत्मविश्वास से दमकता हुआ। श्री राम के मुख पर मुस्कुराहट है। सीताजी जिज्ञासा के साथ इस जनसमूह को देख रही हैं। लक्ष्मण जी के चेहरे पर अभी भी सतर्कता के भाव में हैं। लक्ष्मण जी, जो बैठे हुए श्री राम जी और सीता जी के निकट खड़े हैं, निषाद राज की ओर बढ़ने लगे। मानो पहले वे जांच कर लेना चाहते हैं कि आगंतुक का उद्देश्य क्या है।

निकट आते हुए मुस्कुराकर निषादराज ने लक्ष्मण जी को हाथ जोड़े और बड़ी सरलता के साथ तेजी से श्रीराम की ओर दौड़ पड़े। लक्ष्मण जी ने भी प्रत्युत्तर में अपने हाथ जोड़े। वे सुनिश्चित हो गए कि ये कोई प्रमुख स्थानीय व्यक्ति हैं जो हम लोगों के आगमन की सूचना मिलने पर गंगा तट पर आ पहुंचे हैं।

निषादराज के साथ उनकी पत्नी भी हैं। दोनों ने हाथ जोड़कर श्री राम और सीता जी का अभिवादन किया।

''स्वागत है। प्रतीत होता है कि आप हमारे मित्र राज्य अयोध्या से आए हैं। वीर! क्या मैं आपका परिचय जान सकता हूं?'' निषादराज ने कहा।

श्री राम ने प्रसन्नवाणी में कहा, ''धन्यवाद मित्र! मैं अयोध्या नरेश महाराज दशरथ का ज्येष्ठ पुत्र राम,यह मेरी भार्या सीता है और वह मेरा अनुज लक्ष्मण है।''

राम नाम में बड़ा चमत्कार है। राम का नाम सुनते ही निषादराज की खुशियों का पारावार ना रहा। जिस तरह भक्त अनायास अपने सामने अपने आराध्य को देखकर प्रसन्न होता है, वही स्थिति निषादराज की है। एक निश्छल, वीर सेवा भावी राजा एक बड़े राज्य के राजकुमार का आत्मीय स्वागत करने को आतुर हो उठे।

(भगवान श्री राम की प्रेरक गाथा संस्कृत साहित्य में आदि कवि वाल्मीकि और हिंदी साहित्य में अवधी के महाकवि तुलसी से लेकर विश्व की अनेक भाषाओं की शताधिक रामायणों में लिखी गई है। लेखक ने इस रचना में श्री राम की महागाथा के विविध प्रसंगों से कथा प्रवाह की प्रेरणा प्राप्त की है। उन्होंने उन रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए श्री राम के जीवन के विविध प्रसंगों में अनेक स्थानों पर एक साधारण भक्त की अपनी नवीन रचनात्मक कल्पनादृष्टि का भी सहारा लिया है और रामकथा की मौलिक साहित्यिक प्रस्तुति का प्रयत्न किया है।)

भारतीय प्रवासियों के लिए चिंताजनक संकेत

ऐसा लगता है कि हालिया घटनाओं की रोशनी में कनाडा और उसके साथी देशों में राय बनी है कि भारत का अंदरूनी सांप्रदायिक टकराव अब निर्यात होकर उनके यहां पहुंच रहा है, जिससे आगे चल वहां कानून-व्यवस्था की बड़ी चुनौती पैदा हो सकती है।

संकेत साफ हैं। चार नवंबर को कनाडा के ब्रैम्पटन शहर में हिंदू समुदाय के लोगों ने जो शक्ति प्रदर्शन किया, उसने वहां के अधिकारियों के कान खड़े कर दिए हैं। संभवत- इसी कारण उनका रुख सख्त हो गया है। इसकी पहली मिसाल ब्रैम्पटन के मेयर की सक्रियता में दिखी। स्पष्टत- उनकी ही पहल का परिणाम था कि गुरुद्वारों ने खालिस्तानी सिखों की तरफ हिंदू मंदिर के बाहर हुए उग्र प्रदर्शन की निंदा की। दूसरी तरफ हिंदू मंदिर प्रबंधन ने अपने मुख्य पुजारी को निलंबित किया, जिनके हेट स्पीच के वीडियो वायरल हुए थे। इसके एक ही दिन बाद खबर आई कि मंदिर प्रबंधन ने पुजारी से माफी पत्र लेकर पुजारी को बहाल कर दिया है।

उधर उसी रोज इलाके पुलिस ने एलान किया कि भीड़ को भड़काने और कथित नफरती भाषण देने के आरोप में हिंदू समुदाय के तीन %नेताओं' को गिरफ्तार किया गया है। अधिकारियों ने और गिरफ्तारियों की संभावना जताई है। चर्चा है कि जिन भारतीय आव्रजकों के दस्तावेज दुरुस्त नहीं होंगे, उन्हें कनाडा से वापस भी भेजा जा सकता है। ब्रिटेन के लीस्टर शहर में सितंबर 2022 में भारतीय और पाकिस्तानी मूल के बाशिंदों के बीच दंगे हुए थे। ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका के कुछ शहरों में हिंदू-सिख तनाव और झड़पों की खबरें रही हैं।

शब्द सामर्थ्य -245

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. समाप्ति, खात्मा 3. रोगी, बीमार 5. गंभीरता, गहराई 6. बलपूर्वक, जबरदस्ती, व्यर्थ 9. लानत, तिरस्कार सूचक एक शब्द 10. लक्ष्मी, कमला 11. औषधालय 13. नाव खेने का लकड़ी का यंत्र 14. सतह, 'लेवल' 15. बिजली, तड़ित 17. चौकसी, सावधानी, बचाव 19. कहने वाला, वाचनकर्ता 20. सुंदर, अच्छा, बढ़िया 21. लगातार, तड़-तड़ करते हुए।

ऊपर से नीचे

1. शरीर का कोई भाग, शरीर 2. खोज-बीन, जांच-पड़ताल 3. वोट देने का हक 4. जो अत्यधिक शक्तिशाली व कठोर प्रकृति का हो, दृढ़, मजबूत 7. बरसात, पावस, बारिश 8. भरना, अटना, अंदर करना 12. घटना, हादसा, दुर्घटना 13. लिबास, पहनने का ढंग 16. नीला वस्त्र पहने वाला, नीला वस्त्र 17. ऐक्य, एक होने का भाव 18. दिल्ली स्थित प्रसिद्ध जेल।

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 244 का हल

वा	स्ता	■	■	सि	स	की	■	■
जि	■	ल	प	ट	■	मा	चि	स
ब	द	ला	■	क	■	■	ल	■
■	■	ट	■	नी	ल	क	म	ल
ता	ली	■	का	■	की	■	■	हू
क	■	स	रो	का	र	■	■	लु
झां	■	ज	बा	न	■	म	सी	हा
क	च	ना	र	■	भा	र्या	■	न
■	मं	■	■	ज	र	दा	■	■

सू- दोकू क्र.245

	2		6		8		3	
9		8		3		4		
							5	
5		2			7		6	
	8		4			1		3
				9				
8			9				1	
	5			1		6		2
		1	7				4	

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.244 का हल

2	6	3	8	1	4	9	7	5
9	5	4	2	6	7	3	1	8
8	7	1	9	3	5		6	2
6	2	7	5	4	8	4	3	9
3	9	8	6	7	1	2	5	4
4	1	5	3	2	9	6	8	7
5	3	2	4	8	6	7	9	1
1	8	6	7	9	2	5	4	3
7	4	9	1	5	3	8	2	6

डायबिटीज के रोगियों को सुबह जरूर खाना चाहिए अमरूद

डायबिटीज के मरीज को फाइबर से भरपूर चीजों का सेवन ज्यादा करना चाहिए। खाने में अधिक फल और सब्जियों को शामिल करें। हालांकि कौन से फल सब्जी डायबिटीज में खाने चाहिए। आपको ये जानना बेहद जरूरी है। कुछ फल ऐसे होते हैं जिन्हें खाने से डायबिटीज के मरीज का ब्लड शुगर लेवल बढ़ सकता है। इसलिए डॉक्टर हाई फाइबर और लो ग्लाइसेमिक इंडेक्स वाले फल खाने की सलाह देते हैं। सर्दियों में अमरूद का सीजन होता है। जानिए क्या डायबिटीज में अमरूद खा सकते हैं। क्या अमरूद खाने से शुगर बढ़ता है। अगर अमरूद खा सकते हैं तो कितनी मात्रा में खा सकते हैं?

अमरूद एक ऐसा फल है जो पोषक तत्वों के मामले में सेब से भी ज्यादा बढ़कर है। अमरूद के फायदों की वजह से इसे संस्कृत में 'अमृत' भी कहा जाता है। सर्दियों में ताजा और मीठे अमरूद का सीजन होता है। आपको रोजाना 1 अमरूद जरूर खाना चाहिए। डायबिटीज के मरीज के लिए भी अमरूद फायदेमंद फल है। सिर्फ अमरूद ही नहीं उसके पत्ते भी डायबिटीज में फायदा करते हैं।

डायबिटीज में अमरूद खाने के फायदे

न्यूट्रीशियन, वेट लॉस कोच और कीटो डाइटिशियन स्वाति सिंह की मानें तो अमरूद का ग्लाइसेमिक इंडेक्स 12-24 के बीच होता है जो काफी कम है। अमरूद में ऐसे कई विटामिन पाए जाते हैं जो ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल रखते हैं। अमरूद में विटामिन सी, फाइबर, आयरन, पोटैशियम, लाइकोपीन और एंटी-ऑक्सीडेंट पाए जाते हैं जो ब्लड शुगर कंट्रोल करने में मदद करते हैं। इसके अलावा अमरूद खाने से वजन कम होता है और शरीर में इन्सुलिन रेजिस्टेंस बेहतर होता है।

अमरूद कब खाना चाहिए?

डायबिटीज के मरीज दिनभर में 1 बड़ा अमरूद खा सकते हैं। सुबह नाश्ते में अमरूद खाना ज्यादा फायदेमंद माना जाता है। इससे दिनभर ब्लड शुगर को कंट्रोल करने में मदद मिलती है। सुबह खाली पेट अमरूद खाने से पेट और पाचन से जुड़ी समस्याओं को भी दूर किया जा सकता है। इससे कब्ज में राहत मिलती है। अमरूद खाने से मोटापा भी कम होता है।

राशिफल

मेष — आज आप अपने किसी करीबी दोस्त के साथ बाहर जा सकते हैं, बाहर का मौसम आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। अपने करियर को लेकर आप कुछ नया प्लान बनाएंगे। आप अपने गुरु से करियर के बारे में परामर्श ले सकते हैं। सरकारी एग्जाम की तैयारी करने वालों के लिए आज का दिन अच्छा रहेगा।

वृष राशि — आज का दिन बेहतरीन रहने वाला है। बिजनेस के सिलसिले में आपकी आज विदेश यात्रा हो सकती है। सरकारी ऑफिस में काम करने वालों का आज प्रमोशन हो सकता है। किसी करीबी रिश्तेदारों के आने से आपके घर का माहौल खुशनुमा बना रहेगा। परिवार वालों के साथ कहीं बाहर जाने का प्लान बन सकता है।

मिथुन — आज का दिन खुशियां भरा रहेगा। बच्चों से आपकोकोई गुड न्यूज़ मिल सकती है। आर्ट्स के स्टूडेंट के लिए आज का दिन अच्छा रहने वाला है। उनके मन में आज नए विचार आएंगे। आज आपका आर्थिक पक्ष मजबूत रहेगा। आपके व्यापार में दो गुना वृद्धि होने के योग बन रहे है।

कर्क — आज का दिन परिवार वालों के साथ बितेगा। आज आप अपने पिता के साथ मार्केट करने भी जा सकते हो। आज घर पर अलग-अलग पकवानों का आनंद लेंगे। आपका आर्थिक पक्ष मजबूत बना रहेगा। आपके बच्चों से आपको गुड न्युज मिल सकती है, जिससे आपको गर्व महसूस होगा।

सिंह — आज का दिन अच्छा रहेगा। आपको बिजनेस में कोई बड़ी डील मिल सकती है। इससे आपको धनलाभ हो सकता है। किसी शुभ समाचार के मिलने का योग नजर आ रहा है। आज पारिवारिक रिश्तों के बीच सामंजस्य बनाने में आप सफल रहेंगे। आज मनोरंजन में पैसे खर्च हो सकते हैं, इससे आपको आनन्द की प्राप्ति होगी।

कन्या — आज का दिन सफलता दिलाने वाला है। आपके सारे पुराने काम आज पूरे हो जाएंगे। दुकानदारों के लिए आज का दिन अच्छा रहेगा। आज अच्छी कमाई होने का योग बन रहा है। कला के क्षेत्र में रुझान वालों को आज अच्छे ऑफर आ सकते है। इंजीनियरिंग करने वाले छात्रों के लिए आज जॉब के अच्छे ऑफर मिल सकते है।

तुला — आज आपकी नये कार्यों में रुचि बढ़ेगी, जिससे आपको कुछ नया सीखने को मिलेगा। आज आप फिजूल के खर्च को कम करने का प्रयास करेंगे तो आपके भविष्य के लिए पैसे इकट्ठे होने में आसानी होगी। आज आर्थिक पक्ष पहले से अधिक मजबूत रहेगा। आज किसी फिल्म में गाने का ऑफर मिल सकता है।

वृश्चिक — आज का दिन दोस्तों के साथ बितेगा। आज अपने बड़े-बुजुर्ग का आर्शीवाद लेकर नया बिजनेस शुरू करें तो फायदा होना तय है। बच्चों के करियर को बेहतर बनाने के लिए आज आप किसी अनुभवी व्यक्ति से सलाह लेंगे। आज स्वास्थ्य के प्रति आप थोड़ी सावधानी रखें।

धनु — आज का दिन आपके लिए उत्तम है। आज सभी काम आपके मन के मुताबिक पूरे होंगे। ऑफिस में आज कुछ सहकर्मी आपके काम को लेकर आपकी तारीफ कर सकते है। आज आपके सकारात्मक विचारों से खुश होकर बॉस आपको उपहार स्वरूप कोई उपयोगी वस्तु गिफ्ट कर सकते हैं।

मकर — आज आपका दिन बढ़िया रहेगा। ऑफिस के कार्यों में आज आपका मन लगेगा। अगर आज किसी जरूरी काम को पूरा करने की सोच रहे हैं तो वह आज समय से पहले पूरा कर लेंगे। किसी नयी जमीन से संबंधित कोई लेन-देन करने जा रहे हैं तो पहले उसकी अच्छे से जांच-पड़ताल जरूर कर लें।

कुंभ — आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। आज आपको कई दिनों से रुके हुए काम में सफलता मिल सकती है। ऑफिस में किसी काम को लेकर जल्दबाजी करने से आज आपको बचना चाहिए, धैर्य के साथ काम करें। इस राशि के स्टूडेंट्स के लिए आज का दिन अच्छा है, पढ़ाई में मन लगेगा।

मीन — आपके लिए आज का दिन अच्छा रहने वाला है। विद्यार्थियों को आज किसी प्रतियोगिता में भाग लेने का मौका मिलेगा। इस राशि के विवाहितों के लिए आज का दिन अच्छा है, जीवनसाथी के साथ कहीं बाहर डिनर पर जा सकते हैं। दोनों के बीच में सामांजस्य बना रहेगा। जो आगे चलकर आपके लिए फायदेमंद होगी।

महाराष्ट्र चुनाव में महायुती गठबंधन कि ऐतिहासिक जीत से प्रदेश भाजपा में हर्ष

मतदाताओं ने साबित कर दिया कि देश कि जनता का विश्वास मोदी जी और भाजपा पर है - रामजी भारती

डोंगरगढ़(दावा)। महाराष्ट्र चुनाव मे महा युती गठबंधन कि जीत और मराठ वाडा संभाग मे ऐतिहासिक जीत के लिए प्रदेश भाजपा के महामंत्री रामजी भारती ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा है कि,मराठ वाडा संभाग मे छत्तीसगढ़ से चुनाव प्रबंधन के लिए गए सभी प्रवासी कार्यकर्ताओ कि मेहनत का प्रतिफल है।

राष्ट्रीय संगठन महामंत्री शिवप्रकाश और प्रदेश संगठन महामंत्री पवन साय का कुशल मार्गदर्शन से ही ये ऐतिहासिक जीत सम्भव हुई। मराठ वाडा में 47 विधानसभा और एक लोकसभा सीट पर चुनाव सम्पन्न हुआ। जिसमें छत्तीसगढ़ से गए प्रवासी कार्यकर्ताओं ने लगातार मेहनत कर ऐतिहासिक जीत दर्ज किये। साथ ही साथ नादेड़ लोकसभा सीट के उप चुनाव में बीजेपी के प्रत्याशी कि जीत हुई।

प्रवासी कार्यकर्ताओं ने विभिन्न कल्याणकारी योजना को घर-घर पहुँचाकर जीत का मार्ग प्रशस्त किया

मराठ वाडा संभाग मे छत्तीसगढ़ के 27 प्रवासी कार्यकर्ताओं ने मोदी जी और महाराष्ट्र सरकार की लाड़की बहिन योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, आयुष्मान कार्ड जनधन योजना, उज्जवला गैस योजना किसान समृद्धि योजना सहित विभिन्न कल्याणकारी योजना को घर-घर पहुँचाकर जीत का मार्ग प्रशस्त किया। इस ऐतिहासिक जीत पर प्रदेश महामंत्री श्री रामजी भारती ने सभी को बधाई दिया है।

ग्राम अछोली, बेलगाँव, छीपा, मोहारा, ढारा और कलकसा स्थित सोसायटी पहुंचकर किसानों से मिली विधायक

विभिन्न धान खरीदी केंद्रों में जाकर विधायक श्रीमती बघेल द्वारा निरीक्षण किया गया

डोंगरगढ़(दावा)। विधायक हर्षिता स्वामी बघेल द्वारा समस्त धान खरीदी केंद्रों के निरीक्षण के दौरान समस्त किसानों से रूबरू होकर उनकी समस्याओं को जाना,चर्चा के दौरान किसानों ने धान बिक्री के दौरान होने वाली परेशानी के बारे में बताया कि, टोकन को ऑनलाइन के साथ ही कुछ टोकन को ऑफलाइन भी होना चाहिए।कभी कभी सर्वर की तकनीकी खराबी की वजह से कई किसान को टोकन लेने में दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। धान की राशि मे बढ़ोतरी हुई जिसको एकमुस्त देने की घोषणा के बावजूद 3100 के स्थान पर 2300 रूपये की राशि ही दे रहे है और बाकी की राशि का कोई समय सुनिश्चित नही किया गया है। जिससे समस्त किसानों ने नाराजगी जताते हुए जल्द जल्द से उस राशि की मांग की। इस मांग पर हर्षिता स्वामी बघेल ने आश्वासन दिया कि आप सभी की बातों को हम समस्त जनप्रतिनिधि अधिकारी और सरकार को अवगत कराएंगे की इस समस्या को जल्द से जल्द निवारण करे। साथ ही समस्त धान खरीदी केंद्रों के प्रबंधकों को आदेशित करते हुए कहा कि हमारे किसान भाइयों को कुछ दिक्कत तकलीफ आती है तो आप सभी सहयोग करे ताकि किसान भाइयों को कोई परेशानी न हो।

उक्त कार्यक्रम में ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष सुरेश सिन्हा, जिला कांग्रेस संयुक्त महामंत्री चुमन साहू ,राजू राजपूत, ब्लॉक महिला कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती लता साहू ,फिरंगी पटेल, गोकुल वर्मा, पंचराम चंदेल, योधन साहू, दिनेतु जांगड़े, लाला वर्मा, श्यामशाय तांदेकर, जगदेव साहू, नंदकुमार महोबिया, घनश्याम साहू, फत्तू वर्मा, राजू वर्मा, श्रीमति मनीषा नेताम, नरोत्तम कुंजाम, हरक पटेल, राजेंद्र श्रीवास, गुलशन लिलहारे, रंजीत भारती, ईश्वर साहू, पिंटू वर्मा एवं बड़ी संख्या में सभी धान खरीदी केंद्र के किसान भाई लोग एवं प्रबंधक उपस्थित रहे।

पहला कॉलम...

वैचारिक भ्रष्टाचार का अंत किया गया महाराष्ट्र के जनादेश द्वारा-विवेक मोनू भंडारी

डोंगरगढ़(दावा)। छत्तीसगढ़ की सीमा पर स्थित महाराष्ट्र राज्य में हुए विधानसभा चुनावो के निर्णय ने यह बता दिया कि कोई भी राजनैतिक पार्टी हो वह अगर अपनी विचारधारा को ही छोड़ दे तो उसका अंत निश्चित है।पिछले विधानसभा में आम जनता ने भाजपा शिवसेना को जनादेश दिया, परंतु सिर्फ सत्ता के स्वार्थ के चलते गठबंधन धर्म न निभाते हुए शिवसेना अपने ही मूल सिद्धांतों को छोड़ काग्रेस के साथ सरकार बना लिया।

लोकसभा में जनता को गुमराह कर सिर्फ झूठ के नाम पर भारतीय जनता पार्टी को आरक्षण के नाम पर संविधान के नाम पर बदनाम करने का प्रयास किया गया। अब बात महाराष्ट्र के स्वाभिमान का था महाराष्ट्र की अस्मिता का था और फिर आम जनता ने देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और महायुति के विचारों में महाराष्ट्र के हित को जाना और हर बात के समझौते वाली सरकार को नकारते हुए महाराष्ट्र के विचारों वाली महायुति और भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व को ऐतिहासिक जीत दिलाकर राजनैतिक पार्टियों को बता दिया कि राजनैतिक पार्टी किसी एक परिवार की नही बल्कि विचारों को आगे बढ़ाने वाले कार्यकर्ताओं की होती है। डोंगरगढ़ शहर भाजपा के पूर्व महामंत्री पूर्व जिला संयोजक विवेक मोनू भंडारी ने महाराष्ट्र में भारतीय जनता पार्टी गठबंधन की सरकार लाने के लिए महाराष्ट्र की जनता को असीम बधाई शुभकामनाएं दी और आशा व्यक्त की डोंगरगढ़ सीमा से लगे महाराष्ट्र की प्राकृतिक वैभवता में अब और अधिक आकर्षक बनाया जाएगा ताकि आने वाले समय मे यहां पर्यटकों की संख्या में इजाफा हो और दोनों ही राज्यों की सीमाओं से लगे लोगो को पर्यटकों के माध्यम से रोजगार मिल सके।

कंफ्लूएंस महाविद्यालय में प्रबंधन एवं वाणिज्य विभाग द्वारा विश्व उद्यमिता दिवस कार्यक्रम संपन्न

राजनांदगांव (दावा)। कॉन्फ्लुएंस महाविद्यालय के प्रबंधन एवं वाणिज्य विभाग द्वारा महाविद्यालय में 21 अगस्त 2024 को विश्व उद्यमिता दिवस पर समूह चर्चा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य उद्यमिता की भावना का जश्न मनाना और छात्रों के बीच नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देना था। वाणिज्य एवं प्रबधन विभाग के छात्रों ने इस उद्यमिता दिवस के अवसर पर अपने विचार साझा किए और कहा कि हम एक अच्छे उद्यमी तभी बन सकते हैं जब हम अपने उद्यमिता कौशल का पूर्णतः विकास करे जिसे हमे व्यापार से सम्बंधित पूर्ण ज्ञान हो जाएं ताकि भविष्य में हम अपना खुद का स्टार्टअप कर स्वरोजगार को बढ़ावा दे सकते है और रोजगार की कमी को दूर करना में पाना योगदान दे सकते है। साथ ही साथ इस चर्चा में छात्रों को अपने उद्यमशीलता कौशल का प्रदर्शन करने का मौका दिया। समूह चर्चा के माध्यम से छात्रों को समान विचारधारा वाले व्यक्तियों के साथ नेटवर्क बनाने और उद्यमिता की दुनिया में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का अवसर भी प्रदान किया। यह चर्चा में महाविद्यालय के शिक्षकों के निर्देशन में पूर्ण हुई जिसमें विद्यार्थियों को शिक्षकों के माध्यम से प्रेरित किया गया।

इतवारी-टाटानगर एक्सप्रेस तीन दिन रहेगी रद्द

रायपुर (दावा)। चक्रधरपुर मंडल के झारसुगुड़ा स्टेशन यार्ड में एफओबी गर्डर लांचिंग हेतु पावर ब्लॉक के कारण कुछ गाड़ियों का परिचालन प्रभावित रहेगा । दक्षिण पूर्व रेलवे के चक्रधरपुर मंडल के झारसुगुड़ा स्टेशन यार्ड में एफओबी गर्डर लांचिंग हेतु पावर ब्लॉक लिया जायेगा। जिसके फलस्वरूप दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से संबन्धित निम्न गाड़ियों का परिचालन प्रभावित रहेगा। गंतव्य से पहले समाप्त/रवाना होने वाली गाडियां :- दिनांक 26, 28 व 30 नवंबर 2024 को नेताजी सुभाष चंद्र बोस से चलने गाड़ी संख्या 18110 नेताजी सुभाष चंद्र बोस इतवारी-टाटानगर एक्सप्रेस, बिलासपुर स्टेशन में समाप्त होगी व बिलासपुर-टाटानगर के मध्य रद्द रहेगी। दिनाँक 26, 28 व 30 नवंबर 2024 को गाड़ी संख्या 18109 टाटानगर- नेताजी सुभाष चंद्र बोस इतवारी एक्सप्रेस बिलासपुर स्टेशन से प्रारम्भ होगी होगी व टाटानगर-बिलासपुर के मध्य रद्द रहेगी।

सैकड़ों ग्रामीणों की कारूटोला धान खरीदी केंद्र को गोड़लवाही से जोड़ने की मांग

खुज्जी (दावा)। सैकड़ों की संख्या में ग्रामीणजन राजनांदगांव पहुंचकर अपनी मांग को जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष सचिन बघेल व कलेक्टर संजय अग्रवाल के पास रखा जहां उनके समस्या का जल्द समाधान का आश्वासन दिया गया है, जिस पर सैकड़ों की संख्या में पहुंचे ग्रामीण जनों ने संतुष्टि जाहिर की है।

कारूटोला ग्राम की समस्याओं को लेकर जिला सहकारी समिति बैंक के अध्यक्ष सचिन बघेल के यहाँ पहुंचे जिला भाजपा मंत्री कैलाश शर्मा, मंडल उपाध्यक्ष सुमित मंडावी,मटिया सोसायटी अध्यक्ष कपिल बघेल, जनपद सदस्य भूपेन्द्र नायक, गोपाल भूआर्य पूर्व जनपद सदस्य, अशोक मंडावी, धांसू राम, बेनूराम, युवराज यादव, फगुनुरम, याजेन्द्र मांडवी, केवल नेताम, त्रिलोचन श्रीवास, अर्जुन सिंह, इंदल सिंह, चंपालाल, गोकुल राम, डालूराम, सातम बाई, चैती बाई, कुवांरिया बाई वार्ड पंच, रेखा बाई, अहिल्याबाई, कोमल नेताम, गुलाब मांडवी, कुमार मंडावी, उग्रसेन, शोभा मांडवी, झालेन्द नेताम, भोजूराम एवं समस्त ग्राम वासी पहुंचे थे और अपनी पीड़ा को रखते हुए कहा कि हम लोग पहले धान को मटिया सोसायटी उपकेन्द्र गोडलवाही में बेच रहे थे पर अब हमें धान बेचने के लिए गोडलवाही उपकेन्द्र छोड़कर 17 किलोमीटर दूर सम्बलपुर में धान बेचने मजबूर है।

जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष सचिन बघेल के पास जिला मंत्री कैलाश शर्मा एवं सोसायटी अध्यक्ष कपिल बघेल एवं क्षेत्र भाजपा नेताओं के माध्यम से रखा गया जिस पर अध्यक्ष श्री बघेल द्वारा यह आश्वासन दिया गया कि इस पर जल्द ही सबंधित अधिकारी को एवं सबंधित को कार्यवाही के लिए आदेश दिया जायेगा ताकि आप सभी किसानों को किसी प्रकार की दिक्कत का सामना न करना पडे और यही भाजपा की नीति और रीति रही है। हमेशा से भाजपा किसानों के हितैषी सरकार रही है और उन्ही दिशा में काम कर रही है।

सेवा सहकारी समितियों में निगरानी समिति का मनोनयन

(राजेश मेश्राम)

जोंधरा (दावा)। कुमर्दा तहसील के अंतर्गत आने वाले कुल बारह सेवा सहकारी समिति में प्रदेश काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष दीपक बैज एवं जिला काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भागवत साहू के निर्देशानुसार कुमर्दा ब्लॉक काँग्रेस के अध्यक्ष अब्दुल खान ने सभी बारह समितियों में निगरानी समिति सदस्यों के मनोनयन की घोषणा कर दी है। जो इस प्रकार है - रतनभाट सहकारी समिति में हरदेव देवांगन, मनोज कुमार, बीसरूराम, पुरनलाल पिसदा, अजय कुमार, भरत सओटी विदेशीराम, प्रेमलाल जोशी, गोड़लवाही समिति से पुनुराम मंडावी, रेवाराम, जगदीश बघेल, रामगुलाल, चैनूराम, भूपेन्द्र कुमार, उमरवाही समिति से रामाधीन रावटे, मोहनलाल ठाकुर, सोनउराम पाथरे, सफीकखान, लखन नेताम, रघुराणा संबलपुर समिति से नारायण लाल, चुनूराम, नरेश यादव, बादल रावटे, बिसौहा, गिदर्री समिति से मोहितराम, सीपारत खान, पुनाराम, प्रेमलाल मंडावी, धनीराम, पांगरीकला समिति से नरेन्द्र निर्मलकर, अंगदलाल, बलराम , भागीबाई, राजकुमार बोरकर, खुर्सीटिकुल समिति से कामता साहू, आशोक धनकर, चन्द्रभान साहू, जीवनलाल साव, किसुन पटौती, छबिलाल भुआर्य, केशव ठाकुर, नरेन्द्र साहू, आमगांव समिति से रघुवीर साहू , मदनलाल चंद्राकर , हेमंत कुमार, कुमर्दा समिति से दिनेश पिस्दा, फकीर साहू, लालचंद, प्रकाश, लीलाधर पटेल, चारभांठा समिति से सुनिल पिपरोल, गणेशराम पटेल, रहिम खान, हीरा भंडारी, रामलाल श्याम, शरद चंद्राकर, टीकम साहू, बादराटोला समिति से विशाल बघेल मुकेश पटेल, प्रकाश नेताम, उमेन्द्रराम पुजेरी, गोपीदास साहू , मंशाराम , रामजी, आतरगांव समिति से सुरेश पटेल, भागचंद मंडावी भालचंद साहू, रोहिलाल, नंदूराम आदि का मनोनयन किया गया है।

बेलरगोंदी में खुज्जी विधायक भोलाराम साहू ने नवनिर्मित शासकीय हाईस्कूल भवन का किया लोकार्पण

राजनांदगांव (दावा)। खुज्जी विधानसभा क्षेत्र के ग्राम पंचायत बेलरगोंदी, विकासखंड छुरिया में मुख्य अतिथि के रुप में विधायक भोलाराम साहू स्कूल परिसर में ज्ञानदायनी माँ सरस्वती की विधिवत पूजा-अर्चना कर दीप प्रज्वलित किए बाद नवीन हाई स्कूल भवन का लोकार्पण कर पट्टिका का अनावरण किए. इस दौरान स्कूली बालिकाओं के द्वारा अतिथियों के स्वागत में एवं अन्य छत्तीसगढ़ी आँचलिक विभिन्न पर्वों का पारम्परिक वेशभूषा में सुंदर नृत्य की प्रस्तुति दिए उन्हें पुरस्कार राशि देकर उनका भी उत्साहवर्धन किए.

विधायक श्री साहू ने अपने उद्बोधन में ग्राम पंचायत बेलरगोंदी संकुल के सभी शिक्षकगणों, विद्यार्थीयों, शाला परिवार एवं समस्त ग्रामवासियों को नवीन हाई स्कूल भवन के लोकार्पण की बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनायें दिए तथा ग्रामवासी एवं स्कूली विद्यार्थियों द्वारा अतिथियों के आत्मीय स्वागत के लिए उन्होंने ग्रामवासियों एवं शाला परिवार का हृदय से आभार व्यक्त किए।

इसी क्रम में श्री साहू ने कहा कि प्रदेश व क्षेत्र के विकास व उन्नति के लिए बच्चों का शिक्षित होना एवं शिक्षण हेतु पर्याप्त संसाधन होना नितांत ही आवश्यक बताया। उन्होंने स्कूल में बच्चों के बैठने हेतु बेंच-टेबल देने की मंच में घोषणा की। इस कार्यक्रम के दौरान आलम खान प्रदेशाध्यक्ष जिला प्रभारी कांग्रेस कमेटी, श्रीमती प्रतिमा सोनबोइर जनपद सदस्य छुरिया, श्रीमती राजकुमारी सिन्हा पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष छुरिया, राजू सिन्हा कांग्रेस कार्यकारिणी ब्लॉक अध्यक्ष छुरिया, विपिन यादव जनपद सदस्य छुरिया, मनोज सिन्हा पूर्व सदस्य अन्य पिछड़ा वर्ग आयोग, अब्दुल खान अध्यक्ष ब्लॉक कांग्रेस कमेटी कुमरदा, आलोक मिश्रा, प्राचार्य शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बेलरगोंदी सुंदरलाल चतुर्वेदी, श्रीमती रमशीला सोनबोइर सरपंच ग्राम पंचायत बेलरगोंदी, पुरानिकराम साहू उप सरपंच, छगनलाल पोर्टे सचिव, मोनू भुआर्य इंजी. एवं शिक्षकगण, पदाधिकारीगण, पंचगण, शाला परिवार बालक-बालिकाएँ तथा समस्त ग्रामवासी उपस्थित थे।

जिपं अध्यक्ष गीता घासी साहू ने भाजपा प्रत्याशी संजय पुराम के विजय जुलुस में शामिल हुए दी जीत की बधाई

राजनांदगांव (दावा)। प्रदेश भाजपा के नेतृत्व व निर्देशानुसार राजनांदगांव जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती गीता घासी साहू महाराष्ट्र राज्य के चुनाव प्रवास पर रही।जहां आमगांव-देवरी विधानसभा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी संजय पुराम के पक्ष में श्रीमती साहू लगातार चुनावी सभा लेकर कार्यकर्ताओं से रूबरू हो रहे थे।

बता दें कि अध्यक्ष गीता घासी साहू को आमगांव- देवरी विधानसभा क्षेत्र की जिम्मेदारी मिली है तब से लगातार गाँव गाँव जाकर भाजपा कार्यकर्ताओं को केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं से अवगत करा रहे थे साथ ही आमजन से मुलाकात कर भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करने की अपील की थी। राजनांदगांव जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती गीता घासी साहू आज भाजपा प्रत्याशी संजय पुराम जी से सौजन्य मुलाक़ात कर उन्हें विजयश्री की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें प्रेषित किया। अध्यक्ष गीता घासी साहू ने बताया कि आमगांव-देवरी विधानसभा क्षेत्र से संजय पुराम दूसरी बार विधायक बन गए है। श्री पुराम जी 34000 हजार से अधिक मतो विजयी हुए है।

जोशीलमती सोसायटी में हिरेन्द्र साहू के प्राधिकृत अधिकारी के नियुक्त होने से ग्रामीणों में खुशी

राजनांदगांव (दावा)। भाजपा मंडल छुरिया के अध्यक्ष अजय पटेल के अनुशंसा पर जिला अध्यक्ष रमेश पटेल, जिला सहकारी केंद्रीय बैंक के अध्यक्ष सचिन बघेल, प्रदेश सहकारिता प्रकोष्ठ के संयोजक शशिकांत द्विवेदी के मार्गदर्शन में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय द्वारा छुरिया ब्लाक के अंतर्गत जिला सहकारी केंद्रीय बैंक राजनांदगांव के शाखा सहकारी केंद्रीय बैंक गैंदाटोला के अंतर्गत आने वाले समिति जोशीलमती सोसायटी पंजीयन क्रमांक 1089 से हिरेन्द्र कुमार साहू पिता चेतन दास साहू को प्राधिकृत अधिकारी/अध्यक्ष के लिए शासन द्वारा आगामी आदेश तक मनोनीत किया गया है। जिससे जोशीलमती सोसायटी के अंतर्गत आने वाले सभी ग्राम खोरा टोला, गर्रापार, केशाल, दैहान, हर्राटोला, मावली चुवा, जोशीलमती, पठान ढोड़गी, थैलीटोला, दतरेंगाटोला, कोलियरी, कोलिहालमती आदि गांव के किसानों ने जोशीलमती सोसायटी पहुंचकर गुलदस्ता भेंटकर एवं गुलाल लगाकर स्वागत किया और बधाई दिया।

बधाई देने प्रमुख रूप से तिलोचन साहू पूर्व सोसायटी अध्यक्ष जोशीलमती, लोकनाथ साहू उपाध्यक्ष जोशीलमती सोसायटी, घनश्याम साहू सरपंच ग्राम पंचायत केशाल, बालमुकुंद कुंजाम सरपंच ग्राम पंचायत गर्रापार, तामेश्वर पटेल, रामकुमार साहू, यादव राम साहू, चित्रांगन साहू, ताजूराम, कोमलदास साहू बिल्डिंग ठेकेदार, कंवलूराम, रेवाराम साहू, प्रताप, विजय भारद्वाज, चन्द्रभान कोर्राम, भागवत कस्तूरे, बृजभान, नेतराम, बाबूलाल, रजऊ राम, मुकेश कुमार, तुलसी राम, टेमन लाल साहू, लेखन साहू समिति प्रबंधक गैन्दाटोला, पुष्कर गुप्ता कंप्यूटर ऑपरेटर गैंदाटोला, गणपत सिन्हा सहायक समिति प्रबंधक जोशी लमती, लाल बहादुर कोटेलकर, मोहन साहू, लोकनाथ साहू,नेमन मरकाम, मोती लाल साहू, सनद साहू, जशवंत सिन्हा, पुरण साहू, मोहित भक्ता, भगवान दास साहू, सहित सोसायटी के अंतर्गत 11 गांव के कृषकगण उपस्थित रहे। प्राधिकृत अधिकारी हिरेन्द्र साहू ने कहा कि सोसायटी में अगर किसी भी प्रकार की कोई समस्या आता है तो हम सब मिलकर बैठकर सामंजस्य बिठाकर समस्या का समाधान करेंगे। सोसायटी के कोई भी कार्य में आप सभी की सहभागिता आवश्यक है।

महाविद्यालय में आनंद मेला का आयोजन हर्षोल्लास के साथ संपन्न

डोंगरगढ़(दावा)। शासकीय कुंज बिहारी चौबे महाविद्यालय लाल बहादुर नगर प्राचार्य डॉ. आर.के. ठाकुर के निर्देशानुसार सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभारी डॉ हेमलता गायकवाड के नेतृत्व में प्रत्येक वर्ष के अनुरूप महाविद्यालय में आनंद मेला का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया द्य प्राचार्य द्वारा आनंद मेला का शुभारंभ किया तथा छात्र-छात्राओं का उत्साहवर्धन किया गया। महाविद्यालय छात्र छात्राओं द्वारा विभिन्न खाद्य समाग्री एवं पान स्टाल लगाए हुए थे, जिसमें खूब व्यापारिक गुण तथा कुशलता देखने को मिला।

अजय कुमार यादव एम ए हिंदी ने श्रेष्ठतम प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान, पल्लवी साहू बी ए द्वितीय एवं डोमेश्वरी साहू बी एस सी द्वितीय वर्ष ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया द्य आनंद मेला में महाविद्यालय छात्र छात्राओं ने लुफ्त उठाया। आनंद मेला में महाविद्यालय के वरिष्ठ प्रो मनोहर बोकड़े, सूर्यकांत वर्मा, बी. आर. चंद्रवंशी, सुश्री सोनल नागवंशी श्रीमती रीना सलामे, अरुण कुमार साहू, सुश्री कविता यदु नम्रता परीक्षा कामिनी वर्मा रूपेश हेमंत कवर राजेश चक्रधारी, प्रीति साहू, डी.एल. यादव, आर.कंवर, गौतम रगड़े, मंशाराम चंद्रवंशी तथा महाविद्यालय के छात्र छात्रा उपस्थित थे।

पहला कॉलम...

1 लाख डॉलर के करीब पहुंचा बिटकॉइन का भाव

नई दिल्ली। अमेरिका में हुए राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप की जीत के बाद से बिटकॉइन के भाव में जारी तूफानी तेजी शुक्रवार को भी जारी रही। शुक्रवार को बिटकॉइन की कीमत पहली बार 99,000 डॉलर को पार कर गई। शुक्रवार को दोपहर 1 बजे के आसपास बिटकॉइन की कीमत 99,502.92 डॉलर के अपने लाइफटाइम हाई पर पहुंच गई थी। इस क्रिप्टोकरेंसी ने सिर्फ हफ्ते में 40 प्रतिशत से ज्यादा की छलांग लगाई है। क्रिप्टो एक्सचेंज एफटीएक्स के पतन के बाद 17,000 डॉलर से नीचे गिरने के 2 साल बाद अब बिटकॉइन एक लाख डॉलर के करीब पहुंच गया है।

बिटकॉइन की कीमत में ये आश्चर्यजनक तेजी ऐसे वक्त में आई है, जब इंडस्ट्री के एक्सपर्ट उम्मीद कर रहे हैं कि डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन डिजिटल करेंसी को रेगुलेट करने के लिए क्रिप्टो के लिए ज्यादा अनुकूल पॉलिसी लेकर आएगा। कॉइनडेस्क के अनुसार शुक्रवार की सुबह बिटकॉइन 98,882 डॉलर पर कारोबार कर रहा था। ट्रंप पहले क्रिप्टोकरेंसी को लेकर संशय में थे, लेकिन चुनाव से पहले उन्होंने अपना विचार बदलते हुए क्रिप्टोकरेंसी की तरफदारी की थी। उन्होंने अमेरिका को विश्व की क्रिप्टो कैपिटल बनाने और बिटकॉइन का रणनीतिक भंडार तैयार करने का संकल्प लिया था। न होता है।

छह विदेशी पर्यटकों की दूषित शराब पीने से मौत

बैंकॉक । एशियाई देश लाओस में एक के बाद एक पर्यटकों की मौत की खबर सामने आई है। यहां खराब शराब पीने से छह पर्यटकों की मौत हो चुकी है। कुछ रिपोर्ट्स में ये सामने आया है कि पर्यटकों ने मेथनॉल युक्त इंजेक्शन लिया था, जिसका इस्तेमाल कभी-कभी बार इथेनॉल (शराब) के सस्ते विकल्प के रूप में करते हैं। अब लाओस सरकार ने वांग विएंग में हुई विदेशी पर्यटकों की मौत पर दुख जताया है। मरने वालों में तीन महिलाएं और एक ब्रिटिश वकील शामिल हैं। अब तक दो डेनिश यात्रियों, 19 साल की दो ऑस्ट्रेलियाई महिलाओं और 28 साल की ब्रिटिश महिला सिमोन व्हाइट की मौत हो गई है। वे लाओस के वांग विएंग शहर में एक बार में गए थे। यह लोग करीब एक दर्जन विदेशियों के समूह में शामिल थे, जो बीमार पड़ गए और उन्हें 12 नवंबर के तुरंत बाद अस्पताल ले जाया गया। लाओस के विदेश मंत्रालय ने शनिवार को कहा कि वह मृतकों के परिवारों के प्रति गहरी संवेदना और सहानुभूति व्यक्त करता है। साथ ही यह भी बताया कि मामले की जांच जारी है। इस मामले में ताजा मौत 19 वर्षीय ऑस्ट्रेलियाई होली बाउल्स की शुक्रवार को हुई। उनका बैंकॉक अस्पताल में इलाज चल रहा था। इससे पहले ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बानीज ने 21 नवंबर को होली बाउल्स की दोस्त बियांका जोन्स की मौत की पुष्टि की थी। दोनों ऑस्ट्रेलियाई युवती 13 नवंबर की रात लाओस के वांग विएंग के एक हॉस्टल में अपने ग्रुप के साथ पार्टी कर रही थीं। वहां वे शराब पीने के बाद बीमार पड़ गईं। उन्हें इलाज के लिए थाईलैंड के एक अस्पताल ले जाया गया था।

आईपीएल 2025 की मेगा नीलामी में हुआ बदलाव

नई दिल्ली इंडियन प्रीमियर लीग के 18वें सीजन यानी आईपीएल 2025 का बिगुल बज चुका है. आईपीएल 2025 की मेगा नीलामी के शुरू होने में अब लगभग 24 घंटे का समय बचा है. इससे पहले मेगा ऑक्शन के शुरू होने के समय में बदलाव हुआ है. यहां जानें अब मेगा ऑक्शन कितने बजे शुरू होगी. आईपीएल 2025 की मेगा नीलामी 24 और 25 नवंबर को सऊदी अरब के जेद्दा में होनी है. भारतीय समय के अनुसार, अब मेगा ऑक्शन दोपहर साढ़े तीन बजे से शुरू होगी. पहले नीलामी के शुरू होने का समय दोपहर तीन बजे था. यानी अब ऑक्शन 30 मिनट के बाद शुरू होगी. मेगा ऑक्शन दो दिन चलेगी. दोनों ही दिन नीलामी दोपहर साढ़े तीन बजे से शुरू होगी और रात साढ़े 10 बजे तक चलेगी. आपकी जानकारी के लिए बता दें कि भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पर्थ में खेले जा रहे टेस्ट मैच की वजह से नीलामी के समय में बदलाव हुआ है. पहले माना जा रहा था कि टेस्ट मैच भारतीय समय के अनुसार 2.50 पर खत्म हो जाएगा, लेकिन पहले दिन (22 नवंबर) को ऐसा नहीं हुआ. ऐसे में अब नीलामी को 30 मिनट देरी से शुरू किया जाएगा. पहले जानकारी आई थी कि आईपीएल 2025 की नीलामी में कुल 574 खिलाड़ियों की बोली लगेगी. हालांकि, अब इसमें एक नया नाम जुड़ गया है. इंग्लैंड के स्टार तेज गेंदबाज जोफा आर्चर भी आईपीएल 2025 की नीलामी में शामिल हो गए हैं. इस मेगा ऑक्शन में 81 खिलाड़ियों की बेस प्राइस 2 करोड़ रुपये है, जबकि 27 खिलाड़ियों की बेस प्राइस 1.50 करोड़ रुपये है. वहीं, इस फेहरिस्त में 18 खिलाड़ी ऐसे हैं, जिनकी बेस प्राइस 1.25 करोड़ रुपये है. आईपीएल 2025 की मेगा नीलामी सऊदी अरब के समय के अनुसार दोपहर 1 बजे शुरू होगी. यानी भारत में आप मेगा ऑक्शन को दोपहर 3.30 बजे से देख सकेंगे.

यशस्वी और राहुल के दम पर भारत ने ली अब तक 218 रनों की बढ़त

पर्थ । भारत की दूसरी पारी में ओपनर्स यशस्वी जायसवाल और केएल राहुल ने ऐसा रंग जमाया कि लगा ही नहीं कि यह वही पिच है, जहां भारतीय टीम 150 रनों पर लुढ़क गई थी. दिन का जब खेल खत्म हुआ तो यशस्वी जायसवाल शतक (90 नॉट आउट) के करीब थे. वहीं केएल राहुल (62 नॉट आउट) भी रंग जमा चुके थे. भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच 5 मैचों की टेस्ट सीरीज का पहला मुकाबला 22 नवंबर से पर्थ में शुरू हुआ. मैच के दूसरे दिन आज (23 नवंबर) स्टम्प के समय भारतीय टीम का स्कोर 172/0 है. कुल बढ़त 218 रनों की हो चुकी है. भारत ने आज अपनी दूसरी पारी में शानदार खेल दिखाया. यशस्वी जायसवाल और केएल राहुल ने दूसरी पारी के दौरान 20 साल बाद एक अनोखा इतिहास भी अपने नाम किया. दरअसल, राहुल और यशस्वी ने ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट मैचों में शतकीय साझेदारी की. इससे पहले साल 2004 में आकाश चोपड़ा और वीरेंद्र सहवाग ने पहले विकेट के लिए 123 रनों की पार्टनरशिप की थी.

वहीं दूसरे दिन पिच का मिजाज बदला-बदला दिखा. दूसरे दिन के खेल में केवल सिर्फ 3 विकेट गिरे. जो सभी ऑस्ट्रेलिया के थे. पिच के बदलते मिजाज से पूर्व क्रिकेटर इरफान पठान भी हैरान दिखे. पिच के बदले हुए मिजाज पर तो इरफान पठान ने तंज भी कसा और एक्स पर एक पोस्ट शेयर किया. इरफान ने की पिच की फोटो शेयर करते हुए लिखा, इतनी जल्दी तो मेरी पत्नी का मूड भी चेंज नहीं होता जितनी जल्दी ये पिच बदली है. इससे पूर्व ऑस्ट्रेलिया की दूसरी पारी 104 रनों पर समाप्त हुई. जिससे भारत को 46 रनों की बढ़त मिल गई. कुल मिलाकर पर्थ का ऑप्टस स्टेडियम तेज गेंदबाजों के लिए पहले दो दिन स्वर्ग साबित हुआ, क्योंकि बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के पहले टेस्ट में यहां गिरे सभी 20 विकेट तेज गेंदबाजों को मिले. लेकिन जब भारतीय ओपनर्स ने दूसरे दिन बल्लेबाजी की तो ऐसा लगा ही नहीं कि पिच का मिजाज वही है, जो पहले दिन था.

पर्थ के ऑप्टस में भारतीय टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी चुनी. पहली पारी में नीतीश कुमार रेड्डी 41 रनों के साथ भारतीय टीम के सबसे बड़े स्कोरर रहे. ऑस्ट्रेलिया की ओर से पैट कमिंस, मिचेल स्टार्क और मिचेल मार्श ने दो-दो विकेट लिए. जबकि हेजलवुड को सर्वाधिक चार सफलताएं प्राप्त हुईं. ऑस्ट्रेलिया की तरफ से सभी 10 विकेट तेज गेंदबाजों ने निकाले. जवाब में ऑस्ट्रेलिया की टीम दूसरी पारी में 104 रनों पर ऑलआउट हो गई. इस तरह भारत की पहली पारी के आधार पर 46 रनों की बढ़त मिली बुमराह ने भारतीय टीम की ओर से सबसे ज्यादा 5 विकेट झटके. वहीं हर्षित राणा को 3 और मोहम्मद सिराज को 2 विकेट मिले. ऑस्ट्रेलिया की ओर से पहली पारी में हाइएस्ट स्कोरर मिचेल स्टार्क (26) रहे.

गावस्कर के नाम का गलत इस्तेमाल..,

भारत के महान बल्लेबाज ने झूठे ब्लॉग पर कानूनी कार्रवाई की धमकी दी

नई दिल्ली। पूर्व भारतीय क्रिकेटर सुनील गावस्कर ने पर्थ टेस्ट मैच के दौरान उनके नाम से झूठा लेख प्रकाशित करने वाली वेबसाइट के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की धमकी दी है। क्रिकेट सेशन नाम की एक वेबसाइट ने गावस्कर के नाम से एक कॉलम प्रकाशित किया, जिसका शीर्षक था नेतृत्व में एक नया युग: बुमराह की कप्तानी और कोहली की नेतृत्व टीम इंडिया को पुनर्जीवित करती है। गावस्कर ने शनिवार 23 नवंबर को बताया कि यह फर्जी है और उन्होंने ऐसा कुछ नहीं लिखा है।

गावस्कर ने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के पहले टेस्ट मैच के दूसरे दिन शनिवार को इंस्टाग्राम पर वेबसाइट की आलोचना की। महान बल्लेबाज ने लिखा, इंटरनेट पर आप जो कुछ भी देखते हैं उस पर कभी विश्वास न करें। पूर्व बल्लेबाज फिलहाल बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के लिए ब्रॉडकास्टर चैनल के साथ अनुबंधित हैं।

पर्थ टेस्ट मैच से पहले सुनील गावस्कर ने वकालत की थी कि अगर रोहित शर्मा शुरुआती टेस्ट में नहीं खेलते हैं तो जसप्रीत बुमराह को पूरे बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी 2024/25 के लिए भारत की कप्तानी करनी चाहिए। गावस्कर ने कहा था कि अगर रोहित पहले या दो टेस्ट मैचों में नहीं खेल पाते हैं तो टीम को पूरी सीरीज के लिए नया कप्तान नियुक्त कर देना चाहिए। गावस्कर ने कहा कि न्यूजीलैंड से हार के बाद टीम को एकजुट करने की आवश्यकता है।

बुमराह ऑस्ट्रेलिया में एक से ज्यादा बार फाइव विकेट हॉल लेने वाले गेंदबाज बने

नई दिल्ली। पर्थ टेस्ट मैच में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भारतीय टीम की कप्तानी कर रहे जसप्रीत बुमराह ने अपनी गेंदबाजी से मेजबान टीम की कमर तोड़ दी है। पहली पारी में बुमराह ने फाइव विकेट हॉल लिया और इसी के साथ वो इतिहास भी रच गए। बुमराह एक खास लिस्ट में भी शामिल हो गए हैं।

कपिल देव की लिस्ट में हुए शामिल

बुमराह ने पर्थ टेस्ट मैच की पहली पारी में ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज बल्लेबाजों को अपना शिकार बनाया। उन्होंने टीम के दोनों सलामी बल्लेबाज नाथन मैकस्वानी और उस्मान ख्वाजा को पवेलियन की राह दिखाई। स्टीव स्मिथ, पैट कमिंस को भी उन्होंने अपना शिकार बनाया। दूसरे दिन अपने पहले ओवर की पहली गेंद पर उन्होंने एलेक्स कैरी को आउट कर दिया।

कैरी का विकेट लेने के साथ ही बुमराह ने कपिल देव की खास लिस्ट में अपना नाम लिखवा लिया। बुमराह ऑस्ट्रेलिया में एक से ज्यादा बार फाइव विकेट हॉल लेने वाले गेंदबाज बन गए हैं। ये काम अभी तक सिर्फ कपिल देव और मोहम्मद शमी ने किया था। बुमराह भी अब इस लिस्ट में आ गए हैं। वहीं वह पर्थ में विकेट लेने वाले भारतीय कप्तानों की लिस्ट में भी आ गए हैं। उनसे पहले इस लिस्ट में बिशन सिंह बेदी, अनील कुंबले का नाम था।बुमराह पर्थ में पांच विकेट लेने वाले मेहमान टीम के दूसरे ही कप्तान हैं। उनसे पहले भी एक भारतीय ने ये काम किया था। अनिल कुंबले ने साल 2007 में पर्थ में बतौर भारतीय कप्तान फाइव विकेट हॉल लिया था।

भारत के लिए ये सीरीज काफी अहम है। इस सीरीज में टीम इंडिया का आईसीसी वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप का भविष्य दांव पर लगा है। लेकिन पर्थ टेस्ट मैच में भारत के नियमित कप्तान रोहित शर्मा नहीं हैं। वह अपने बेटे के जन्म के कारण भारत में ही हैं। ऐसे में बुमराह को टीम की कप्तानी करनी पड़ी। बुमराह ने इस जिम्मेदारी को अभी तक बखूबी निभाया है और आगे से टीम का नेतृत्व किया है।

गौतम अदानी और भतीजे सागर को अमेरिकी एसईसी ने किया तलब

नई दिल्ली। न्यूयॉर्क पूर्वी जिला अदालत के माध्यम से 21 नवंबर को भेजे गए नोटिस में कहा गया है, 'इस समन की तामील के 21 दिनों के भीतर (जिस दिन आपको यह समन मिला, उसे छोड़कर) आपको वादी (एसईसी) को संलग्न शिकायत का जवाब देना होगा या संघीय सिविल प्रक्रिया के नियम 12 के तहत एक प्रस्ताव तामील करना होगा।'

अडानी ग्रुप के संस्थापक एवं चेयरमैन गौतम अडानी और उनके भतीजे सागर को अमेरिकी प्रतिभूति और विनिमय आयोग ने उन पर लगे आरोपों पर अपना रुख स्पष्ट करने के लिए तलब किया है। अडानी और उनके भतीजे पर अनुकूल सौर ऊर्जा अनुबंध हासिल करने के लिए 26.5 करोड़ अमेरिकी डॉलर (2,200 करोड़ रुपये) की रिश्वत देने में शामिल होने का आरोप है। अडानी के अहमदाबाद स्थित शांतिवन फार्म हाउस और उनके भतीजे सागर के इसी शहर में बोदकदेव आवास पर समन भेजकर 21 दिनों के भीतर एसईसी को जवाब देने के लिए कहा गया है।

न्यूयॉर्क पूर्वी जिला अदालत के माध्यम से 21 नवंबर को भेजे गए नोटिस में कहा गया है, इस समन की तामील के 21 दिनों के भीतर (जिस दिन आपको यह समन मिला, उसे छोड़कर) आपको वादी (एसईसी) को संलग्न शिकायत का जवाब देना होगा या संघीय सिविल प्रक्रिया के नियम 12 के तहत एक प्रस्ताव तामील करना होगा। इसमें कहा गया है, यदि आप जवाब देने में विफल रहते हैं, तो शिकायत में मांगी गई राहत के लिए आपके खिलाफ निर्णय लिया जाएगा। आपको अपना जवाब या प्रस्ताव भी अदालत में दाखिल करना होगा।

गौतम अडानी और उनके भतीजे सागर सहित सात अन्य प्रतिवादी, जो समूह की नवीकरणीय ऊर्जा इकाई अडानी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड में निदेशक हैं, पर बुधवार को न्यूयॉर्क की एक अदालत में मुकदमा शुरू हुआ।

भारत की गिग फर्मे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए पूरी तरह से तैयार: वित्त मंत्री

बेंगलुरू। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने हाल ही में एक आयोजन में कहा कि क्रिक कॉमर्स जैसे भारतीय इनोवेशन समय के साथ अंतर्राष्ट्रीय तकनीकी व्यापार क्षेत्र में सबसे बड़े प्लेयर की कैटेगरी में शामिल हो सकते हैं। वित्त मंत्री ने कई क्षेत्रों में एक मजबूत भारत ब्रांड का आह्वान किया। उन्होंने पारंपरिक खुदरा व्यापार की चुनौतियों का भी जिक्र किया और कहा कि इन चुनौतियों से उभरने के लिए मदद की जरूरत है।

बेंगलुरू में इंडिया फाउंडेशन द्वारा आयोजित 8वें इंडिया आइडियाज कॉन्क्लेव में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि भारत की स्टार्ट-अप और गिग इकोनॉमी इकाइयां उस इनोवेशन का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिसकी भारत क्षमता रखता है। केंद्रीय मंत्री ने कहा देश को स्टार्टअप और गिग इकॉनमी यूनिट का लाभ उठाना चाहिए। ताकि आधुनिक शहरी जरूरतों के लिए इनोवेटिव सॉल्यूशन डेस्टिनेशन के रूप में ब्रांड इंडिया की स्थापना की जा सके।

वित्त मंत्री ने क्रिक कॉमर्स को भारत में तेजी से बढ़ता उपभोक्ता इंटरनेट सेक्टर बताया। उन्होंने कहा कि क्रिक कॉमर्स से जुड़ी कंपनियों ने माल की फास्ट डिलीवरी के लिए मजबूत बुनियादी ढांचे और लॉजिस्टिक्स नेटवर्क डेवलप किए हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भारत में भारत फूड एंड ड्रग्स एडमिनिस्ट्रेशन (एफडीए) होना चाहिए, जो यूएस-एफडीए के समान मानक निर्धारित कर सके और दवा निर्माण के निर्यात में तेजी लाने में मदद कर सके। उन्होंने कहा, यूएस एफडीए की तरह ही, हमें भी वैश्विक मानकों वाला भारत एफडीए होना चाहिए।

केंद्रीय मंत्री ने देश के पर्यटन को नया दृष्टिकोण देने की बात कही। उन्होंने कहा कि भारत के टॉप 100 टूरिस्ट सेंटर में उस साइट के आर्किटेक्चर के डिजिटल सेल्फ-लर्निंग प्रोग्राम चलाए जाने की जरूरत है। हमें उन लोगों को लर्निंग मटेरियल प्रदान करना चाहिए जो, भारतीय वास्तुकला को समझना चाहते हैं ताकि टूरिज्म के लिए एक नया दृष्टिकोण मिले।

वित्त मंत्री ने सर्कुलर इकॉनमी मॉडल पर जोर देते हुए कहा, भारत ने पहले सर्कुलर इकॉनमी मॉडल और पुनः उपयोग के सिद्धांत का पालन नहीं किया क्योंकि भारत एक गरीब देश था। सर्कुलर इकॉनमी एक ऐसा मॉडल है, जिसमें वेस्ट को कम कर उत्पादन और खपत को बढ़ावा देने के लिए प्राकृतिक संसाधनों के सस्टेनेबल इस्तेमाल पर जोर दिया जाता है। हमें लालच से परे अपनी जरूरत के हिसाब से इस्तेमाल करना अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए।

चाइना मास्टर्स के सेमीफाइनल में पहुंची सात्विक-चिराग की जोड़ी

शेनझेन । भारत के सात्विकसाईराज रैंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की जोड़ी ने शुक्रवार को डेनमार्क के किम एस्ट्रुप और एंडर्स स्कार्प रासमुसेन की दूसरी वरीय जोड़ी को हराकर चाइना मास्टर्स सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। हालांकि पुरुष एकल में लक्ष्य सेन को तीसरी वरीयता के डेनमार्क के खिलाड़ी एंड्रियस एंटोसेन के खिलाफ 53 मिनट चले मैच में 18-21, 15-21 से शिकस्त मिली।

लक्ष्य सेन को मिली हार

पेरिस ओलंपिक के बाद अपना पहला टूर्नामेंट खेल रहे सात्विक और चिराग ने 47 मिनट में दुनिया की दूसरे नंबर की जोड़ी पर 21-16 21-19 से जीत दर्ज की। भारतीय जोड़ी पिछले चरण के फाइनल में पहुंची थी। एशियाई खेलों की स्वर्ण पदक विजेता जोड़ी का सामना अंतिम चार में आठवीं वरीयता प्राप्त जापानी ताकुरो होकी और युगो कोबायाशी की जोड़ी तथा कोरिया के जिन योंग और सियो सेउंग जेई की जोड़ी के बीच मुकाबले के विजेता से होगा।

प्रथम पेज का शेष.....

0 महाराष्ट्र में महायुति प्रचंड बहुमत के साथ वापस....

उन्होंने इसके लिये %लाडली बहनों, लाडले किसानों% और हर वर्ग के मतदाताओं का आभार व्यक्त किया। श्री शिंदे ने इसे महायुति सरकार के ढाई साल के काम का सफल बताया।

शिवसेना (उद्धव बालासाहब ठाकरे) के प्रवक्ता संजय राउत ने %चुनाव परिणाम में कुछ गडबड़ जरूर है।% विधानसभा में स्पष्ट बहुमत के लिये 145 सीटों की जरूरत होगी।

उपमुख्यमंत्री और भाजपा के नेता ने चुनाव में महायुति की जीत का श्रेय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को देते हुये कहा, ÷हम महाराष्ट्र के हर नागरिक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।÷

राकांपा नेता अजीत पवार ने कहा कि %लाडकी बहीण योजना% ने बाजी पलट दी है। मैंने अपनी याद में ऐसी जीत नहीं देखी।

महाराष्ट्र में अक्टूबर 2019 के विधानसभा चुनाव में भाजपा और संयुक्त शिवसेना मिलकर चुनाव लड़े थे और उन्हें क्रमशः 105 और 56 सीटों पर जीत मिली थी जबकि रांकापा को 54 और कांग्रेस को 44 सीट प्राप्त हुयी थी, लेकिन मुख्यमंत्री पद को लेकर शिवसेना के नेता उद्धव ठाकरे ने कांग्रेस रांकापा का दामन पकड़ लिया था।

इसी साल अप्रैल-मई में हुये चुनाव में महाराष्ट्र में 48 लोक सभा सीटों में भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन को 17 सीटों पर और कांग्रेस के नेतृत्व वाले इंडिया समूह को 30 सीटों पर जीत हासिल हुयी थी। एक सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार ने जीत हासिल की थी।

राज्य में विधानसभा चुनाव के साथ नांदेड़ लोक सभा सीट का उपचुनाव भी कराया गया है। इस सीट पर भाजपा के उम्मीदवार डॉ संतुकराव मारोतराव हम्बारडे, कांग्रेस पार्टी के रवीन्द्र बसन्तराव चव्हाण से 43,800 मतों से आगे चल रहे थे।

महाराष्ट्र में भाजपा को करीब 26.72 प्रतिशत, शिवसेना 12.38, कांग्रेस को 12.24 प्रतिशत, राकांपा (शरद पवार) को 11.30 प्रतिशत, राकांपा (अजीत पवार) को 9.08 प्रतिशत, शिवसेना (यूबीटी) 10.04 प्रतिशत मत मिले हैं। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना को 1.56 प्रतिशत मिला है।

झारखंड की 81 सदस्यीय विधानसभा की चुनाव में झामुमो के नेतृत्व वाले इंडिया समूह को कुल 56 सीटों पर जीत दर्ज हुई है। जबकि सत्ता हासिल करने की होड में लगे भाजपा के नेतृत्व में राजग केवल 24 सीटों पर संतोष करना पड़ा है। झामुमो के नेता और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा, ÷जीत पर खुशी जताते हुए कहा कि हम लोकतंत्र के चुनाव में पास हो गये हैं।÷

झामुमो ने 34 सीटों पर विजय हासिल की है। जबकि भाजपा ने 21 सीटें जीती हैं। कांग्रेस पार्टी ने तीसरे स्थान पर रहते हुए 16 सीट हासिल की है। राष्ट्रीय जनता दल ने चार सीटों पर जीत हासिल की है। भाकपा (माले) ने दो सीटों पर विजय हासिल की है। आजसू, लोजपा, झालोकमो और जनता दल यूनाइटेड ने एक-एक सीट पर जीत हासिल की है।

उत्तर-पूर्वी झारखंड में भाजपा को और मध्य तथा दक्षिण इलाकों में कांग्रेस और झामुमो को बड़ी जीत मिली है। राज्य में भाजपा को 33.20 प्रतिशत, झामुमो को 23.46 प्रतिशत, कांग्रेस को 15.50 प्रतिशत मत हासिल हुए।

0 प्रचंड जीत पर पीएम मोदी बोले ...

नाव को भी डुबो देती है। यूपी जैसे बड़े राज्यों में कांग्रेस के साथियों ने अपनी जान छुड़ा ली, नहीं तो वहां भी कांग्रेस के सहयोगियों को भुगतना पड़ता।

कांग्रेस हमेशा से ही तुष्टीकरण के लिए कानून बनाने का काम किया। उसने सुप्रीम कोर्ट के ऑर्डर तक की परवाह नहीं की है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है वक्फ बोर्ड। 2014 में सरकार जाते-जाते दिल्ली की कई संपत्ति वक्फ बोर्ड के हाथ पर सौंप दी। बाबा साहब अंबेडकर के संविधान में वक्फ कानून के लिए कोई जगह नहीं है। लेकिन कांग्रेस ने वक्फ बोर्ड को व्यवस्था पैदा की।

पीएम मोदी के नेतृत्व में जनादेश मिला- जेपी नड्डा

संबोधन के दौरान भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्?डा ने कहा कि पीएम मोदी हाल ही में अपने 5 दिन के दौरे में नाइजारिया, ब्राजील और गयाना का दौरा किया। उन्होंने पूरी दुनिया में अपनी छाप छोड़ी है। हाल ही में पीएम मोदी को नाइजारिया और ब्राजील में सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित किया गया है।

महाराष्ट्र में 2019 में भी पीएम मोदी के नेतृत्व में जनादेश मिला था। लेकिन उस समय उद्धव ठाकरे ने सत्ता के मोह के लिए जनता को धोखा दिया था। इस बार जनता ने उन्हें धता बता दिया है। राज्य की 288 विधानसभा सीटों में से महायुति को 200 से भी अधिक सीटें मिलते दिखाई पड़ रही है। वहीं, विपक्षी महा विकास अघाड़ी के खाते में 50 से भी कम सीटें जाती दिख रही है।

भाजपा के खाते में 100 से अधिक सीटें

20 नवंबर को हुए चुनावों में 66.05 प्रतिशत मतदान हुआ, जो 2019 में 61.1 प्रतिशत था। सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन में, भाजपा ने 149 विधानसभा सीटों, शिवसेना ने 81 सीटों और अजित पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी ने 59 निर्वाचन क्षेत्रों में उम्मीदवार उतारे थे।

0 बंगाल उपचुनाव में नहीं दिखा आरजी कर...

नोटा से भी कम वोट मिलेगा। मदारीहाट सीट पर एक बार फिर वामपंथी दल आरएसपी और कांग्रेस की स्थिति एक जैसी रही। मदारीहाट में नोटा को 2,856 वोट मिले, वहीं आरएसपी और कांग्रेस को क्रमशः 3,412 और 3,023 वोट मिले। सिताई में फॉरवर्ड ब्लॉक को 3,319 और नोटा को 1,317 वोट मिले।

नोटा से पीछे चल रही थी कांग्रेस

मेदिनीपुर में छठे और सातवें राउंड की गिनती में कांग्रेस नोटा से पीछे रह गई। मेदिनीपुर में नोटा के पक्ष में 2,624 और कांग्रेस को 3,959 वोट मिले। अंत में कांग्रेस डेढ़ हजार से ज्यादा वोटों से नोटा से पीछे रह गई। तालडांगरा में कांग्रेस प्रत्याशी ने स्पष्ट रूप से नोटा से ही लड़ाई लड़ी। कभी नोटा से पिछड़ जाते तो कभी नोटा को पीछे छोड़कर आगे बढ़ जाते। बंगाल कांग्रेस प्रवक्ता सुमन राय चौधरी ने कांग्रेस की संगठनात्मक कमजोरी को स्वीकार किया। हालांकि, पार्टी की हार के लिए तृणमूल और भाजपा को भी जिम्मेदार ठहराया।

100 अरब डॉलर का आएगा निवेश, 99.6 प्रतिशत बढ़ेगा निर्यात

नई दिल्ली, 23 नवंबर। सरकार ने शनिवार को कहा कि व्यापार और आर्थिक भागीदारी समझौते (टीईपीए) में यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ (ईएफटीए) देशों में बाजार पहुंच के साथ भारतीय निर्यात में 99.6 प्रतिशत की वृद्धि करने और 100 अरब डॉलर का निवेश बढ़ाने की क्षमता है।

शुक्रवार को वाणिज्य विभाग के सचिव सुनील बर्थवाल के नेतृत्व में नॉर्वे की यात्रा के दौरान यह बात कही गई।

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के अनुसार, वाणिज्य सचिव ने नॉर्वे के उद्योग के लिए कई बड़े अवसरों पर प्रकाश डाला, क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था अगले तीन-चार वर्षों में दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रही है।

बर्थवाल ने नॉर्वे के व्यापार, उद्योग और मत्स्य पालन मंत्रालय के राज्य सचिव टॉमस नोरवेल से मुलाकात की। उन्होंने व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने, भारतीय पेशेवरों के लिए गतिशीलता, मौजूदा संस्थागत मेकैनिज्म को फिर से सक्रिय करने और टीईपीए के लिए अगले कदमों पर चर्चा की। वाणिज्य सचिव ने व्यापार और उद्योग मंत्री महामहिम सेसिली मायर्सेथ और स्वास्थ्य और देखभाल सेवा मंत्री महामहिम जान क्रिश्चियन वेस्ट्रे से भी मुलाकात की। इस यात्रा में नॉर्वेजियन चैंबर ऑफ कॉमर्स (एनएचओ), इनोवेशन नॉर्वे, शिपबिल्डर्स एसोसिएशन, रेडर बिंग लॉ फर्म और कई बड़ी नॉर्वेजियन कंपनियों के नेताओं और सीईओ सहित व्यापार हितधारकों के साथ चर्चा भी शामिल थी। ये फर्म अलग-अलग क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती हैं, विशेष रूप से, रिन्यूएबल एनर्जी, शिपिंग इंडस्ट्री, उपभोक्ता सामान, ग्रीन हाइड्रोजन, कपड़ा, समुद्री भोजन, खनन, सूचना प्रौद्योगिकी और आपसी हित के अन्य क्षेत्र। भारत ने चार विकसित देशों - स्विट्जरलैंड, आइसलैंड, नॉर्वे और लिकटेंस्टीन के साथ टीईपीए पर हस्ताक्षर किए - जो यूरोप में एक महत्वपूर्ण आर्थिक ब्लॉक है।

सरकार के अनुसार, यह समझौता मेक इन इंडिया को बढ़ावा देगा और युवा और प्रतिभाशाली वर्कफोर्स को अवसर प्रदान करेगा। ईएफटीए अपनी टैरिफ लाइनों का 92.2 प्रतिशत प्रदान कर रहा है, जो भारत के 99.6 प्रतिशत निर्यात को कवर करता है।

महाकुंभ विश्व का सबसे बड़ा आध्यात्मिक मेला है - स्वामी आनंद चैतन्य

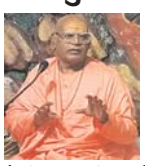

राजनांदगांव (दावा)। विश्व में भारत की पहचान संस्कृत और यहां की संस्कृति से है दीपावली का त्यौहार हमारी संस्कृति का एक हिस्सा है। भारत की गंगा जमुना सरस्वती एवं अनेक नदियां हमारी संस्कृति की पहचान है। जहां बारहों महीने हिंदू धर्म के उपासक डुबकी लगाने के लिए लालायित रहते हैं। पुराणों एवं धार्मिक ग्रंथो के अनुसार समुद्र मंथन के दौरान अमृत कलश निकलने पर देव और दानव में उसे प्राप्त करने के लिए होड़ लगी, आपस की छीना झपटी से अमृत कलश से कुछ बंदे प्रयागराज के त्रिवेणी संगम में गिरी उसी के साथ हरिद्वार उज्जैन और नासिक में भी गंगा क्षिप्रा एवं नर्मदा नदी में छलकी जिससे वहां अमृत बुंदे गिरी और तब से इन चारों तीर्थ स्थलों में प्रत्येक 12 वर्ष में महाकुंभ का महापर्व धूमधाम से मनाया जा रहा है।

भारत का यह महाकुंभ विश्व का सबसे बड़ा आध्यात्मिक मेला है।जिसमें पूरे विश्व से करोड़ों सनातन धर्मावलंबी सम्मिलित होते हैं। आगामी वर्ष 2025 में प्रयागराज तीर्थ में यह आध्यात्मिक मेला महाकुंभ का आयोजन संपन्न होने जा रहा है जिसमें लगभग 40 करोड़ सनातनीयो के पहुंचने का अनुमान लगाया गया है। महाकुंभ में हिंदू संस्कृति का आध्यात्मिक दर्शन होता है, सैकड़ो-हजारों पंडालों में प्रतिदिन श्री मद भागवत कथा, श्रीराम कथा, श्री शिव महापुराण कथा के साथ ही धार्मिक प्रवचन, यज्ञ, अनुष्ठान हुआ करते है, जगह -जगह भंडारे आयोजित होते है, तीर्थयात्री महाकुंभ के दौरान तीर्थ क्षेत्र में त्रिवेणी संगम में स्नान कर पुण्य फल प्राप्त करते हैं, ऐसे महाकुंभ में हजारों संत, महात्मा, अमलातमाओ का आगमन होता है जो वर्षों से गिरि कंदराओं में तपस्या करते हुए साधना में लीन रहते हैं एवं केवल कंद मूल फल खाकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। ऐसे संत, नागा संत, साधु महात्माओं का आगमन महाकुंभ में हुआ करता है, जिनके दर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त कर तीर्थयात्री अपने जीवन को कृतार्थ करते हैं। उक्त उदगार आज यहां श्री सत्यनारायण धर्मशाला में गुरुदेव भक्त मंडल द्वारा आयोजित प्रयागराज महाकुंभ निमित्त आयोजित दीपावली मिलन एवं सत्संग समारोह के दौरान हरिद्वार के सुप्रसिद्ध आनंद कृष्ण धाम के परमाध्यक्ष श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर स्वामी आनंद चैतन्य सरस्वती जी ने सैकड़ो भक्तों की उपस्थिति में व्यक्त किया।

गुरुदेव भक्त मंडल के अशोक लोहिया, गजानन शर्मा, लक्ष्मण लोहिया बाबूलाल अग्रवाल एवं कल्याण साहू द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार पूज्य महामंडलेश्वर स्वामी आनंद चैतन्य सरस्वती जी का आगमन प्रयागराज में आयोजित आगामी महाकुंभ के अवसर पर होने वाले शाही स्नान एवं समष्टि भंडारा में आधिकारिक भक्तों की उपस्थिति के लिए निमंत्रण देने हुआ है। श्री सत्यनारायण धर्मशाला में आयोजित सत्संग के दौरान पूज्य स्वामी जी ने कहा कि मकर संक्रांति 14 जनवरी, मौनी अमावस्या 29 जनवरी एवं बसंत पंचमी 3 फरवरी को प्रयागराज महाकुंभ में शाही स्नान होगा। इसके अलावा अन्य अनेक पर्वों पर भी महत्वपूर्ण स्नान होंगे। साथ ही 22 जनवरी को विशाल समष्टि भंडारा का बहुत बड़ा आयोजन महाकुंभ के दौरान आयोजित है, इस समष्टि भंडारा में हजारों की संख्या में संत, महात्मा, महंत, महामंडलेश्वर इत्यादि प्रसादी प्राप्त करेंगे, प्रसादी पश्चात सभी को उनके पद अनुसार भेंट दक्षिणा प्रदान की जाएगी। 22 जनवरी को आयोजित समिष्ठी भंडारा में लगभग 7000 से अधिक संत महात्माओं के प्रसादी प्राप्त करने का अनुमान है। समष्टि भंडारा में शामिल होने वाले सभी साधु, संत, महात्मा, महंत, महामंडलेश्वर को पंगत में बैठाकर प्रसादी परोसी जाती है अतः अधिकाधिक शिष्य, भक्त ऐसे सुअवसर पर उपस्थित होकर प्रसादी वितरण व्यवस्था में सहयोग कर एवं दक्षिणा भेंट कर संत महात्मा महंत महामंडलेश्वर का आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं। पूज्य गुरुदेव भगवान के इस सारगर्भित उद्बोधन के पश्चात संस्कारधानी नगरी के 20 से अधिक भक्तों ने प्रयागराज महाकुंभ में शामिल होकर समष्टि भंडारा में शामिल होने की घोषणा की। कार्यक्रम का संचालन लक्ष्मण लोहिया ने किया।

दपूमं रेलवे अब सभी पैसेंजर स्पेशल ट्रेन का परिचालन नियमित नंबर के साथ करेगा

राजनांदगांव (दावा)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के अंतर्गत (0) नंबर से परिचालित सभी मेमू / पैसेंजर स्पेशल ट्रेन के रूप में संचालित नहीं होंगी। अब रेल प्रशासन द्वारा इन सभी रेल गाडियों के नंबरों को सामान्य बनाते हुए 01.01.2025 से नियमित किया जा रह है।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे नागपुर मंडल के तहत वर्तमान में नेताजी सुभाषचंद्र बोस इतवारी. छिंदवाडा, नेताजी सुभाषचंद्र बोस इतवारी-रायपुर, छिंदवाडा-नैनपुर, नेताजी सुभाषचंद्र बोस इतवारी-तिरोडी, तुमसररोड-तिरोडी, नैनपुर-मंडलाफोर्ट, गोंदिया-तिरोडी, गोंदिया-कटंगी, डोंगरगढ़-रायपुर, गोंदिया-दुर्ग, नेताजी सुभाषचंद्र बोस इतवारी-गोंदिया, नेताजी सुभाषचंद्र बोस इतवारी. रामटेक गोंदिया-बल्हारशाह, गोंदिया-गढ़ा, बालाघाट-नैनपुर, गोंदिया-वडसा-चंद्रपुर तथा नागपुर-रामटेक रेल खंडों पर संचालित लगभग सभी 72 स्पेशल मेमू ''पैसेंजर ट्रेनों को अब अपने नियमित नंबर के साथ 1 जनवरी'' 2025 से चलाई जाएगी।

रेल प्रशासन दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे नागपुर मंडल द्वारा पूर्व में उपरोक्त रेल खण्डों पर परिचालित स्पेशल मेमू / पैसेंजर ट्रेनों को स्पेशल ट्रेन के तौर पर यानि जीरो नंबर से चलाने का निर्णय लिया गया था, अब इन सभी मेमू / पैसेंजर स्पेशल ट्रेन को नियमित ट्रेन नंबर से चलाने का निर्णय लिया गया है। यह निर्णय यात्री सुविधा और नियमित नंबर के साथ संचालन से यात्री अपनी यात्रा को और भी किफायती एवं सुविधाजनक महसूस करेंगे।

एनबीआईएस के बच्चों ने कराया दंत परीक्षण

राजनांदगांव (दावा)। नीरज बाजपेयी इंटरनेशनल स्कूल, बोरी में शाला द्वारा बच्चों के स्वास्थ्य निरीक्षण हेतु मेगा डेंटल चेकअप कैंप का आयोजन किया गया। इस डेंटल चेकअप में आर्थोडेंटिस्ट व डेंटोफेशियल आर्थोपेडिक डाक्टर रुद्रप्रताप सिंह ठाकुर (बीडीएस, एमडीएस) एवं डेंटल व कॉस्मेटिक सर्जन डॉक्टर नीतू सिंह ठाकुर (बीडीएस) ने अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं शाला परिवार को दिए। कक्षा नर्सरी से कक्षा पांचवी तक के सभी बच्चों का दंत परीक्षण किया गया। डॉक्टर ठाकुर द्वारा बच्चों को दांतों की सफाई, दांतों की बीमारी की जानकारी बड़े ही आत्मीय रुप से दिये। बच्चों के दंत परीक्षण के साथ उन्हें ओरल हेल्थ स्क्रीनिंग कार्ड भी दिया गया, जिसमें दंत संबंधी संपूर्ण जानकारी उपलब्ध थी।

बच्चों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए शाला द्वारा समय समय पर शारीरिक गतिविधि के साथ चिकित्सीय परामर्श की व्यवस्था की जाती है। शाला के डायरेक्टर नीरज बाजपेयी द्वारा डॉक्टर दंपत्ति का आभार व्यक्त किया गया जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय शाला को दिए।

भूतपूर्व छात्राओं ने परीक्षा में अधिक अंक अर्जित करने के दिये टिप्स

डोंगरगढ़(दावा)। स्थानीय शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोंगरगढ़ के अर्थशास्त्र विभाग में भूतपूर्व छात्रों की बैठक आयोजित की गई। इस बैठक के आरंभ में विद्या की आराध्य देवी मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया।

सर्वप्रथम अर्थशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. आर.आर. कोचे द्वारा भूतपूर्व छात्र-छात्राओं को बैठक के उद्देश्यों एवं क्रियाकलापों को रेखांकित करते हुए बताया कि चूंकि भूतपूर्व विद्यार्थी महाविद्यालय तथा विभाग की समस्त शैक्षणिक, गैर शैक्षणिक, अकादमिक तथा अन्य गतिविधियों से यथोचित परिचित तथा अनुभवशील होते है तथा विभाग की समस्याओं से रूबरू होते है। इसलिए इन विद्यार्थियों के सुझाव काफी महत्वपूर्ण होते है।

वर्तमान अकादमिक सत्र में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को अधिक अंक अर्जित करने भूतपूर्व छात्रों द्वारा अपने सुझाव एवं टिप्स दिये गये। इन भूतपूर्व छात्रों द्वारा प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के अतिरिक्त सेट-नेट परीक्षा की आवश्यक सामाग्री उपलब्ध कराने के सुझाव प्रस्तुत किये साथ ही महाविद्यालय का पुस्तकालय नवीन भवन से संचालित होने की समस्या को भी भूतपूर्व छात्रों ने प्रकाश में लाया। कार्यक्रम में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. श्रीमती ई.व्ही. रेवती ने सभी भूतपूर्व विद्यार्थियों को उनके उज्जवल भविष्य की कामना की तथा निरंतर महाविद्यालय को सहयोग एवं संपर्क बनाये रखने निर्देशित किया। कार्यक्रम के अंत में अर्थशास्त्र विभाग की सहायक प्राध्यापक मनीषा भेड़िया ने सभी छात्रों तथा कार्यक्रम के अन्य सहभागियों को सादर धन्यवाद ज्ञापित किया।

आपरेशन मुस्कान : पुलिस ने 50 गुम बालक-बालिकाओं को किया बरामद

राजनांदगांव (दावा)। पुलिस द्वारा अविभाजित चारों जिलों में आपरेशन मुस्कान चलाकर 50 गुम बालक/बालिकाओं को बरामद किया गया और उन्हें उनके पालकों/परिजनों को सौंप जाने से उनके चेहरे में मुस्कान देखी गई।

गुम बालक/ बालिकाओं को उनके परिजनों के किया हवाले

बता दें कि पुलिस महानिरीक्षक राजनांदगांव रेंज दीपक झा (भापुसे) द्वारा राजनांदगांव रेंज के सभी जिलो के पुलिस अधीक्षकों को गुम बालक/बालिकाओं की बरामदगी हेतु निदेश दिया गया था, जिसके परिपालन में पुलिस अधीक्षक राजनांदगांव, कबीरधाम, मोहला-मानपुर-अंबागढ़चौकी एवं खैरागढ़-छुईखदान-गण्डई के मार्गदर्शन में एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गीता वाधवानी के पर्यवेक्षण में चारो जिला में एक साथ विशेष टीम बनाकर 1 नवंबर से 20 नवंबर तक विशेष अभियान 'ऑपरेशन मुस्कान' के तहत गुम बालक/बालिकाओं की पतासाजी कर विभिन्न शहरों जिसमें मुम्बई, पूणे, नागपुर, माल्दा, श्रीनगर, हैदराबाद, अहमदनगर, तेलंगाना एवं अन्य शहरों से गुम बालक/बालिकाओं को बरामद किया गया। उक्त ऑपरेशन में जिला राजनांदगांव से 26, जिला कबीरधाम से 07 जिला मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी से 02 एवं खैरागढ़-छुईखदान-गण्डई से 15 गुम बालक/बालिका इस प्रकार 20 दिवस में कुल 50 गुम बालक/बालिकाओं को बरामद कर उनके परिजनों को सुपुर्द किया गया, जिनके बरामदगी पश्चात उनके परिजनों के उदास चेहरों में मुस्कान लौटी है।

स्वास्थ्य शिविर में बताए गए नियमित व्यायाम, योग, पैदल चलने के फायदे

डोंगरगढ़(दावा)। विकासखंड के अंतर्गत आने वाले ग्राम माटेकटा में स्वास्थ्य स्वच्छता समिति के द्वारा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इसमें छोटे-छोटे उपाय से एनीमिया मुक्ति में बड़ा सहयोग हो इस विषय पर किशोरी बालिकाओं से चर्चा की गई।

नियमित व्यायाम, योग, पैदल चलना, भरपूर निद्रा, स्वस्थ मनोरंजन, मौसमी फल, साग सब्जी, नियमित स्वाध्याय, सामूहिक अध्ययन व विकृत मानसिकता से दूर रहने का उपाय बताया गया। कुपोषण से सुपोषण की ओर आगे बढ़ाने के लिए तिरंगा तिरंगा युक्त भोजन करने का सुझाव दिया गया।

कलेक्टर संजय अग्रवाल के मार्गदर्शन, सीएमएचओ डॉ. नेतराम नवरत्न के दिशा निर्देश में शिविर लगाया गया। डीपीएम संदीप ताम्रकार के सुझाव से स्वास्थ्य शिविर में शरीर की सुरक्षा प्रणाली को मजबूत करने का सलाह दिया गया। इस अवसर पर ग्राम स्वास्थ्य स्वच्छता समिति के सदस्यों जिसमें तीजन बाई, बिझ, भोली बाई, चित्रलेखा, सुनीति, मेहतरीन, सरोज, रामबाई, उदासा व मितानिन डीनेश पटेल, तीजन बाई, राधाबाई आदि ने सहयोग किया। खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. बीपी एक्का, बीपीएम के द्वारा निर्देशित स्वास्थ्य कर्मचारी व अधिकारी टामिन पाटिल, मोतियाबिंद के 3 मरीज मिले। जिला नोडल मितानिन कार्यक्रम अनिल श्रीवास्तव ने बताया कि 104 हितग्राहियों का पंजीयन हुआ, जिसमें सर्दी बुखार के 12, पेट दर्द के एक, त्वचा रोग से संबंधित 4, मोतियाबिंद के 3, मलेरिया की स्लाइड 45 एवं कुष्ठ जांच 45, बीपी-शुगर के 71, हीमोग्लोबिन 14, टीवी के 2 संभावित मरीज मिले। भूपेंद्र, बीसी आशा कनौज, दुर्गा इनावती के द्वारा स्वास्थ्य कैंप में आए मरीजों की जांच की गई।

दिग्विजय में 'अल्गेब्रिक टोपोलॉजी एंड एप्लीकेशन्स' पर अतिथि व्याख्यान

राजनांदगांव (दावा)। शास.दिग्विजय महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. के.एल. दमले के निर्देशन में एवं गणित विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. शबनम खान के मार्गदर्शन में गणित विभाग द्वारा 'अल्गेब्रिक टोपोलॉजी एंड एप्लीकेशन्स' पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में डॉ.विनोद कुमार पाठक, प्राचार्य, शास. महाविद्यालय, धमतरी उपस्थित हुये।

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए डॉ. हेमंत कुमार साव ने डॉ.विनोद कुमार पाठक से विद्यार्थियों का परिचय करवाया तथा इसके पश्चात् ने डॉ.के.के.देवांगन ने अपने उद्बोधन में कहा कि विद्यार्थियों के ज्ञानार्जन तथा समुचित विकास हेतु समय-समय पर इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

व्याख्यान की शुरुआत करते हुए डॉ. विनोद कुमार पाठक ने गणित के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को 'अल्गेब्रिक टोपोलॉजी एंड एप्लीकेशन्स' पर अपना व्याख्यान दिया तथा अपने व्याख्यान में डॉ. विनोद कुमार पाठक ने विद्यार्थियों को रेलवे, पी.एस.सी., एस.एस.सी., बैंकिंग, पोस्ट ऑफिस एवं विभिन्न परीक्षार्थियों की तैयारी किस प्रकार की जाये इसकी जानकारी प्रदान की। साथ ही विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं को शांत किया।

मंच संचालन डॉ. हेमंत कुमार साव और आभार ज्ञापन डॉ.कविता साकुरे द्वारा किया गया। इस व्याख्यान रवि साहू, एम.एस.सी.पूर्व एवं अंतिम गणित के समस्त विद्यार्थी उपस्थित थे।

वन रक्षकों की भर्ती हेतु 42 हजार अभ्यर्थी देंगे परीक्षा कल

राजनांदगांव (दावा)। वन विभाग द्वारा वन रक्षकों की भर्ती के लिए राजनांदगांव और खैरागढ़ वन मंडल के तहत तीन जिलों में 107 पदों पर भर्ती प्रक्रिया संपन्न की जानी है, इसके लिए शहर के मोतीपुर खेल मैदान को तैयार किया जा रहा है, यहां चार पालियों में 25 नवंबर से 14 दिसंबर तक भर्ती प्रक्रिया की जाएगी।

खैरागढ़ और राजनांदगांव वन मंडल में 107 वन रक्षकों की भर्ती के लिए 42 हजार 6 सौ 66 अभ्यर्थी हिस्सा लेंगे, इसके लिए वन विभाग द्वारा ग्राऊंड तैयार किया जा रहा है। ग्राउंड में चार इवेंट पर परीक्षा आयोजित की जाएगी, जिसके लिए तैयारी अंतिम दौर की ओर है। वन विभाग के एसडीओ एवं भर्ती प्रक्रिया के नोडल अधिकारी योगेश साहू ने बताया कि भर्ती प्रक्रिया 4 पाली में सुबह 6 से 8, 8 से 10, 10 से 12 और दोपहर 12 से 2 बजे तक आयोजित होगी, जिसमें दो वनमंडल के लिए अभ्यर्थियों की परीक्षा होगी।

खैरागढ़-छुईखदान-गंडई, राजनांदगांव और मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले में वनरक्षकों की भर्ती की जानी है। इसके लिए वन विभाग द्वारा राजनांदगांव जिला मुख्यालय में भर्ती परीक्षा आयोजित की जा रही है।

वन मंडलाधिकारी आयुष जैन ने बताया कि वन विभाग द्वारा राजनांदगांव में 25 नवंबर से 14 दिसंबर तक भर्ती प्रक्रिया की जाएगी, जिसमें लगभग 40 हजार प्रतिभागी शामिल होंगे, जिसको लेकर तैयारी की जा रही है। भर्ती प्रक्रिया के लिए वन विभाग द्वारा शिक्षा विभाग के सहयोग से पीटी शिक्षक शैलेन्द्र तिवारी द्वारा मैदान तैयार किया जा रहा है। वनरक्षक भर्ती प्रक्रिया के लिए अभ्यर्थियों को चार मापदंड से गुजरना होगा, इसमें 500 मीटर दौड़, 200 मीटर दौड़, लंबी कूद और गोला फेंक शामिल है। इसके लिए मैदान में 200 मीटर दौड़ का ट्रैक, 4 जम्पपीट और 4 गोला फेंक के मैदान तैयार किए गए हैं।

अपने विभागों के अंतर्गत कराए जा रहे कार्यो का सतत मूल्यांकन करें - कलेक्टर

मोहला (दावा)। कलेक्टर श्रीमती तुलिका प्रजापति ने जिला कार्यालय के सभाकक्ष में सर्व निर्माण एजेंसियों की बैठक लेकर जिले में चल रहे विकास कार्यों, निर्माण कार्यों के अद्यतन स्थिति की गहन समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों की मैराथन बैठक लेकर एक-एक एजेंसियों के द्वारा कराये जा रहे निर्माण कार्यों की बारीकी से समीक्षा करते हुए कहा कि निर्माण कार्यो को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए पूर्ण गुणवत्ता के साथ समय सीमा में पूर्ण कराना सुनिश्चित करें। बैठक में कलेक्टर ने लोक निर्माण विभाग, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा, प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क, मुख्यमंत्री ग्रामीण सड़क, नेशनल हाईवे, छत्तीसगढ़ मेडिकल सर्विस कारपोरेशन, शिक्षा विभाग, महिला बाल विकास विभाग, जनपद पंचायत, हाउसिंग बोर्ड, जल संसाधन, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, जल संसाधन विभाग, सेतु विभाग के निर्माण कार्यो की विभागवार समीक्षा की।

- स्वीकृत विकास कार्यों में प्रगति लाने गंभीरता का परिचय देवें
- निर्माण कार्यों में गुणवत्ता, समय सीमा का विशेष ध्यान रखने के निर्देश
- गुणवत्ताहीन निर्माण कार्यों के लिए जवाबदारी तय की जाएगी

कलेक्टर ने बैठक में स्पष्ट रूप से निर्देशित करते हुए कहा कि जिला मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी नवीन जिला है। जिला को विकास की पंक्ति में खड़ा करने के लिए अनेकों विकास कार्यों की स्वीकृति दी गई है। विकास कार्यों का समय सीमा में पूर्ण होने से जिले की एक अलग तस्वीर बनेगी। कलेक्टर ने अधिकारियों को हिदायत देते हुए कहा कि संबंधित अधिकारी अपने विभागों के अंतर्गत कराए जा रहे कार्यो का सतत मूल्यांकन करें। उन्होंने कहा कि संबंधित निर्माण एजेंसी पर नजर रखें और निर्माण कार्यों की प्रगति का सतत मूल्यांकन करें। कलेक्टर ने निर्देशित करते हुए कहा कि सभी अधिकारी एवं संबंधित निर्माण एजेंसी निर्माण कार्यों में पूर्ण गुणवत्ता और समयसीमा का विशेष ध्यान रखें। कलेक्टर ने अधिकारियों से कहा कि निर्माण कार्यों में गुणवत्ता युक्त निर्माण सामग्री का उपयोग करें।

सीईओ जिला पंचायत ने निर्माण कार्यों पर जतायी नाराजगी, समय सीमा में पूर्ण कार्य करने के दिये निर्देश

राजनांदगांव (दावा)। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सुश्री सुरूचि सिंह ने जिला पंचायत सभाकक्ष में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग द्वारा संचालित महत्वपूर्ण योजनाओं एवं कार्यक्रमों के क्रियान्वयन एवं प्रगति की समीक्षा की।

इस दौरान राजनांदगांव, मोहला-मानपुर-अम्बागढ़ चौकी, खैरागढ़-गण्डई-छुईखदान जिले के जिला पंचायत व जनपद पंचायत के अधिकारी वीडियो कान्फ्रेसिंग के माध्यम से जुड़े रहें। सीईओ जिला पंचायत सुश्री सुरूचि सिंह ने महात्मा गांधी-नरेगा के अन्तर्गत स्वीकृत निर्माण कार्यों की समीक्षा की। जिसमें आंगनबाड़ी भवन निर्माण की धीमी गति पर नाराजगी प्रकट करते हुए पंचायतों के प्रगतिरत निर्माण कार्यों को माह के अंत तक पूर्ण कराने निर्देश दिए। उन्होंने निर्माण कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए समय सीमा में पूर्ण कराने निर्देशित किया गया। उन्होंने अधिकारियों को प्रत्येक सोमवार को प्रगतिरत निर्माण कार्य की समीक्षा करने के निर्देश दिए।

सीईओ जिला पंचायत सुश्री सुरूचि सिंह ने प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण अंतर्गत निर्माणाधीन आवास कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने डोर-टू-डोर निरीक्षण कर आवास पूर्ण कराने निर्देशित किया। जनपद स्तर पर नियुक्त आवास मित्र की कार्यशाला आयोजित कर प्रशिक्षित करने के निर्देश दिए। सीईओ जिला पंचायत द्वारा बैठक में स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण की समीक्षा की गई। जिसमें स्वच्छता ही सेवा थीम एवं शौचालय दिवस पर आगामी शनिवार को ग्राम पंचायतों में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी गई।

बैठक में बताया गया कि सिंगल पीट शौचालय को डबल पीट में करना, वाटर ट्रीटमेंट प्लान, ग्रेनवाटर हेतु नाली निर्माण, सामुदायिक शौचालयों में बिजली एवं पानी की व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया गया। हाट बाजार एवं धान खरीदी केन्द्रो में निर्मित शौचालय का भी साफ-सफाई एवं पानी की व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया गया।

ऊर्जा एवं जल संरक्षण विषय कार्यशाला संपन्न

राजनांदगांव (दावा)। ऊर्जा दक्षता ब्यूरो भारत सरकार द्वारा ऊर्जा संरक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से क्रेडा विभाग अंतर्गत संभाग स्तरीय ऊर्जा एवं जल संरक्षण विषय पर किसानों के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र सुरगी में कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में किसानों को ऊर्जा दक्ष पंपों के चयन संचालन, संधारण, सुरक्षा की जानकारी तथा नवीनतम तकनीकों की जानकारी दी गई। कार्यशाला में अध्यक्ष जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित सचिन सिंह बघेल ने कार्यशाला के महत्व के संबंध में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि कार्यशाला में प्रशिक्षण से किसान अपने सौर कृषि पंप का चयन, संचालन व संधारण कर ऊर्जा एवं जल संरक्षण को और अधिक दक्षता पूर्वक कर सकेंगे। सौर ऊर्जा का उपयोग करने से न केवल ऊर्जा की बचत होगी, बल्कि पर्यावरण को भी लाभ मिलेगा। इस प्रकार के प्रशिक्षण से न केवल प्रशिक्षणार्थियों को रोजगार मिलेगा और वे भी दूसरों को रोजगार देने में सक्षम बनेगें। उन्होंने बताया कि शासन द्वारा सौर ऊर्जा के क्षेत्र में विभिन्न योजनाएं संचालित की जा रही है, जिसमें अनुदान भी उपलब्ध कराया जा रहा है। कार्यशाला में क्रेडा जोनल कार्यालय राजनांदगांव के कार्यपालन अभियंता इन्दुभूषण साहू ने बताया कि कृषि पंपों के चयन बहुत महत्वपूर्ण होता है।

कॉन्फ्लुएंस कॉलेज के कम्प्यूटर विभाग द्वारा अतिथि व्याख्यान

राजनांदगांव (दावा)। कान्फ्लुएंस कॉलेज के कम्प्यूटर विभाग द्वारा कम्प्यूटर विषय के गूगल ड्राइव एवं गूगल फॉर्म टॉपिक पर गेस्ट लेक्चर कराया गया, जिसे शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय के अतिथि सहायक प्राध्यापक रामावतार साहू द्वारा व्याख्यातिक किया गया।

उन्होंने बताया कि गूगल ड्राइव द्वारा हम अपने डेटा को किसी भी स्थान से किसी भी समय एक्सेस कर सकते हैं तथा शेयर कर सकते हैं। गूगल ड्राइव माध्यम से डाटा को हम सुरक्षित भी कर सकते हैं तथा इसमें किसी भी प्रकार के डॉक्यूमेंट बना सकते हैं साथ ही उन्होंने बताया कि गूगल फॉर्म द्वारा हम विभिन्न प्रकार के फॉर्म बनाकर ऑनलाइन सुविधा दे सकते हैं साथ ही किसी एग्जाम का फॉर्म भरने क्रिएट करने, फीडबैक फॉर्म बनाना आदि जानकारियों को व्याख्यात किया गया।

गूगल ड्राइव तथा गूगल फॉर्म का उपयोग सामान्य जीवन के अधिक से अधिक क्षेत्रों को प्रभावित करता है अतः यह विषय विद्यार्थियों के लिए अत्यंत आवश्यक एवं उपयोगी रहा। इस व्याख्यान के अवसर पर महाविद्यालय की सभी विद्यार्थीगण एवं प्राध्यापकगण उपस्थित थे।

ईडी के बाद अब सीबीआई ने शुरू की जांच, 6,600 करोड़ के घोटाले में गौरव मेहता की गिरफ्तारी तैयारी

रायपुर। महाराष्ट्र में 6,600 करोड़ के क्रिप्टो करेंसी घोटाले के मामले में रायपुर के गौरव मेहता के पचपेढ़ी नाका आम्रपाली सोसाइटी स्थित घर पर मुंबई ईडी की टीम के बाद अब सीबीआइ की जांच शुरू हो गई है। गुरुवार रात से ही सीबीआइ के अधिकारी घोटाले के मास्टर माइंड बताए जा रहे गौरव उसके भाई अक्षत से पूछताछ कर रहे हैं।

पूछताछ का अंतिम दौर चल रहा है और जल्द ही गौरव की गिरफ्तारी के साथ ही उसे विशेष कोर्ट में पेशकर रिमांड पर लेने की तैयारी भी है। ईडी की टीम ने गौरव मेहता के घर बुधवार की सुबह दबिश दी थी। गौरव मेहता पुणे के सारथी एसोसिएट आडिट फर्म के कर्मचारी हैं। इस फर्म के कई ठिकानों पर ईडी की कार्रवाई चल रही है।

ईडी की टीम ने गौरव के घर व दफ्तर से ढेरों दस्तावेज के साथ ही इलेक्ट्रानिक सबूत एकत्र किए है। इसके जरिए गौरव के दिल्ली, महाराष्ट्र के नेटवर्क, निवेशकों से जुड़े लिंक खंगाले जा रहे है। सूत्रों के अनुसार गौरव मेहता एक कंसल्टेंसी के लिए काम करते हैं जो पुणे पुलिस को अमित भारद्वाज के 6600 करोड़ के क्रिप्टो करेंसी घोटाले की जांच में मदद कर रही थी।

गौरव मेहता के बारे में जानने वालों के मुताबिक वह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और साइबर फील्ड का एक्सपर्ट है। छत्तीसगढ़ में केंद्रीय जांच एजेंसियों की अब तक हुई हर छापामार कार्रवाई में वह आधिकारिक साइबर सेल टीम में हमेशा शामिल रहा है। कई राज्यों में हुए चुनावों में इसकी पर्दे के पीछे खासी भूमिका रही थी। पूर्व आइपीएस रवींद्रनाथ पाटिल वर्ष 2018 में गौरव की गवाही के बाद ही जेल गए थे।

पूर्व आईपीएस के आरोप के बाद हुई कार्रवाई

दरअसल, महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के बीच हो रही इस कार्रवाई से पहले पुणे के पूर्व आइपीएस अधिकारी रवींद्र नाथ पाटिल ने आरोप लगाया था कि महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में बिटकाइन घोटाले का पैसा इस्तेमाल हो रहा है। गौरव मेहता से कांग्रेस नेत्री सुप्रिया सुले और नाना पटोले ने संपर्क किया था। उन्होंने चुनाव में इस्तेमाल के लिए घोटाले से बिटकाइन के बदले नकदी मांगी थी।

बताया भी जा रहा है कि ईडी के अधिकारियों को गौरव के घर में कुछ दस्तावेज और लैपटाप समेत कंप्यूटर हार्ड डिस्क मिले है,जिसकी जांच ईडी की तकनीकी टीम कर रही है। इसके साथ ही बैंक से संबंधित कुछ अहम दस्तावेज भी मिले है। स्थानीय बैंकों के कर्मचारियों को बुलाकर इसकी जांच भी कराई गई है।

दस घंटे इंतजार के बाद घुसी सीबीआई

गौरव मेहता के घर व दफ्तर में लगातार चली ईडी की कार्रवाई में खास बात यह रही कि 10 घंटों से ज्यादा समय तक सीबीआई की पांच सदस्यीय टीम ने गौरव के घर के बाहर कार में बैठकर इंतजार किया। ईडी की कार्रवाई खत्म होने के बाद ही सीबीआई के अधिकारी गौरव के घर के भीतर घुसे। जांच में क्या-क्या सामने आया है, फिलहाल इसकी कोई अधिकृत जानकारी नहीं दी गई है।

रायपुर दक्षिण विधानसभा उपचुनाव में ऐतिहासिक जीत पर सुनील सोनी को विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने दी शुभकामनाएं

रायपुर (दावा)। रायपुर दक्षिण विधानसभा उपचुनाव में नव निर्वाचित विधायक सुनील सोनी ने आज विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह से उनके निवास स्थान, स्पीकर हाउस, रायपुर पहुंचकर सौजन्य मुलाकात की।

इस ऐतिहासिक जीत पर सुनील सोनी को बधाई देते हुए विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने विधानसभा में उनका स्वागत किया और रायपुर दक्षिण के नागरिकों के प्रति सांसद और महापौर रहते हुए उनके योगदान को सराहा।

विधानसभा अध्यक्ष ने कहा, श्री सुनील सोनी जी की यह जीत जनता के अभूतपूर्व विश्वास और रायपुर दक्षिण क्षेत्र में किए गए अथक परिश्रम का परिणाम है। मैं उन्हें इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई देता हूं और विश्वास करता हूं कि वे विधानसभा में अपने क्षेत्र की आवाज को मजबूती से उठाएंगे।

डॉ. रमन सिंह ने आगे कहा कि सुनील सोनी का जीतना रायपुर दक्षिण के विकास और जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने की दिशा में एक नई शुरुआत है। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि श्री सुनील सोनी जी जनता की उम्मीदों पर खरा उतरते हुए विधानसभा में सकारात्मक योगदान देंगे। इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष ने सुनील सोनी को शुभकामनाएं दीं और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

डॉ. रमन सिंह से भेंट मुलाकात

राजनांदगांव (दावा)। विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह से पट्टा वितरण प्रधानमंत्री आवास के संबंध में चर्चा करते हुए सांसद प्रतिनिधी देवशरण सेन, नेता प्रतिपक्ष किशुन यदु, पार्षदद्वय विजय राय, शरद सिन्हा राजेश यादव उपस्थित थे।

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव 25 नवंबर को करेंगे रायपुर रेलवे स्टेशन का निरीक्षण, अभनपुर तक मेमू ट्रेन को दिखाएंगे हरी झंडी

रायपुर। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव 25 नवंबर, सोमवार को रायपुर रेलवे स्टेशन का निरीक्षण करने आ रहे हैं। उनके दौरे से पहले, नागपुर और रायपुर रेल मंडल के अधिकारी उन सभी स्थलों का दौरा कर रहे हैं, जहां रेल मंत्री जाएंगे।

रेल मंत्री के रायपुर दौरे को ध्यान में रखते हुए स्टेशन पर काम तेज़ी से चल रहा है। स्टेशन के बंद डिस्प्ले बोर्ड, पीआरएस डिस्प्ले और कंट्रोल रूम की पुरानी वायरिंग को ठीक किया जा रहा है। इसके साथ ही स्टेशन की सीढ़ियों की जालियों को नया रंग-रोगन भी किया जा रहा है।

जानकारी के अनुसार, रेल मंत्री रायपुर स्टेशन से नवा रायपुर और अभनपुर तक मेमू ट्रेन सेवा की शुरुआत की हरी झंडी भी दिखा सकते हैं, क्योंकि रेलवे बोर्ड से इसकी मंजूरी मिल चुकी है, हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि रेल मंडल से नहीं की गई है।

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव का यह पहला रायपुर दौरा होगा। वे नागपुर से विशेष सैलून से 25 नवंबर को दोपहर 1:30 बजे रायपुर स्टेशन पहुंचेंगे। उनके दौरे के दौरान, वे रायपुर स्टेशन पर चल रहे रि-डेवलपमेंट के कार्यों और माडल से रूबरू होंगे। इसके पहले, वे 24 नवंबर को रात नागपुर में विश्राम करेंगे और 25 नवंबर को सुबह 9:30 बजे नागपुर रेलवे स्टेडियम में एससी और एसटी रेलवे कर्मचारी संघ के अखिल भारतीय सम्मेलन को संबोधित करेंगे।

रेल मंत्री जी नागपुर से रायपुर तक ट्रेक का निरीक्षण करने आ रहे है। उनके दौरे को लेकर तैयारियां की जा रही है। रायपुर से नवा रायपुर तक मेमू ट्रेन को हरी झंडी दिखाने के संबंध में कोई अधिकृत सूचना नहीं है। अवधेश त्रिवेदी, सीनियर डीसीएम।

सुरक्षा के चाक-चौबंद व्यवस्था

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव रायपुर प्रवास को देखते हुए रेलवे स्टेशन में चाक-चौबंद व्यवस्था की तैयारियां जोरों से चल रही है। आरपीएफ, जीआरपी के सुरक्षा अधिकारियों से लेकर दर्जनों जवानों को स्टेशन में तैनात किया गया है। इसके साथ ही डॉग स्क्वाड और बम निरोधक दस्ते को भी सक्रिय कर दिया गया है।

अभनपुर तक मेमू ट्रेन चलाने हरी झंडी दिखाने की संभावना

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव इस दौरान रेल अफसरों से बिलासपुर रेलवे जोन में तीन प्रमुख स्टेशनों रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर स्टेशन के रि-डेवलपमेंट प्लान के कामकाज और अमृत भारत स्टेशन के कार्यों की जानकारी लेंगे। इसके साथ ही संभावना जताई जा रही है कि वे रायपुर से नवा रायपुर व अभनपुर तक मेमू ट्रेन चलाने की हरी झंडी भी दिखा सकते हैं।

गुजराती स्कूल में आज बाल मेला महोत्सव

राजनांदगांव (दावा)। शहर के गौरव पथ स्थित गुजराती उच्चतर माध्यमिक शाला में आज रविवार 24 नवंबर को भव्य बाल मेला महोत्सव का आयोजन किया गया है। इस मेले में दीप उत्सव की जहां रंग-बिरंगी छटा बिखरेंगी वहीं बाल आनंद मेला- महोत्सव का धूम बना रहेगा। मेले में एक और आकर्षण का केंद्र छत्तीसगढ़ी प्रसंग भी है, जिसके तहत आकर्षक झांकी व रंगारंग नाटक की प्रस्तुति भी है।

बाल आनंद मेले का बिखरेगा जलवा, छाया रहेगा छत्तीसगढ़ी प्रसंग

इस गरिमामयी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिले के सांसद संतोष पाण्डे होंगे। अध्यक्षता जिला भाजपा अध्यक्ष रमेश पटेल करेंगे। विशिष्ट अतिथि राजीव नगर वार्ड पार्षद ऋषि शास्त्री, लोहाणा समाज अध्यक्ष दीपक भाई बुद्धदेव व पाटीदार समाज अध्यक्ष हीरा भाई पटेल एवं कच्छ गुर्जर समाज अध्यक्ष ईश्वर भाई पटेल तथा कच्छी गुजराती मंडल अध्यक्ष पंकज पठारिया होंगे। रविवार प्रातः 12 बजे से दोपहर तक चलने वाले इस भव्य बाल मेला व भूत बंगला सहित स्वर्ग और नरक झांकी के अलावा कला प्रदर्शनी एवं विज्ञान प्रदर्शनी आकर्षण का केंद्र बने रहेंगे।

गुजराती शिक्षण संघ के अध्यक्ष विनय पटेल एवं सचिव सीए खुशी सोनछोत्रा ने आज गुजराती स्कूल प्रांगण में आयोजित इस रंगारंग मेला-महोत्सव का लाभ उठाने के लिए लोगों को अपील की गई है।

रासेयो इकाई के सात दिवसीय विशेष शिविर में शामिल पद्मश्री श्रीमती फूलबासन बाई यादव

राजनांदगांव (दावा)। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा संस्था के प्राचार्य डॉ.अंजना ठाकुर मैम के संरक्षण एवं मार्गदर्शन में राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी इकाई 01 प्रो. संजय सप्तर्षि, इकाई 2 प्रो. करुणा रावटे के नेतृत्व में सात दिवसीय विशेष शिविर ग्राम कुतुलबोर्ड भाटागांव का आयोजन, युवा भारत के लिए युवा, डिजिटल भारत के लिए युवा विषय पर आयोजित किया गया है। सात दिवसीय विशेष शिविर के बौद्धिक परिचर्चा सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में सामाजिक कार्यकर्ता पद्मश्री श्रीमती फूलबासन यादव उपस्थित रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में अपनी जीवनी को बताते हुए ग्रामवासियों को ओर उपस्थिति रासेयो स्वयंसेवियों को हमेशा आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित किए। साथ ही उन्होंने बताया कि किस प्रकार वे अपने जीवन में कठिनाइयों का सामना करते हुए अपने साथ-साथ कई सारे महिलाओं का विकास किया। अपने जीवन के अनुभवों को साझा करते हुए कभी हिम्मत न हारने को सभी को अपने विचारों से लाभांवित किए। अंत में स्वयंसेविकाओं द्वारा हस्त निर्मित छत्तीसगढ़ी ज्वेलरी भेंट किया गया। ज्वेलरी निर्माण में स्वयंसेविका कांक्षी पाल, प्रगति, टिकेश्वरी एवं कार्यक्रम अधिकारी प्रो. करुणा रावटे द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया गया। उक्त शिविर/कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवी लोकेश्वर दीपक मनीष विनय भागवत तुमेश्वर विनोद, भुनेश्वरी, एवं अन्य 100 स्वयंसेवी उपस्थित रहे।

राज्य शासन द्वारा जिला न्यायालय में सरकारी वकीलों की नियुक्ति

राकेश कुमार मिश्रा जीपी एवं राजेश खाण्डेकर व विनोद बाजपाई एजीपी बनाए गए

राजनांदगांव (दावा)। छत्तीसगढ़ राज्य शासन विधि विधायी कार्य विभाग मंत्रालय नया रायपुर द्वारा जिला एवं सत्र न्यायालय राजनांदगांव में शासन की ओर से पैरवी करने हेतु शासकीय अभिभाषको की नियुक्ति की गई।

जिसमें वरिष्ठ अधिवक्ता राकेश कुमार मिश्रा को शासकीय अभिभाषक एवं लोक अभियोजक की नियुक्ति की गई। अधिवक्ता राजेश खाण्डेकर एवं अधिवक्ता विनोद बाजपाई को अतिरिक्त शासकीय अभिभाषक एवं लोक अभियोजक नियुक्त किया गया तथा अधिवक्ता गंगादास वैष्णव को विशेष लोक अभियोजक एक्ट्रोसिटी, अधिवक्ता अरूण कुमार गुप्ता को विशेष लोक अभियोजक को फास्ट ट्रेक कोर्ट, अधिवक्ता महेश वर्मा को विशेष लोक अभियोजक एन.डी.पी.एस., अधिवक्ता संतोष रजक को विशेष लोक अभियोजक पीसी एक्ट तथा अधिवक्ता प्रिया कांकरिया को विशेष लोक अभियोजक पाक्सो फास्ट ट्रेक स्पेशल कोर्ट में नियुक्त किया गया है जो कि पूर्व में शासकीय अभिभाषको का स्थान लेंगे। समस्त नवनियुक्त शासकीय अधिवक्ताओ ने जिलाधीश के समक्ष कार्यकाल ग्रहण किया।

धान खरीदी पर बोले सीएम साय : वादे के मुताबिक 21 क्विंटल प्रति एकड़ हो रही है धान खरीदी, भ्रम फैलाने वालों पर होगी कार्रवाई

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि, विधानसभा चुनाव के दौरान हमारे द्वारा दी गई मोदी की गारंटी के अनुरूप इस वर्ष भी किसानों से प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान के मान से ही धान खरीदी की जा रही है। किसानों को इस मामले को लेकर किसी प्रकार का भ्रम नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस संबंध में भ्रम फैलाने वालों के विरूद्ध सख्त कार्यवाही की जाएगी।

सीएम श्री साय ने कहा कि, धान खरीदी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। राज्य सरकार पूरी प्रतिबद्धता के साथ प्रदेश के पंजीकृत किसानों से समर्थन मूल्य पर धान खरीदी कर रही है। किसानों के हित को ध्यान में रखते हुए उपार्जन केन्द्रों के माईक्रोएटीएम से 2000 रूपए से लेकर 10 हजार रूपए तक की राशि निकालने की सुविधा भी दी गई है। इससे किसानों को धान बेचने परिवहन के लिए किराये पर लिए गए ट्रैक्टर, मेटाडोर आदि का भा?ा और हमाली मजदूरी का भुगतान करने में सुविधा होगी।

31 जनवरी तक होगी धान खरीदी

उल्लेखनीय है कि, सीएम विष्णुदेव साय के मार्गदर्शन में छत्तीसग? में अनवरत धान खरीदी का सिलसिला जारी है। 14 नवंबर से शुरू हुई धान खरीदी अभियान 31 जनवरी 2025 तक चलेगा। खरीफ वर्ष के लिए 27.68 लाख किसानों द्वारा पंजीयन कराया गया है। इसमें 1.45 लाख नए किसान शामिल है। इस वर्ष 2739 उपार्जन केन्द्रों के माध्यम से 160 लाख मिट्रिक धान खरीदी अनुमानित है।

सरकार बदल गई पर सड़क चौड़ीकरण अब भी वहीं

डोंगरगाँव (दावा)। शहर में वर्षों से चल रहे सडक़ चौड़ीकरण का कार्य ठेकेदार द्वारा अधूरा छोड़ देने के चलते इस मार्ग में आवागमन करने वाले यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है. शहर के भीतर पूरे तीन किलोमीटर मार्ग पर जगह-जगह गड्डों के चलते जहाँ वाहन चालक हादसों का शिकार हो रहे हैं, वहीं पूरा शहर धूल के चलते स्वास्थ्यगत परेशानियों से जूझ रहा है. लोक निर्माण विभाग द्वारा जिले के डोंगरगांव शहर में बनाई जा रही सडक़ में गुणवत्ता को लेकर लगातार सवाल उठाए जा रहे हैं.

महज तीन किलोमीटर की इस सडक़ के चौड़ीकरण के लिए जहाँ विभाग ने एक वर्ष का एक्सटेंशन तक दे दिया था लेकिन ठेकेदार लेखराम साहू और विभाग की उदासीनता और मनमानी के चलते आज तक इसे पूरा नहीं किया जा सका है. एक ओर क्षेत्र में चल रहे अनेक कार्य बारिश के बाद तेज गति जारी हैं वहीं दूसरी ओर शहर की सबसे परेशान करने वाली इस सडक़ का कार्य बारिश के बाद अब तक प्रारंभ नहीं हो पाया है. पीडब्ल्यूडी विभाग को न ही आम नागरिकों को हो रही परेशानियों से सरोकार है और न अधिकारी इस ठेकेदार से इस महत्वपूर्ण काम को शीघ्र करवाने में रूचि ले रहे हैं. ऐसे में शासन-प्रशासन के प्रति आमजनों का रोष लगातार बढ़ रहा है.

बता दें कि पिछले पंचवर्षीय कार्यकाल में क्षेत्र के विधायक दलेश्वर साहू के ड्रीम प्रोजेक्ट का हवाला देकर डोंगरगांव शहर के स्टेट हाईवे में बगदई पुल से लेकर गांधी पेट्रोल पंप तक सडक़ का चौड़ीकरण का कार्य लोक निर्माण विभाग के माध्यम से शुरू कराया गया है लेकिन कछुआ गति से चल रहा यह कार्य डोंगरगांव शहरवासियों के लिए परेशानी का सबब बना हुआ है. सरकार बदलने के बाद इस कार्य में तेजी की उम्मीद की गई थी किन्तु वहीं ढाक के तीन पात की स्थिति बनी हुई है.

० वर्षों बाद भी नहीं हो पाया शहर का सडक़ चौड़ीकरण
० धूल से पूरा शहर परेशान, लगातार हो रहे गंभीर हादसे

वाहन चालकों को हो रहा है बड़ा नुकसान - शहर के भीतर स्टेट हाईवे में वर्षों से निर्माणाधीन सडक़ में दुर्घटनाओं का दंश वाहन चालक झेल रही रहे हैं, इसके साथ ही बड़े-बड़े गड्ढों के चलते सडक़ में गाडिय़ों में लगातार नुकसान हो रहा है और महंगी गाडिय़ों में टूटफूट के चलते वाहन मालिक काफी परेशान हो चले हैं. इस निर्माणाधीन सडक़ में हुई दुर्घटनाओं में अनेक मौतें हो चुकी हैं फिर भी विभाग कुंभकरणीय नींद से नहीं जागा है. बगैर किसी प्लानिंग के हो रहे इस निर्माण कार्य में आये दिन कुछ-न-कुछ परेशानियों से वास्ता राहगीरों को पड़ रहा है. विगत बारिश में अस्त-व्यस्त डिवाईडर के चलते पूरा स्टेट हाईवे जाम हो गया था, जिसे कुछ स्थानों पर तोडऩे के घंटों बाद यातायात बहाल हो पाया था.

सरकार बदल गई पर सडक़ की स्थिति अब भी वहीं

मात्र साढ़े तीन किलोमीटर का यह निर्माण डोंगरगांववासियों के लिए चुनाव का मुद्दा बना हुआ था किन्तु सरकार बदल गई पर शहरवासी विधायक नहीं बदल पाये. सरकार बदलने के बाद यही विधायक और उनके नुमाइंदे सडक़ निर्माण में हो रहे देरी को लेकर कुछ समय पूर्व सडक़ में बैठकर आंदोलन किया था और कार्य प्रारंभ कर तेजी से काम नहीं करने की स्थिति में बड़े आंदोलन की चेतावनी दी थी किन्तु हमेशा की तरह विधायक ने शहर को अपने हाल पर छोड़ दिया. वहीं भाजपा के नेता भी इस मामले में अब तक कोई प्रतिक्रिया नहीं देते हैं. आमजनों को अपने हाल में छोडक़र कुंभकरणीय नींद में सोए शासन-प्रशासन को जगाने के लिए सडक़ चौड़ीकरण मामले में एक बड़ा जनआंदोलन हो जाये तो किसी को कोई आश्चर्य नहीं होगा. पानी मेंटेन नहीं कर पा रहा है, जिसके चलते धूल की परेशानी है. डामरीकरण तो नहीं को पायेगा लेकिन खुदाई काम को रोककर इमल्शन करवाया जायेगा. धान कटाई के चलते मजदूरों की परेशानी ठेकेदार को हो रही है, उनके व्दारा इंतजाम कर लिया गया है. ले-आऊट कर दिया गया है, शीघ्र ही तेजी से कार्य प्रारंभ होगा- हर्षद साहू एसडीओ पीडब्ल्यूडी विभाग

10वीं और 12वीं की परीक्षाएं 15 फरवरी से

रायपुर। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएससी) ने कक्षा 10वीं और 12वीं की आगामी बोर्ड परीक्षाओं का समय सारिणी जारी कर दिया है। इस बार प्रदेशभर से एक लाख से ज्यादा विद्यार्थी परीक्षा में शामिल होंगे। सीबीएसई की कक्षा 10वीं और 12वीं की परीक्षाएं 15 फरवरी 2025 से शुरू होंगी, और परीक्षा का पूरा शेड्यूल अब बोर्ड की आधिकारिक वेबसाइट ष्ड्ढह्यद्ग.द्द श1.द्बठ्ठ पर उपलब्ध है, जहां छात्र इसे देख और डाउनलोड कर सकते हैं। समय सारिणी के अनुसार, कक्षा 10वीं की परीक्षा 15 फरवरी को अंग्रेजी विषय से शुरू होगी। इसके बाद, 20 फरवरी को विज्ञान, 25 फरवरी को सामाजिक विज्ञान, 28 फरवरी को हिंदी और 10 मार्च को गणित की परीक्षा होगी। वहीं, कक्षा 12वीं की परीक्षा 15 फरवरी को उद्यमिता से शुरू होगी, 20 फरवरी को कंप्यूटर एप्लीकेशन, 21 फरवरी को फिजिक्स, 22 फरवरी को बिजनेस स्टडी, 27 फरवरी को केमिस्ट्री, 8 मार्च को अंग्रेजी, 15 मार्च को हिंदी, 19 मार्च को इकोनामिक्स, 22 मार्च को राजनीतिक विज्ञान और 1 अप्रैल को इतिहास की परीक्षा होगी।

छत्तीसगढ़ प्राइवेट स्कूल मैनेजमेंट एसोसिएशन के अध्यक्ष राजीव गुप्ता ने बताया कि प्रदेश से कक्षा 10वीं में लगभग 60,000 और कक्षा 12वीं में 50,000 से अधिक विद्यार्थी परीक्षा में भाग लेंगे। राज्य में सीबीएसई से मान्यता प्राप्त कुल 550 स्कूल हैं, जिनमें रायपुर में लगभग 100 स्कूल शामिल हैं। सीबीएसई की परीक्षाएं सुबह की पाली में आयोजित की जाएंगी, जिनमें अधिकांश पेपर 10.30 बजे से 12.30 बजे तक और कुछ पेपर 10.30 बजे से 1.30 बजे तक होंगी।

प्लॉट बेचना है
राजनांदगांव पेन्ड्री में नेशनल हाईवे से 100 मीटर की दूरी पर डायवर्टेड आवासीय प्लॉट
रोड, नाली, बिजली की सुविधा उपलब्ध
- : संपर्क :-
62641-56342

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक व मुद्रक दीपक कुमार बुद्धदेव द्वारा स्वस्तिक ऑफसेट एण्ड स्क्रीन प्रिंटर्स, बल्देवबाग रोड, राजनांदगांव से मुद्रित कर प्रकाशित। सम्पादक दीपक कुमार बुद्धदेव।
* समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार। * किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र राजनांदगांव रहेगा। फोन नं. - 07744-406631 e-mail : dainikdawa_rjn@yahoo.com